यह उपन्यास 1918-19 इन्फ्लुएंजा महामारी की पृष्ठभूमि में लिखी अमरीकी उपन्यासकार कैथरीन ऐनी पोर्टर की विश्वविख्यात रचना है जो खुद उस महामारी का शिकार होकर मरते-मरते बची थी। 1939 में प्रकाशित यह लघु उपन्यास, एक महिला पत्रकार, मिरांडा और एक सैनिक, एडम के बीच के प्रेम सम्बन्धों के बारे में है। मिरांडा इन्फ्लूएंजा से संक्रमित होकर मरणासन्न हो जाती है। एडम उसकी सेवा करता है और इलाज के बाद ठीक हो जाती है, लेकिन खुद एडम उसकी देखरेख के दौरान इन्फ्लूएंजा से ग्रसित होकर मर जाता है। लेखिका ने इस त्रासद सच्चाई को बहुत ही सरल, मर्मस्पर्शी और सधे शब्दों में व्यक्त किया है। कहानी डेनवर, कोलोराडो की पृष्ठभूमि में चलती है जहाँ लेखिका कैथरिन पोर्टर खुद कुछ समय के लिए रही, रॉकी माउंटेन न्यूज के लिए समीक्षाएँ लिखी और खुद इन्फ्लूएंजा से पीड़ित हुई थी। उपन्यास का अन्त इन उम्मीदभरे शब्दों से होता है-- ''अब कोई और युद्ध नहीं, अब कोई और महामारी नहीं, केवल विराट तोपों का मुँह बन्द होने के बाद का सन्नाटा, प्रेत छायाओं से मुक्त घर, खुली सड़कें और आनेवाले कल की ठण्डी रोशनी का अन्त। अब हर चीज के लिए भरपूर समय होगा।''

गार्गी प्रकाशन

गार्गी प्रकाशन की वेबसाइट के लिए स्कैन करें।

₹ 60/-

मरियल घोड़ा दुर्बल सवार कैथरीन ऐनी पोर्टर अनुवाद दिगम्बर

मरियल घोड़ा दुर्बल सवार

कैथरीन ऐनी पोर्टर

अनुवाद
दिगम्बर



मरियल घोड़ा, दुर्बल सवार

लेखिका
कैथरीन ऐनी पोर्टर

अनुवादक
दिगम्बर

गार्गी प्रकाशन

मरियल घोड़ा, दुर्बल सवार : कैथरीन ऐनी पोर्टर

प्रथम संस्करण : जनवरी 2022

गार्गी प्रकाशन
1/4649/45बी, गली नं. 4,
न्यू मॉडर्न शाहदरा, दिल्ली-110032
e-mail : gargiprakashan15@gmail.com
Website : www.gargibooks.com

मुद्रकः
प्रोग्रेसिव प्रिण्टर्स,
ए-21 झिलमिल इण्डस्ट्रियल एरिया,
शाहदरा, दिल्ली-110095

ISBN : 978-81-955764-4-9

मूल्य : 60.00

Mariyal Ghoda, Durbal Sawaar

इस किताब के बारे में

लघु उपन्यास *पेल हॉर्स, पेल राइडर* (*मरियल घोड़ा, दुर्बल सवार*) का कथानक 1918-19 में फैली इन्फ्लुएंजा महामारी पर केन्द्रित है। यह अमरीकी उपन्यासकार कैथरीन ऐनी पोर्टर की विश्वविख्यात रचना है जो खुद उस महामारी का शिकार होकर मरते-मरते बची थी। 1939 में प्रकाशित यह लघु उपन्यास, दो ऐसे प्रेमियों की कहानी है जो विश्वयुद्ध के काल में घातक फ्लू वायरस की चपेट में आ जाते हैं। विश्वयुद्ध और महामारी की पृष्ठभूमि में लिखी गयी यह कहानी एक ही साथ रोमांटिक भी है और त्रासद भी।

2019-2021 के बीच दुनिया भर में फैली कोरोना महामारी ने जमकर तबाही मचायी। लाखों लोग मारे गये और करोड़ों लोग बीमार होने के बाद बीमारी से पैदा हुई शारीरिक विकृति, मानसिक आघात और सामाजिक-आर्थिक समस्याओं से पीड़ित हैं। उनकी जिन्दगी बदहाल हो रही है। मौजूदा समय की इस महामारी से दुनिया अभी उबर नहीं पायी है। निश्चित तौर पर लोगों की बेहाल जिन्दगी की दास्तान बयान

करने वाले साहित्य लिखे जायेंगे, जिससे आनेवाली पीढ़ियाँ हमारे इस दुख-तकलीफ से रूबरू होंगी। इस मानी में भी *मरियल घोड़ा, दुर्बल सवार* उपन्यास उस दौर का एक दस्तावेजी प्रस्तुतीकरण माना जा सकता है। इसलिए आज इस उपन्यास को पढ़ना और उस दौर की घटनाओं से गुजरना और अधिक प्रासंगिक तथा जरूरी हो गया है।

सौ साल पहले स्पेनिश इन्फ्लुएंज़ा से जितने लोग मारे गये थे, उनकी कुल संख्या प्रथम विश्व युद्ध में मारे गये 1.7 करोड़ लोगों और द्वितीय विश्व युद्ध में मारे गये 6 करोड़ लोगों के कुल योग से भी ज्यादा थी। यह मानव इतिहास की सबसे भयावह त्रासदी थी। लेकिन इन दोनों त्रासद घटनाओं में से किसको कितना याद किया गया, इसका अन्दाजा इसी एक तथ्य से लगाया जा सकता है-- दुनिया की सबसे बड़ी लाइब्रेरी कैटलॉग तैयार करने वाले वेबसाइट, वर्ल्डकैट ने अभी तक प्रथम विश्व युद्ध पर चालीस से अधिक भाषाओं में लगभग 80,000 पुस्तकों और स्पैनिश फ्लू पर पाँच भाषाओं में लगभग 400 पुस्तकों को सूचीबद्ध किया है। अविस्मरणीय युद्ध समाज की सामूहिक स्मृति में गहरी जड़ें जमा चुका है, जबकि लोग एक महामारी को याद करने के लिए तैयार नहीं हैं। जाहिर है कि शासक

वर्ग अपने स्वार्थ के अनुरूप ही सचेतन तौर पर कुछ खास स्मृतियों को संजोता है और और कुछ को विस्मृति के गर्त में डाल देता है। स्पेनिश फ्लू की तरह ही कोरोना महामारी को भी हम भूल जायेंगे और किसी दूसरी मानवनिर्मित आपदा की बाट देखेंगे।

प्रथम विश्वयुद्ध और स्पेनिश फ्लू की पृष्ठभूमि में रचित यह उपन्यास एक अजीबो-गरीब सपने से शुरू होता है, जो उपन्यास के शीर्षक की ओर संकेत करता है। सपने में एक मरियल घोड़े पर बैठा दुर्बल सवार नायिका मिराण्डा का पीछा करता है, जो "मौत और शैतान" का प्रतीक है। वह दुःस्वप्न से जागती है, लेकिन उसे पता नहीं है कि वह फ्लू से संक्रमित हो गयी है।

इस उपन्यास की कहानी खुद उपन्यासकार पोर्टर की आपबीती है जो 1918-19 महामारी के दौरान 28 वर्ष की थीं और डेनेवर में 'रॉकी माउण्टेन न्यूज' के लिए काम कर रही थीं। वे खुद एक युवा सैनिक से प्रेम करती थीं, जो विदेश में युद्ध के मोर्चे पर जाने की तैयारी कर रहा था। जब वे बीमार पड़ीं, तो युवा सैनिक ने उनके किराये के कमरे में तब तक उनकी देख-रेख की, जब तक कि उनके सम्पादक ने अस्पताल में भर्ती कराने का इन्तजाम नहीं कराया। महामारी के चलते अस्पताल में इतनी

भीड़-भाड़ थी कि पोर्टर को नौ दिनों के लिए दालान में एक स्ट्रेचर पर लिटाकर उनका इलाज किया गया था। जब वे ठीक हो गयीं, तो उनको पता चला कि उनके प्रेमी की फ्लू से मृत्यु हो गयी। लेखिका ने अपने निजी अनुभव को नायिका मिराण्डा और उसके प्रेमी एडम के माध्यम से अभिव्यंजित किया है।

नायिका मिराण्डा विश्वयुद्ध के दौरान फैलायी जा रही युद्धोन्माद और अन्धराष्ट्रवाद की संस्कृति को नापसन्द करती है, जिसे पोर्टर ने एक दिमागी वायरस के रूप में दर्शाया है जो महामारी की तरह फैल रहा है। युद्ध बॉण्ड बेचने वाले कुछ लम्पट और निकम्मे लोग मिराण्डा पर बॉण्ड खरीदने के लिए दबाव डालते हैं जिसे खरीद पाने में वह असमर्थ है; उसके अखबार की एक दूसरी महिला रिपोर्टर भी इस बात से चिन्तित है कि अगर वह बॉण्ड खरीदने के लिए पैसे नहीं जुटा पायी तो उसकी नौकरी चली जाएगी। उपन्यास में दर्शाया गया है कि युद्ध के पक्ष में माहौल बनाने और समर्थन जुटाने का प्रयास किस तरह उस दौर की जिन्दगी में हर जगह अपना प्रभाव छोड़ता है। युद्ध की बात आने पर अलग-अलग लोग उसके समर्थन और विरोध में अपनी प्रतिक्रिया देते हैं।

युद्ध और फ्लू दोनों ही मिराण्डा के जीवन में एक

खतरे के रूप में आते हैं। मिराण्डा को एडम से प्यार है, जो टेक्सास का निवासी है और युद्ध में जाने से पहले सैनिक प्रशिक्षण ले रहा है। वे दोनों लगभग 10 दिनों तक आपस में घुलते-मिलते हैं और एक दूसरे को गहराई से महसूस करते हैं। उनके शुरू के कुछ दिन रोमांस और उमंग में बीते– जाज पर नृत्य करना, नाटक देखने जाना, भूगर्भ संग्रहालय के चारों ओर घूमना, शहर से बाहर निकल कर इधर-उधर घूमना। लेकिन वे दोनों यह जानते हैं कि उनका आपसी स्नेह थोड़े दिन की बात है क्योंकि एडम जल्द ही युद्ध के मोर्चे पर जाने वाला है। हालाँकि उससे पहले ही अचानक उनका सामना इन्फ्लुएंजा के वायरस से होता है।

मिराण्डा ऐसा महसूस करती है कि अगर एडम युद्ध के मोर्चे पर जाने को बाध्य नहीं होता तो वह उससे कितना ज्यादा प्यार करती। उनके बीच युद्ध की भयावहता और युद्धोन्मादी माहौल में उस दौर के हालात पर खूब बातें होती हैं। मिराण्डा ने एडम से कहा, जिसे बीमारी के बारे में प्रशिक्षण के लिए वापस भेजा गया है, "यह प्लेग जैसी लगती है, मध्य युग की कोई बीमारी। क्या तुमने कभी एक साथ इतना ज्यादा अन्तिम संस्कार होते देखा था?" एडम ने जवाब दिया "कभी नहीं। खैर, हम अपना दिमाग मजबूत बनायें

और इससे बचने की उम्मीद करें। मुझे अचानक चार दिन और मिल गये हैं और हमें अपने पैरों के नीचे घास का एक तिनका भी सलामत नहीं रहने देना है।" इसके साथ ही वे सड़क पर चहलकदमी करने और डांस करने जाने का प्लान बनाते हैं।

धीरे-धीरे, फ्लू उसके शरीर में अपनी उपस्थिति दर्ज करा देता है, भले ही उसका मन युद्ध में लगा रहता है। जिस रात वह कई दिनों से महसूस हो रही बीमारी से बेहोश हो जाती है, एडम और मिराण्डा एक साथ एक नाटक में जाते हैं, जिसकी उसे समीक्षा करनी होती है। यह एक उबाऊ नाटक है, लेकिन तीसरे अंक से पहले, एक चन्दा माँगनेवाला मंच पर आता है। वह एक लम्बा उबाऊ भाषण देता है, जिसमें देशभक्ति की बड़ी-बड़ी बातें होती हैं और आखिर में वह लोगों से युद्ध बॉण्ड खरीदने की अपील करता है। इन सब के प्रभाव में मिराण्डा की बीमारी बढ़ जाती है, उसका सिर दर्द असहनीय हो जाता है।

नाटक के बाद वे एक रेस्तराँ में जाते हैं जहाँ वह बेहोश हो जाती है; जब वह होश में आती है, तो उसे पता चलता है कि वह फ्लू का शिकार हो गयी है और एडम उसके किराये के कमरे में उसकी देखभाल कर रहा है। वह आखिरी बार उसके साथ होता है। फिर

मिराण्डा को इलाज के लिए अस्पताल ले जाया जाता है जहाँ दर्द और बुखार से पीड़ित वह भयावह सपने देखती है। इन्फ्लुएंजा से ग्रसित नायिका अवसाद से ग्रस्त है और वह केवल तभी सहज होती है जब बेहोश हो जाती है। बार-बार भावनात्मक उद्वेग और बुखार के दौरान आने वाले भयावह सपनों का यहाँ अत्यन्त मार्मिक चित्रण किया गया है। लम्बे इलाज के बाद मिराण्डा धीरे-धीरे ठीक हो जाती है, उसे पता चलता है कि युद्ध समाप्त हो गया है लेकिन इन्फ्लुएंजा महामारी की चपेट में आकर उसके प्रेमी एडम की मृत्यु हो गयी है। महामारी से बच जाने के बाद भी मिराण्डा उसके आघात से मुक्त नहीं हो पाती, लेकिन जल्दी ही वह खुद को बदहवासी से बाहर निकालती है।

हालाँकि युद्ध और महामारी दोनों ही उस दौरान दुनिया की जनता को मौत की ओर धकेल रहे थे, लेकिन उपन्यास के चरित्रों के बीच युद्ध कहीं ज्यादा चर्चा का विषय है। एडम, जो एक सैनिक है, फ्लू को बहुत हल्के ढंग से लेता है और इसे "मजेदार नयी बीमारी" कहता हैं, जिसकी चपेट में आकर बैरकों में जवान मर रहे हैं। मिराण्डा जिस अखबार के दफ्तर में काम करती है वहाँ शायद ही कोई फ्लू की चर्चा करता है। जब मिराण्डा संक्रमित हो जाती है, तभी वे हर रोज

बड़ी संख्या में अन्त्येष्टि, रात में एम्बुलेंस की भाग-दौड़, और शहर में लॉकडाउन को लेकर गम्भीरता से चर्चा करते हुए पाये जाते हैं।

उपन्यास में मृत्यु, जीवन और अकेलापन का बेहतरीन चित्रण है। मिराण्डा पहले ही अपने परिवार में कई लोगों को "मरियल सवार" के हाथो गवाँ चुकी है, उसके जीवन की आशा एडम है जिसे वह युद्ध में नहीं जाने देना चाहती है। वह एक गीत गाती है-- "मरियल घोड़ा, दुर्बल सवार, मेरे प्रेमी को दूर ले गया ... ओह, एक गायक को विलाप करने के लिए छोड़ गया"। यह गीत मिराण्डा के जीवन में आसन्न मृत्यु और अकेलेपन की ओर इंगित करता है। फिर भी उसकी जीने की इच्छा ही है, जिसके चलते बीमारी की हालत में उसकी देखभाल में लगे अपने प्रेमी से आग्रह करती है कि "मुझे सोने से डर लगता है, मैं फिर जाग नहीं पाउँगी। मुझे सोने मत दो, एडम।"

लेकिन फ्लू से लम्बे संघर्ष के दौरान उसे मृत्यु का बहुत करीबी अहसास होता है, जिससे जीवन के प्रति उसका नजरिया बदल जाता है और मृत्यु उसे अधिक सुखद लगने लगती है। मौत से मुठभेड़ करने के बाद फैशनेबल मिराण्डा जर्जर शरीर और उलझे दिमाग के साथ एक ऐसी दुनिया में वापस आ गयी, जहाँ एडम

नहीं था, "कोई रोशनी नहीं थी, शायद फिर कभी रोशनी न हो ...।"

मिराण्डा की मकान मालकिन मिस हॉबे जिससे उसका बहुत ही आत्मीय सम्बन्ध था, वह मिराण्डा को फ्लू होने का पता लगते ही भयभीत हो गयी। उसने एडम को धमकी दी कि अगर उसके लिए जल्दी एम्बुलेंस नहीं आयी तो वह मिराण्डा को सड़क पर फेंक देगी, क्योंकि उसकी बीमारी ने पूरे घर के लिए खतरा पैदा कर दिया। दूसरी ओर मिराण्डा के अखबार का सिटी एडिटर बिल ने उसे सांत्वना दी, डॉक्टर, नर्स, एम्बुलेंस और अस्पताल के इन्तजाम का वादा किया। मिराण्डा के ठीक होने के बाद चुक और मैरी अस्पताल में उससे मिलने आयी, उसके लिए फूल, उसके शुभचिन्तकों के पत्र लायी और उसके घर तक साथ गयीं। ऐसे व्यवहार कोविड-19 के दौरान भी खूब देखने को मिले जहाँ एक तरफ घोर उपेक्षा और अमानवीय व्यवहार देखने को मिला, दूसरी ओर लोगों ने जान पर खेल कर पीड़ितों की मदद की।

हमारे यहाँ कोरोना महामारी की चपेट में आये लोगों के साथ उनके पड़ोसियों और रिश्तेदारों तक ने अपराधी की तरह व्यवहार किया। पड़ोसियों ने इन परिवारों का बहिष्कार कर दिया, कुछ को नौकरी से

निकाल दिया गया और दुकानदारों ने उन्हें सामान देने से भी मना कर दिया। दिल्ली के एक अपार्टमेंट के लोगों ने कोरोना मरीजों की सेवा करनेवाली नर्सों को अपने पड़ोस में रहने से मना कर दिया था। परिवार के लोगों ने भी डर के मारे कोरोना पीड़ितों से किनारा किया और उन्हें अस्पताल से वापस लाने को तैयार नहीं हुए। सामाजिक भय और असुरक्षा की ऐसी ही हालत के चलते हैदराबाद में कोरोना से बचकर वापस आये लगभग 50 लोगों को दुबारा अस्पताल में भर्ती कराना पड़ा था।

उपन्यास का अन्त इस उम्मीद के साथ होता है-- "अब कोई और युद्ध नहीं, अब कोई और महामारी नहीं, केवल विराट तोपों का मुँह बन्द होने के बाद का सन्नाटा; प्रेत छायाओं से मुक्त घर, खाली सड़कें और आनेवाले कल की ठण्डी रोशनी का अन्त। अब हर चीज के लिए भरपूर समय होगा।"

इतिहासकार अल्फ्रेड डब्ल्यू क्रॉस्बी ने *पेल हॉर्स, पेल राइडर* को इन्फ्लुएंजा से होने वाली पीड़ा का ऐसा असाधारण चित्रण माना कि उन्होंने 1918 की महामारी पर लिखी अपनी पुस्तक लेखिका कैथरीन ऐनी पोर्टर को समर्पित की थी।

-- अनुवादक

नींद में उसे लगा कि वह अपने बिस्तर पर है, लेकिन उस बिस्तर पर नहीं जिस पर वह कुछ ही घण्टों पहले लेटी थी, और कमरा भी वह नहीं था, लेकिन यह ऐसा कमरा था जिसे वह पहले से जानती थी। उसका दिल उसकी छाती पर पड़ा एक पत्थर था जो उसके जिस्म से बाहर था; उसकी नब्ज धीमी हो गयी और रुक गयी, और उसे लगा कि कुछ अजीब होने वाला है, यहाँ तक कि जाली से आ रही सुबह की हवाएँ ठण्डी थीं, रोशनी की लकीरें गहरे नीले रंग की थीं और सारा घर नींद में खर्राटे ले रहा था।

अब मुझे उठना चाहिए और जब तक वे सभी शान्त हैं, यहाँ से निकल जाना चाहिए। मेरी चीजें कहाँ हैं? चीजों की अपनी मर्जी होती है और वे जहाँ चाहें वहाँ छिप जाती हैं। दिन का उजाला छत पर अचानक प्रहार करेगा और वे सभी सर से पाँव तक चौंक जायेंगे; उनके मुस्कुराते हुए चेहरे पूछेंगे, तुम कहाँ जा रही हो, क्या कर रही हो, क्या सोच रही हो, तुमको कैसा लग रहा है, तुम ऐसी बातें क्यों कह रही हो, तुम्हारा क्या मतलब है? अब और नींद नहीं लेनी है। मेरे जूते कहाँ हैं और मैं किस घोड़े की सवारी करूँ? फिडलर या ग्रेली या लम्बी नाक और बुरी नजर वाली मिस लुसी? सुबह हम सभी के जागने और बुरी तरह से फेंके गये मछली

पकड़ने के जाल की तरह आपस में उलझने से पहले, मैंने इस घर को कितना पसन्द किया था। बहुत से लोग यहाँ पैदा हुए, और बहुत रोये भी हैं यहाँ, और बहुत हँसे भी हैं, और यहाँ एक दूसरे के साथ बहुत नाराजगी और बेरहमी से पेश आये हैं। पहले ही इस बिस्तर पर बहुत से लोग मरे हैं, बहुत सारी पुश्तैनी हड्डियाँ मंटेलपीस पर सजी हुई हैं, इस घर में बहुत सारे तिरस्कृत रुमाल हैं, उसने जोर से कहा, ओह, कहानियों की धूल-गर्द जिसे कभी एक पल के लिए भी शान्ति से जमने की इजाजत नहीं मिली।

और वह अजनबी? वह हल्का हरा अजनबी कहाँ है मुझे याद है उस जगह लटका हुआ है। मेरे दादा, मेरे पापा की चाची, पाँच बार अलग-थलग किया गया मेरा चचेरा भाई, मेरा बूढ़ा शिकारी कुत्ता और मेरा सुनहरा बिलौटा, सबने उसे खुशी-खुशी स्वीकार किया? वे सभी उसे क्यों ले गये, मैं हैरान हूँ? और वे अब कहाँ हैं? फिर भी मैंने उसे शाम को खिड़की से गुजरते देखा। उनके सिवा मेरे पास दुनिया में और क्या था? कुछ भी तो नहीं। कुछ भी मेरा नहीं है, मेरे पास कुछ नहीं है लेकिन यही काफी है, खूबसूरत है और यह सब मेरा है। क्या मैं इस हालत में सुकून से हूँ या यह कुछ ऐसा है जिसे मैंने अपनी शराफत को ढकने के लिए ओढ़ लिया है? अब इस यात्रा के लिए मैं कौन सा घोड़ा साथ ले सकती हूँ, ग्रेलिक या मिस लुसी या फिडलर, जो अँधेरे में खाई फाँद सकता है और

जानता है कि दाँतों के बीच लगाम कैसे फँसाना है? भोर का समय मेरे लिए सबसे अच्छा है क्योंकि पेड़ एक झलक में पेड़ हैं, पत्थर ऐसे पत्थर हैं जो घास की छाया में जमे हुए हैं, कोई झूठी आकृति या अटकलबाजी नहीं है, सड़क अभी भी ओस की ठहरी हुई परत के साथ सो रही है। मैं ग्रेली को साथ लूँगी क्योंकि वह पुलों से नहीं घबराती।

आओ चलें ग्रेली, उसकी लगाम थामते हुए उसने कहा, हमें मौत और शैतान से आगे निकल जाना है। तुम लोग इसके लिए अच्छे नहीं हो, उसने दूसरे घोड़ों से कहा, जो अस्तबल के द्वार पर जीन-काठी में सजे खड़े थे, उनमें उस अजनबी का एक घोड़ा, ग्रे भी था, दागदार नाक और कानों वाला। वह अजनबी अपनी काठी सहित उसकी बगल में आ गया, उसकी ओर झुक गया और बेमतलब उसको इज्जत बख्सी, खाली नासमझ बदनीयती से टकटकी लगाये जिससे कोई खतरा नहीं, बस अपना समय काटना हो। उसने ग्रेली को तेजी से अपनी ओर खींचा, उससे दौड़ने की गुजारिश की। उसने गुलाब की नीची बाड़ और उसके आगे की सँकरी खाई को छलांग लगाकर पार किया, और उसके खुरों की टाप से गली की धूल उड़ने लगी। अजनबी उससे अगल-बगल सवारी करने लगा, आसानी से, हल्के से, अपनी ढीली लगाम आधे बन्द हाथ में थामे हुए, सीधा-सादा और मनोहर गहरे रंग के मैले कपड़ों में जो उसकी हड्डियों पर फड़फड़ा रहे

थे; उसका फीका चेहरा एक मनहूस बेहोशी में मुस्कुराया, उसने उसकी ओर नहीं देखा। आह, मैंने इस आदमी को पहले देखा है, मैं इस आदमी को जानती हूँ मगर ठीक से याद नहीं कि कैसे। वह मेरे लिए अजनबी नहीं है।

उसने ग्रेली की लगाम खींच ली, अपने रकाबों पर उठ खड़ी हुई और चिल्लाई, मैं इस बार तुम्हारे साथ नहीं जाने वाली-- बढ़ते जाओ! बिना रुके या अपना सिर घुमाये उस अजनबी ने अपने घोड़े को आगे बढ़ा दिया। उसके नीचे ग्रेली की पसलियाँ उचकीं, उसकी अपनी पसलियाँ भी उठीं और गिरीं। ओह, मैं इतना थक क्यों रही हूँ, मुझे सजग होना होगा। "लेकिन पहले मुझे एक अच्छी जम्हाई लेने दो," उसने कहा, अपनी आँखें खोलकर अँगड़ाई ली, "अपने चेहरे पर ठण्डे पानी का एक छींटा मार लूँ, क्योंकि मैं फिर से नींद में बात करने लगी, मैंने अपनी आवाज सुनी, लेकिन मैं क्या कह रही थी?"

धीरे-धीरे, अनचाहे ही मिराण्डा ने खुद को नींद के गड्ढे से इंच-इंच करके ऊपर निकाला और दुबारा जीवन शुरू होने का हैरानी से इन्तजार करती रही। एक शब्द उसके दिमाग में आया, चेतावनी का एक घण्टा बजा, जिसने उसे याद दिलाया कि वह दिनभर नींद में और केवल नींद में डूबी, क्या भूल गयी थी। युद्ध, घण्टे ने कहा, और उसने अपना सिर हिला दिया। अपने पैरों में चप्पलें लटकाये आलस्य से

पैरों को झुलाते हुए, उसे याद आया कि किस तरह से हर तरह के लोग अखबार के कार्यालय में उसकी मेज के ऊपर बैठे होते थे। हर दिन उसे वहाँ कोई न कोई ऐसा मिल जाता, जो अपने लिए वहाँ रखी कुर्सी के बजाय उसकी मेज पर बैठ जाता, अपने पैरों को लटकाये हुए, आँखें नचाते हुए, अपने खास मामलों से लबरेज, कोई न कोई मामला उछाले जाने का इन्तजार करते हुए। "वे अपनी कुर्सी पर *क्यों* नहीं बैठते? क्या मुझे उस पर पर्ची लिखकर चिपकाना होगा कि 'भगवान के लिए, यहाँ बैठो'?"

पर्ची लगाना तो दूर, वह अपने पास आने वालों को डाँटती भी नहीं थी। आम तौर पर वह उनकी ओर तब तक ध्यान नहीं देती थी, जब तक कि वे उसे अपनी ओर मुखातिब होने के लिए मजबूर नहीं कर देते थे। अपने गर्म पानी के टब में आराम से लेटे हुए उसने सोचा, कि शनिवार को वेतन मिलने का दिन होगा, हमेशा की तरह। या मैं हमेशा इसकी उम्मीद करती हूँ। उसके विचार उसके रोजमर्रा के वजूद को परेशान करनेवाले विरोधाभासों को इकठ्ठा करके उनको एक साथ जोड़ने की लगातार कोशिश के चलते धुँधले-धुँधले नाच रहे थे, जहाँ वह साफ तौर पर देख सकती थी, कि जिन्दा रहना हाथ की सफाई के कारनामों का एक सिलसिला बन गयी थी। मुझ पर जिम्मेदारी है-- मुझे उसे पूरा करना है, काश मेरे पास पेंसिल और कागज होते--

ठीक है, मान लीजिए कि मैं लिबर्टी बॉण्ड पर अभी पाँच डॉलर का भुगतान करूँ, मैं इसे शायद जारी न रख पाऊँ। या शायद हो भी जाये। हर हफ्ते अठारह डॉलर। इतना किराये के लिए, इतना खाने के लिए, और मेरा मतलब है कि इसके अलावा भी कुछ खर्चे होंगे ही। लगभग पाँच डॉलर का खर्च और। तब मेरे पास सिर्फ सत्ताईस सेण्ट बचेंगे। मुझे लगता है कि मैं इसे सम्भाल सकती हूँ। मुझे लगता है मुझे इसकी चिन्ता करनी चाहिए। मैं चिन्तित हूँ। ठीक है, अब मैं चिन्तित हूँ मगर आगे? सत्ताईस सेण्ट। ये उतना कम भी नहीं है। शुद्ध लाभ, सचमुच। कल्पना कीजिए कि अगर वे अचानक मेरा वेतन बढ़ाकर बीस डॉलर कर दें तो मेरे पास दो डॉलर और सत्ताईस सेण्ट बचेंगे। लेकिन वे बीस डॉलर तक नहीं बढ़ाएँगे। अगर मैं लिबर्टी बॉण्ड नहीं खरीदती तो वे सचमुच मुझे बाहर निकाल देंगे। मुझे शायद ही इस पर विश्वास हो। मैं बिल से पूछूँगी। (बिल सिटी एडिटर था।) मुझे आश्चर्य है कि क्या इस तरह की धमकी एक तरह का ब्लैकमेल नहीं है। मैं नहीं मानती कि लुस्क कमिटी का कोई भी आदमी इससे बच सकता है।

* * *

कल उसके टाइपराइटर के दोनों ओर दो जोड़ी पैर लटक रहे थे, दोनों जोड़े महँगे दिखने वाले कपड़े से बनी गहरे रंग की कीप के अन्दर ठुँसी हुई थी। उसने दूर से देखा कि उनमें

से एक बूढ़ा था और एक जवान था, और उन दोनों के पास एक उधार की घिसीपिटी सूचना थी जो जाहिर तौर पर उन्हें एक ही स्रोत से मिली थी। उन दोनों का लालन-पालन बहुत अच्छी तरह से हुआ था और छोटे ने एक चौकोर छोटी मूँछ रखी थी। वे जो भी थे, चाहे उनका व्यवसाय कुछ भी हो, वह कुछ अप्रिय ही रहा होगा। मिराण्डा ने उनकी ओर देखकर सिर हिलाया, अपनी कुर्सी खिसकायी और अपनी टोपी या दस्ताने को उतारे बिना ही कॉपी डेस्क से चिट्ठी-पत्री का ढेर निकालकर उसे उलटने लगी, जैसे कि उसके पास एक पल भी खाली न हो। वे न हिले, न अपनी टोपियाँ उतारी। अन्त में उसने उन्हें "गुड मॉर्निंग" कहा, और पूछा कि कहीं वे उसकी प्रतीक्षा तो नहीं कर रहे हैं?

दोनों आदमी उसके कुछ कागजों को तुड़ा-मुड़ा छोड़कर डेस्क से खिसक गये, और उनमें से बूढ़े आदमी ने पूछा कि उसने लिबर्टी बॉण्ड क्यों नहीं खरीदा। मिराण्डा ने उसी समय उसकी ओर देखा, और उसके ऊपर उस आदमी का बहुत खराब प्रभाव पड़ा। वह एक भद्दे चेहरे, बड़े थोबड़े और छोटी बेनूर आँखों वाला आदमी था, और मिराण्डा को आश्चर्य हुआ कि देश के भीतर युद्ध के काम के लिए चुने और तैनात किये गये लगभग सभी लोग उसी की तरह क्यों थे। वह कुछ भी हो सकता है, उसने सोचा; रोड शो करानेवाला चतुर एजेण्ट, वाइल्डकैट ऑयल कम्पनी का

प्रमोटर, कोई नया कैबरे खोलने की घोषणा करने वाला पूर्व सैलून कीपर, ऑटोमोबाइल सेल्समैन-- किसी भी छल-कपट वाले, बेढंगे पेशे में लगा हुआ। लेकिन अब वे सब देशभक्त हो चुके थे, सरकार के लिए काम करनेवाले। "इधर देखो," उस आदमी ने उससे पूछा, "क्या आप जानती हैं कि यहाँ युद्ध हो रहा है, या नहीं जानतीं?"

क्या वह उससे जवाब की उम्मीद कर रहा था? चुप रहो, मिराण्डा ने खुद से कहा, यह तो होना ही था। देर-सबेर ऐसा होता ही। शान्त रहो। उस आदमी ने उसकी ओर अपनी उँगली लहराई, "क्या आप जानती हैं?" वह डटा रहा, मानो वह किसी जिद्दी बच्चे को सबक याद दिला रहा हो।

"अरे हाँ, युद्ध," मिराण्डा ने ऊँचे सुर में जवाब दिया और वह उसे देखकर लगभग मुस्कुरा दी। जब आप कोई ऐसी बेतुकी बात बोलते या किसी से सुनते हों, तो ऐसी गम्भीर, रहस्यमय और उभरी हुई मुस्कान मारना बहुत ही स्वभाविक होता है। "*यह तो लालची है*" आप इसे बोल कर भले ही कहें या न कहें, यह और भी बेहतर है कि मुस्कुराकर अपना कन्धा उचका दें।

"हाँ," छोटे आदमी ने घटिया अन्दाज में कहा, "युद्ध।" मिराण्डा, उसके लहजे से तिलमिला गयी, उससे आँख मिलायी; उसका घूरना सचमुच बेरहम था, सचमुच बेहद

ठण्डा, ऐसा ठण्डा जिसकी आप किसी सुनसान जगह पर कनपटी से पिस्तौल सटाये जाने पर उम्मीद कर सकते हैं। इस तेवर ने थोड़ी देर के लिए उस मनोभाव का इजहार कर दिया जिसको बयान करना मुमकिन नहीं, उन आदमियों का चेहरा जिनका अपना कोई धन्धा नहीं है। "हम युद्धरत हैं, और कुछ लोग लिबर्टी बॉण्ड खरीद रहे हैं और लगता है जैसे बाकी लोग इससे छुटकारा पाना चाहते हैं," उसने कहा। "हमारा यही मतलब है।"

मिराण्डा ने घबराहट से मुँह फेर लिया, डर की तेज शुरुआत। "क्या आप उन्हें बेच रहे हैं?" उसने अपने टाइपराइटर से कवर हटाकर फिर उस पर डालते हुए पूछा।

"नहीं, हम उन्हें बेच नहीं रहे हैं," बूढ़े आदमी ने कहा। "हम आपसे सिर्फ यह पूछ रहे हैं कि आपने खरीदा क्यों नहीं।" आवाज जोरदार और मनहूस थी।

मिराण्डा ने समझाना शुरू किया कि उसके पास एक भी पैसा नहीं था, और उसे नहीं पता था कि उसे कहाँ मिलेगा, तभी बूढ़े आदमी ने टोका, "यह कोई बहाना नहीं है, बिलकुल कोई बहाना नहीं, और आप जानती हैं, हूणों ने पीड़ित बेल्जियम को रौंद दिया।"

"जब हमारे अमरीकी जवान बेलेउ वुड में लड़ और मर रहे हैं, कोई भी जर्मनों को हराने में मदद करने के लिए पचास डॉलर जुटा सकता है," छोटे आदमी ने कहा।

मिराण्डा ने जल्दबाजी में कहा, "मुझे एक सप्ताह में अठारह डॉलर मिलते हैं और इसके सिवा मेरी जेब में एक भी कौड़ी नहीं है। मैं तो कुछ भी खरीद नहीं सकती।"

"आप इसके लिए हर सप्ताह पाँच डॉलर का भुगतान कर सकती हैं," बूढ़े आदमी ने कहा (वे दोनों काँव-काँव करते हुए उसके सिर पर सवार थे), "इस कार्यालय के दूसरे तमाम लोगों की तरह, और इसके अलावा बहुत से दूसरे कार्यालय वाले भी यही कर रहे हैं।"

मिराण्डा ने मायूसी में खामोश रहते हुए सोचा, "मान लीजिए कि मैं कायर नहीं होती, बल्कि जो सचमुच सोचती हूँ वही कहती? मान लीजिए मैं कहती कि भाँड़ में जाये ये घिनौना युद्ध? मान लीजिए मैंने उस छोटे ठग से पूछा होता कि तुम यहाँ क्या कर रहे हो, जाकर बेलेउ वुड में क्यों नहीं मरते? मैं चाहती हूँ कि तुम वहीं सड़ो....

उसने अपने पत्रों और नोट्स के कागज ठीक करना शुरू कर दिया, उसकी उँगलियाँ उन चीजों को ठीक से पकड़ नहीं पा रही थीं। बूढ़ा आदमी अपना छोटा-सा रटा-रटाया भाषण देता रहा। बेशक, यह कठिन दौर है। जाहिर है कि हर कोई तकलीफ झेल रहा है। सबको अपने हिस्से का जिम्मा लेना है। लेकिन उसके लिए लिबर्टी बॉण्ड सबसे सुरक्षित निवेश है जो आप कर सकती हैं। यह बैंक में पैसा जमा करने जैसा ही है। बेशक, सरकार इसके पीछे है और

आप इससे बेहतर कहाँ निवेश कर सकती हैं?

मिराण्डा ने कहा, "मैं इस बारे में आपसे सहमत हूँ, लेकिन मेरे पास निवेश करने के लिए पैसा बिलकुल नहीं है।"

वह आदमी बोलता गया, और निश्चित रूप से, उसका पचास डॉलर इतनी बड़ी रकम नहीं जिससे कोई खास फर्क पड़े। यह उसकी ओर से सिर्फ नेकनीयती की प्रतिज्ञा है। इस नेकनीयती की प्रतिज्ञा कि वह एक वफादार अमरीकी है जो अपना कर्तव्य निभा रही है। और यह चीज किसी चर्च की तरह निरापद है। इसलिए, अगर मेरे पास दस लाख डॉलर होते तो उसमें से आखिरी सेण्ट तक इन बॉण्डों में लगाने में मुझे खुशी होती... "इससे आपका कोई नुकसान नहीं हो सकता," उसने बहुत ही चाव से कहा, "और अगर आप ऐसा नहीं करती हैं तो आप बहुत कुछ गँवा सकती हैं। इस पर विचार कीजिये। इस पूरे अखबार के कार्यालय में आप अकेली हैं जिसने अब तक नहीं लिया। और इस शहर की हर फर्म ने इस काम में सौ प्रतिशत हिस्सेदारी की है। *डेली क्लेरियन* में तो किसी से दो बार पूछने की जरूरत ही नहीं पड़ी।"

"वे उनको वेतन भी अच्छा देते हैं," मिराण्डा ने कहा। "लेकिन अगले हफ्ते, अगर मुझसे हो पाया तो। अभी नहीं, अगले हफ्ते।"

"तुमको करना होगा," छोटे आदमी ने कहा। "यह कोई हँसी-मजाक की बात नहीं है।"

वे दूर चले गये, सोसाइटी एडिटर की मेज के आगे, बिल द सिटी एडिटर की मेज के आगे, लम्बी कॉपी डेस्क के आगे, जहाँ बूढ़ा गिबन्स पूरी रात थोड़ी-थोड़ी देर पर चिल्लाता, "जार्ज! जार्ज!" और नकलनवीस लड़का उड़ता हुआ आया करता। "जब आप का मतलब *व्यक्ति* से है तो *लोग* मत कहें," बूढ़े गिबन्स ने मिराण्डा को सिखाया था, "और *वास्तव में* कभी मत कहें, *दरअसल* कहें, और जब तक मैं इस डेस्क पर हूँ, किसी भी हाल में भाषाई गँवारपन का प्रयोग न करें। अब आप शिक्षा प्राप्त कर चुकी हैं, आप जा सकती हैं।" सीढ़ियों के पास उसके बारे में जानने के इच्छुक, जिज्ञासु, उद्दण्ड, अहंकार में चूर, सिगार जलाये खड़े थे और अपनी टोपियों को अपनी आँखों पर मजबूती से टिकाये हुए थे।

* * *

मिराण्डा ने गुनगुने पानी में करवट बदली, और उसका मन किया कि वह वहीं सो जाये, तभी उठे जब फिर से सोने का समय हो। उसे तपता हुआ धीमा सिरदर्द था, और उसे अब याद आया कि इसी से उसकी नींद खुली थी और असल में यह शाम से पहले ही शुरू हो गयी थी। जब उसने कपड़े पहने तो उसने अपने सिरदर्द के कपटी पेशे का पता

लगाने की कोशिश की, और यही मान लेना उचित लगा कि यह युद्ध के साथ शुरू हुआ था। "पहले भी सिरदर्द होता था, ठीक है, लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं।" कल समिति के आदमियों के चले जाने के बाद, वह क्लॉकरूम में गयी थी और सोसाइटी एडिटर मैरी टाउनसेण्ड को देखा था, जो चुपचाप किसी बात को लेकर बहुत बेचैन थी। वह बीच में उभरे बेंत के जर्जर सोफे के किनारे पर बैठी, गुलाबी रंग की कोई चीज बुन रही थी। समय-समय पर वह बुनाई करना छोड़ देती थी, अपने सिर को दोनों हाथों पकड़ लेती और उसे हिलाते हुए कहती, *"हे भगवान,"* उसकी आवाज में हैरानी और कुतूहल थी। अखबार में उसके स्तम्भ का नाम ए टाउन गॉसिप था, इसीलिए हर कोई उसे टाउनी कहता था। मिराण्डा और टाउनी आपस में काफी एक जैसी थीं, और वे एक दूसरे को पसन्द करती थीं। वे दोनों एक समय जमीनी रिपोर्टर थीं, और बिना शादी किये एक लड़की के भागने की कुख्यात घटना को "कवर" करने के लिए दोनों को भेजा गया था, और फिर लड़की पकड़ी गयी थी। उसका चेहरा सूज गया था और वह अपनी माँ के साथ बैठी थी, जो कम्बल के ढेर के नीचे लेटी हुई लगातार कराह रही थी। वे दोनों बिलख-बिलखकर युवा पत्रकारों से उस बेहद खराब कहानी को दबाने के लिए कह रही थीं। उन्होंने उस रिपोर्ट को दबा दिया था, जबकि प्रतिद्वन्द्वी अखबार ने इसे अगले दिन छाप

दिया था। मिराण्डा और टाउनी ने तब अपनी सजा एक साथ भुगती थी, और महिलाओं के लिए रोजमर्रे की नौकरियों के लिए उनका दर्जा सार्वजनिक रूप से गिरा दिया गया था, एक अखबार में, दूसरा समाज में। उनमें यह बात समान थी कि उनमें से कोई भी यह नहीं समझ पा रही थी कि भला वे और क्या करतीं, और वे जानती थीं कि बाकी कर्मचारी उन्हें मूर्ख समझते हैं-- अच्छी, लेकिन बेवकूफ लड़कियाँ। खैर, क्लॉकरूम में मिराण्डा को देखते ही टाउनी गुस्से से फट पड़ी, "मैं यह नहीं कर सकती। मैं कभी भी पैसे नहीं जुटा पाऊँगी, मैंने उनसे कहा, मैं नहीं दे पाऊँगी, मैं नहीं दे पाऊँगी, लेकिन उन लोगों ने नहीं सुनी।"

मिराण्डा ने कहा, "मुझे पता है कि मैं इस कार्यालय में अकेली नहीं, जो पचास डॉलर नहीं जुटा सकती। मैंने उनसे कहा कि मैं नहीं दे सकती और मैं दे भी नहीं पाऊँगी।"

"*हे भगवान,*" टाउनी ने उसी स्वर में कहा, "उन्होंने मुझसे कहा कि मेरी नौकरी चली जाएगी।"

"मैं बिल से पूछने जा रही हूँ," मिराण्डा ने कहा; "मुझे नहीं लगता कि बिल ऐसा कर पाएगा--"

"यह बिल की मर्जी पर नहीं है," टाउनी ने कहा। "अगर वे उसके पीछे पड़ गये तो उसे करना ही होगा। क्या तुमको लगता है कि वे हमें जेल में डाल सकते हैं?"

"मुझे नहीं पता," मिराण्डा ने कहा। "अगर वे ऐसा करते हैं, तो हम अकेले नहीं होंगे।" वह टाउनी के पास बैठ गयी और अपना सिर पकड़ लिया। "तुम किस तरह के सैनिक के लिए बुनाई कर रही हो? इसका रंग जोरदार है, इससे तो वह खुश हो जाएगा।"

"भाँड में जाये," टाउनी ने कहा, उसकी सलाइयाँ फिर से चल पड़ीं। "असल बात यह है कि मैं इसे अपने लिए बुन रही हूँ।"

"ठीक है," मिराण्डा ने कहा, "हम अकेली नहीं होंगी और हम अपनी नींद के आगोश में खो जायेंगी।" उसने अपना चेहरा धोया और ताजा मेकअप किया। अपनी जेब से साफ भूरा ग्लव्स निकालकर पहन लिया और युवा औरतों के एक समूह में शामिल होने के लिए निकली-- कण्ट्री क्लब डांस, मॉर्निंग ब्रिज, चैरिटी बाजार, रेड क्रॉस वर्करूम की महिलाएँ, जो अच्छे काम करती थीं और बहुत खुश थीं। उन्होंने चाय नृत्य पेश किया और पैसे जुटाये, और उस पैसे से उन्होंने छावनी अस्पतालों में भरती सैनिकों के लिए मिठाइयाँ, फल, सिगरेट और पत्रिकाएँ खरीदीं। इसके बाद उस पैसे से वे अब चमकीले रंगों से चेहरे रंगकर बड़ी-बड़ी कारों में एक उमंगभरा जुलूस उन बहादुर लड़कों को खुश करने के लिए निकाल रही थीं, जो पहले से ही, आप कह सकते हैं कि अपने देश की रक्षा में लिप्त थे। यह काम उनके

लिए भयानक रूप से कठिन होगा प्यारे, इस तरह से ढेर कर दिया जाना, जबकि वे सभी विदेश में और जितनी जल्दी हो सके खाइयों में जाने के लिए पागल हो रहे हों। हाँ, और उनमें से कुछ तो इतने प्यारे लोग हैं जिन्हें आपने कभी देखा नहीं होगा, मुझे नहीं पता था कि इस देश में इतनी अच्छी सूरत वाले मर्द हैं, मैंने कहा हे भगवान, वे आते कहाँ से हैं? अच्छा, मेरे प्रिय, आप खुद से ही यह प्रश्न पूछ सकते हैं, कौन जानता है कि वे कहाँ से आये हैं? आप बिल्कुल सही हैं, जिस तरह से मैं इस बारे में महसूस करती हूँ, हमें उन्हें सन्तुष्ट करने के लिए हर सम्भव प्रयास करना चाहिए, लेकिन मैं उनसे बात करने के लिए एक दूरी बनाये रखती हूँ। मैंने रंगरूट के लिए उन नृत्यों की संचालिकाओं से पूछा। मैं उनके साथ नाचूँगी, हर डम्बल के साथ जो मुझसे कहे, लेकिन मैं उनसे बात नहीं करूँगी, मैंने कहा, भले ही युद्ध हो रहा हो। इसलिए मैंने अपना मुँह खोले बिना सैकड़ों मील नृत्य किया, सिवाय यह कहने के, "कृपया अपने घुटनों को अपने काबू में रखें"। मुझे खुशी है कि हमने उन नृत्यों को छोड़ दिया। हाँ, और वैसे पुरुषों ने भी आना बन्द कर दिया। लेकिन सुनो। मैंने सुना है कि बड़ी संख्या में रंगरूट मर्द बहुत अच्छे परिवारों से आते हैं; मैं नामों को पकड़ने में माहिर नहीं हूँ, और जिन्हें मैंने पकड़ा भी, उनको मैंने पहले कभी नहीं सुना, इसलिए मुझे नहीं पता। ...लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि अगर वे अच्छे परिवारों से होते, तो

आपको पता होता, है ना? मेरा मतलब है, अगर कोई आदमी अच्छे माहौल में पला होता है तो वह आपके पैरों पर नहीं चढ़ता, है ना? कम से कम ऐसा तो नहीं करता। मैं उन नृत्यों में हर बार एक जोड़ी सैण्डल बर्बाद किया करती थी। खैर, मुझे लगता है कि आजकल हर तरह के सामाजिक जीवन में कोई खास लज्जत नहीं है, मुझे लगता है कि हम सभी को अपने सिर पर रेड क्रॉस के कपड़े बाँधना चाहिए और उन्हें युद्ध की अवधि तक के लिए बाँधना चाहिए--

मिराण्डा, अपनी टोकरी और अपने फूलों को लेकर, उन युवतियों के बीच चली गयी, जो इधर-उधर बिखरी हुई थीं और वार्ड में दौड़ती हुई हँसी-ठिठोली करने वाली उमंग भरी हँसी बिखेर रही थीं, लेकिन इसमें एक भयंकर कर्कस खनखनाहट भी थी जो खून जमा देने वाली थी। अपने बेवकूफी भरे काम से बुरी तरह परेशान, वह ऊँचे बिस्तरों की लम्बी कतारों के बीच तेजी से चल रही थी, जो पाये से पाये सटाकर लगाये गये थे और उनके बीच में सँकरे रास्ते थे। कई सारे सुदर्शन रंगरूट, अपनी ठुड्डी तक चादर ओढ़कर लेटे थे, जो गम्भीर रूप से बीमार नहीं थे, लेकिन ऊब और बेचैनी के शिकार थे और उनमें से अधिकांश किसी भी बात से खुश हो जाने को तैयार थे। उनके शरीर के ज्यादातर हिस्से, जैसे हाथ या सिर पर करीने से पट्टी बँधी थी, और जो लोग स्पष्ट रूप से घायल नहीं थे, उनसे कोई बेअदब लड़की जिसे गम्भीर

चेतावनी दी गयी थी कि वह ऐसे सवाल कभी न पूछे, फिर भी अगर भूल से पूछ लेती कि क्या हुआ है तो वे हमेशा एक ही जवाब देते– "गठिया"। कोई नेकदिल, उत्सुक, जवान जब हँसते हुए अपने सख्त सँकरे बिस्तरों से पुकारता, तो जल्द ही घेर लिया जाता। मिराण्डा, अपने मुरझाये हुए गुलदस्ते तथा मिठाई और सिगरेट की अपनी टोकरी के साथ, इधर-उधर देख रही थी, तभी उसकी नजर पीठ के बल लेटे एक जवान की गैरदोस्ताना कड़वी निगाहों पर गयी, उसका दाहिना पैर एक खाँचे और चरखी से बँधा था। वह उसके बिस्तर के पायताने खड़ी हो गयी और उसे एकटक देखती रही, और उसने भी एक अचल और उग्र तेवर से उसकी ओर देखा। बिना धन्यवाद दिये और इस पूरे धन्धे को घिनौना मानते हुए, उसने आँखों ही आँखों में उसे साफ तौर पर बता दिया कि क्या तुम अपना कचरा मेरे बिस्तर से दूर रख सकती हो? इसलिए कि मिराण्डा ने नीचे झुककर अपने उपहार को इतना करीब रख दिया था जहाँ से वह उसे आसानी से उठा सकता। उसे नीचे रखने के बाद, वह इसे वापस लेने में असमर्थ थी, लेकिन जल्दी ही वहाँ से निकलकर लम्बे गलियारे से होते हुए बाहर अक्टूबर की नरम धूप में आ गयी, उसका चेहरा तप रहा था, जहाँ सुनसान कच्ची बैरकों का समूह, धूसर रंग के कीड़े की तरह एक बेमतलब की जिन्दगी गुजार रहा था। वह एक खिड़की के पास गयी जहाँ वह सैनिक लेटा हुआ था, और

उसके भीतर झाँककर चुपके से उसे देखने लगी। वह अपनी आँखें बन्द करके लेटा हुआ था, उसकी भौहों पर एक उदास, कड़वा तेवर था। वह उसके बारे में बिल्कुल अन्दाजा नहीं लगा सकती थी, वह सोच भी नहीं सकती थी कि वह कहाँ से आया है और न ही यह की उसने किस तरह का "जीवन" जिया होगा, उसने मन ही मन कहा। उसका चेहरा जवान था और उसकी भाव-भंगिमा तीक्ष्ण और सरल थी, हाथ मजदूर के हाथ नहीं थे, लेकिन अच्छी परवरिश वाले हाथ भी नहीं थे। वे अच्छे उपयोगी और सही आकार के हाथ थे, जो वहाँ पलंगपोश पर पड़े थे। उसकी किस्मत ही खराब थी जो आज थोड़ा सा खाने और भों-भों करके खुश रहने वाले किसी हँसमुख भूखे पिल्ले की जगह उसकी मुलाकात ऐसे शख्स से हुई। यह अपने दर्दनाक विचारों में लीन एक कोने की तरफ झाँकने और अपने अन्तरमन का सामना करने जैसा है, उसने सोचा। "इस पूरी चीज के बारे में मेरी अपनी भावनाओं का इजहार हुआ। मैं यहाँ फिर कभी नहीं आऊँगी, ऐसा करने का कोई फायदा नहीं है। बेहद घिनौना," उसने खुद को साफ तौर पर बताया। "बेशक, उसे चुनकर मिलना," जिस कार में वह आयी थी, उसकी पिछली सीट पर बैठ कर उसने सोचा, "मेरे लिए ठीक ही रहा, मैं बेहतर जानती हूँ।"

एक और लड़की जो बहुत थकी हुई लग रही थी, उसके बगल में बैठ गयी। थोड़ी सी खामोशी के बाद, लड़की ने

हैरान होकर कहा, "मुझे नहीं पता कि इससे क्या फायदा है, वास्तव में। उनमें से कुछ तो कुछ भी नहीं लेते। मुझे यह सब बिलकुल पसन्द नहीं, आपको कैसा लगता है?"

"मुझे इससे नफरत है," मिराण्डा ने कहा।

"मुझे लगता है कि फिर भी यह ठीक है," लड़की ने सावधानी से कहा।

"शायद," मिराण्डा ने भी सतर्क होते हुए कहा।

वह कल की बात थी। इस बिन्दु पर मिराण्डा ने फैसला किया कि कल के बारे में सोचने से कोई फायदा नहीं, सिवाय इस बात के कि उसने आधी रात तक का समय एडम के साथ नृत्य करते हुए बिताया था। वह उसके मन में इस कदर समाया हुआ था, कि वह शायद ही समझ पायी कि कब वह उसके बारे में सोचने लगी। उसकी छवि हमेशा कमोबेश उसके आगे मौजूद रहती थी, कभी-कभी वह उसके विचारों की सतह के करीब होता था, सबसे सुखद विचार, सचमुच अकेला सुखद विचार जो उसके पास था। उसने खिड़कियों के बीच लगे शीशे में अपना चेहरा देखा और तय पाया कि उसकी बेचैनी खामखयाली नहीं थी। कम से कम तीन दिनों से उसे अजीब सा लग रहा था और उसका इजहार अनोखा था। उसे लगता था कि किसी भी तरह पचास डॉलर जुटाने होंगे, वर्ना कौन जानता है कि क्या हो जाये? वह निजी तबाही, बेरहम आरोपों और बेहद कड़वे जुर्माने की कहानियाँ सुन-सुनकर पक गयी

थी, जो उस घटना के बाद विकट रूप से उभरी थीं, जिसकी अहमियत उसकी किसी विफलता के आगे कुछ भी नहीं थी, यानी एक बॉण्ड खरीदने से उसका इनकार करना। नहीं, वह अपनी सुन्दर छवि नहीं देख पा रही थी, मगन और रोशन, और ऐसा लगा जैसे उसके बाल भी इधर-उधर बिखरने को ठान लिये हों। मुझे इस बारे में कुछ करना होगा, मैं एडम को इस हाल में खुद को नहीं देखने दूँगी, उसने यह सोचकर खुद से कहा, कि शायद उसी समय वह उसके दरवाजे की कुण्डी खुलने का इन्तजार कर रहा हो, और अगले ही पल जब वह बाहर आएगी तो संयोग से उसे दालान में, या पोर्च के पास पाएगी। दोपहर की धूप ने उस कमरे में ठण्डी तिरछी छाया डाली, जहाँ मुझे लगता है कि मैं जीवित हूँ, उसने कहा, और इस दिन की शुरुआत बुरी है, लेकिन वे सभी अब किसी न किसी वजह से जीवित हैं। ऊँघते हुए, उसने अपने बालों पर इत्र छिड़का, अपनी फर की टोपी और जैकेट पहन ली, जिसे पिछली सर्दियों में खरीदी थी, लेकिन फिर भी अच्छी थी, पहनने पर बढ़िया लगती थी, एक बार फिर उसे खुशी हुई कि उसने इनकी अच्छी-खासी कीमत चुकायी थी। हो सकता है कि वह उस बॉण्ड के लिए पैसे का इन्तजाम कर ले। ताला खोजने के लिए झुके बिना ताला उसे नहीं मिला, फिर एक पल के लिए दुविधा में खड़ी रही, इस खयाल के साथ कि वह कोई बात भूल गयी है जिसकी बाद में उसे काफी कमी महसूस होगी।

एडम दालान में था, अपने ही द्वार से एक कदम बाहर; वह इधर-उधर घूमा, मानो उसे देखकर चौंक गया हो, और कहा, "नमस्ते। मुझे आज शिविर में वापस नहीं जाना है, किस्मत की बात है कि नहीं?"

मिराण्डा उसे देखकर खुशी से मुस्कुराई क्योंकि उसे देखकर उसे हमेशा खुशी होती थी। उसने अपनी नयी वर्दी पहनी हुई थी, और वह बाल से लेकर जूते तक जैतूनी और हल्का भूरा और गहरा पीला, घास के रंग और रेत के रंग का दिख रहा था। उसने फिर इस पर ध्यान दिया कि वह हमेशा उसे देखकर मुस्कुराता है; कि उसकी मुस्कान धीरे-धीरे फीकी पड़ गयी; कि उसकी आँखें स्थिर और विचारशील हो गयीं मानो वह मद्धम रोशनी में पढ़ रहा हो।

वे सुहाने पतझड़ के मौसम में एक साथ बाहर निकले, अपने पैरों के नीचे चमकीले सूखे पत्तों को कुचलते हुए, अपने चेहरे को ऊपर करके दरियादिल आकाश निहारते हुए जो बिलकुल नीला और बेदाग था। सामने आने पर उन्होंने शवयात्रा के गुजरने का इन्तजार किया, शोक मनाने वाले सीधे तन कर बैठे थे जैसे कि उनके दुख में गर्व का भाव हो।

मिराण्डा ने कहा, "मुझे लगता है कि मैं देर कर चुकी हूँ, हमेशा की तरह। क्या समय हुआ है?"

"लगभग डेढ़ बजे," उसने अपनी बाँह को नाटकीय ढंग से ऊपर करके अपनी आस्तीन खिसकाते हुए कहा। जवान

सैनिक अपनी कलाई घड़ी को लेकर आज भी काफी संकोच करते हैं। इतना ज्यादा कि मिराण्डा को पता चला कि अटलांटिक समुद्र तट से दूर दक्षिणी और दक्षिण-पश्चिमी शहरों के लड़के मानते हैं कि केवल बहनें ही कलाई घड़ियाँ पहनती हैं। "मैं तुम्हारी कलाई घड़ी पर झापड़ मारूँगा," एक वाडेविल कॉमेडियन दूसरे से दाँत निपोड़ कर कहता, और यह हमेशा एक अच्छा मजाक होता था, जो कभी पुराना नहीं पड़ा।

"मुझे लगता है कि यह घड़ी पहनने का सबसे सही तरीका है," मिराण्डा ने कहा। "तुमको शरमाने की जरूरत नहीं है।"

"मैं लगभग इसका आदी हूँ," एडम ने कहा, जो टेक्सास का रहने वाला था, "हमें बार-बार बताया गया है कि नियमित सेना के तमाम लोग इसे कैसे पहनते हैं। यह युद्ध की दहशत है,"; उसने कहा, "क्या हम निराश हैं? मैं कहूँगा हाँ, हम हैं।"

इसी तरह की गपशप वहाँ चल रही थी। "तुम इस पर गौर करो," मिराण्डा ने कहा।

वह लम्बा था, कन्धों पर भारी मांसपेशियाँ, कमर पतली, और उसकी वर्दी पर अनगिनत बटन टँके थे और फीते कसे हुए थे जो इतना चुस्त और मजबूत था जैसे कोई चुस्त जैकेट पहने हुए हो, हालाँकि उसका कपड़ा महीन और

कोमल था। उसने अपनी वर्दी सबसे अच्छे दर्जी से सिलवायी थी, यह बात उसने मिराण्डा को उस दिन बतायी थी जब उसने कहा था कि तुम अपने नये सैनिक सूट में कितने मोहक लग रहे हो। "बहरहाल, कोई पोशाक तैयार करना काफी मुश्किल है।" उसने उस दिन कहा था, "कम से कम मैं अपने प्यारे देश के लिए इतना तो कर ही सकता हूँ कि फटीचर जैसे कपड़ों में इधर-उधर न मँडराऊँ।" वह चौबीस साल का था और इंजीनियर्स कोर में सेकेण्ड लेफ्टिनेण्ट था, छुट्टी पर था क्योंकि उसके पलटन की जल्दी ही कहीं रवानगी होने की उम्मीद थी। उसने मिराण्डा से कहा, "मैं अपनी इच्छा पूरी करने आया, और मेरे लिए टूथब्रश और रेजर ब्लेड मुहैया होती रही। अन्दाजा लगाओ कि कितनी खुशकिस्मती से मैं उस किराये के मकान में तुमको ढूँढ निकला? मुझे कैसे पता चला कि तुम वहाँ हो?" उसने उससे पूछा।

टहलते हुए, कदम बढ़ाते हुए, अपने मजबूत पॉलिश किये हुए जूते उसके पतले काले स्युड के जूतों के अगल-बगल मजबूती से टिकाते हुए, उन्होंने जितनी देर हो सके एक साथ टहलना जारी रखा, और साथ ही अपनी छोटी-छोटी सी बातें जो मस्तिष्क की पतली ऊपरी सतह के छोटे से खाँचे में फिट बैठती हों, वे तमाम बातें जो आप कह सकते हैं और सुन सकते हैं, इस सरल और सुन्दर चमत्कार की चमक को छेड़े बिना कि एक दूसरे को यकीन दिलाने वाली खनखनाहट

से भर देनेवाले, चौबीस साल की उम्र के एडम और मिराण्डा नामक दो जिन्दादिल नौजवान, इस धरती पर एक ही क्षण में मौजूद हैं, "क्या तुम नृत्य करने के मूड में हो, मिराण्डा?" और "मैं हमेशा नाचने के मूड में रहती हूँ, एडम!" लेकिन चीजें अभी राह में थीं, जो दिन नृत्य के साथ खत्म हुआ उसे अभी एक लम्बा रास्ता तय करना था।

मिराण्डा ने सोचा, आज सुबह वह सचमुच एक अच्छे ताजा सेब की तरह लग रहा था। किसी दिन बातचीत के दौरान, उसने यह दावा किया था कि उसे अपने जीवन में कभी भी ऐसा दर्द नहीं हुआ जिसे वह याद रख सके। उस राक्षस से भयभीत होने के बजाय, मिराण्डा ने उसके राक्षसी अनोखेपन को पसन्द किया था। जहाँ तक मिराण्डा की बात है, उसके पास दर्द कि बहुत सी यादें बयान करने के लिए थीं, इसलिए उसने उनका जिक्र नहीं किया। सुबह के अखबार में तीन साल काम करने के बाद मिराण्डा को समझदारी और तजुर्बे का गुमान हो गया था; लेकिन वह तो सिर्फ थकान थी, उसने तय पाया कि जिस चीज के चलते उसे ऐसा गुमान हुआ वह था काम के अनियमित घण्टे, गन्दे छोटे रेस्तराँ में लापरवाही से खाना, पूरी रात घटिया कॉफी पीना, और बहुत अधिक धूम्रपान करना। जब उसने एडम से अपने जीने के तौर-तरीके के बारे में कुछ कहा, तो एडम ने कुछ पल उसके चेहरे को पढ़ा जैसे कि एडम ने उसके चेहरे

को पहले कभी देखा ही न हो, और बेलाग-लपेट बोला, "क्यों, इससे तुमको थोड़ी भी चोट नहीं पहुँची, मुझे लगता है तुम सुन्दर हो," और उसे वह असमंजस में छोड़कर वहाँ से चला गया। मिराण्डा को यह सोचकर अचरज और कुढ़न हुई कि कहीं एडम ने यह तो नहीं सोच लिया कि मैं अपनी तारीफ सुनना चाहती थी। वह तारीफ सुनना चाहती थी, लेकिन उस समय नहीं। एडम ने फालतू समय भी बिताया, खास कर उन दस दिनों के दौरान जब उन्होंने एक-दूसरे को जाना, रात के खाने के लिए उसे बाहर ले जाने के लिए एक बजे तक जागता रहा; वह लगातार धूम्रपान भी करता था, हालाँकि वह उसे समझाने की भरपूर कोशिश करती कि धूम्रपान फेफड़ों को कितना नुकसान पहुँचाता है। वह कहता, "लेकिन, इससे क्या फर्क पड़ता है भला, जब आप युद्ध के लिए जा रहे हों?"

"नहीं," मिराण्डा ने कहा, "और यह और भी कम मायने रखता है यदि आप घर पर मोजे बुन रहे हैं। क्या तुम मुझे एक सिगरेट दोगे?" वे एक मेपल के पेड़ के नीचे रुके जिसके आधे पत्ते झड़ गये थे, और वहाँ से गुजर रहे एक शवयात्रा के जुलूस पर मुश्किल से निगाह डाली। एडम की आँखें पीली भूरी थीं और उनमें नारंगी रंग के धब्बे थे, उसके बाल भूसे के रंग के थे जैसे सर के गंजे भाग को भूसे से ढक दिया गया हो। एडम ने अपने सिगरेट केस से एक सिगरेट

निकाला और अपने सिल्वर लाइटर से उस पर निशाना लगाया, उसे अपने ही चेहरे के सामने कई बार चटकाया, और वे धूम्रपान करते हुए वहाँ से चल पड़े।

"मैं तुमको मोजे बुनते हुए देख सकता हूँ," उसने कहा। "सिर्फ तुम्हारी रफ्तार देखनी होगी। तुम तो अच्छी तरह से जानती हो कि यह मेरे बस की बात नहीं।"

"मैं तो इससे भी बदतर काम करती हूँ," उसने शान्त भाव से कहा; "मैं दूसरी नौजवान लड़कियों को सलाह देती हूँ कि वे बैण्डेज बुनें और उनका गोला बनायें और बिना चीनी के काम चलायें और युद्ध जीतने में मदद करें।"

"अरे वाह," एडम ने ऐसे मुद्दों पर प्रचलित मर्दाना नैतिकता के साथ कहा, "तुम्हारे पास और काम ही क्या है, यह कोई मायने नहीं रखता।"

"मुझे ताज्जुब है," मिराण्डा ने कहा। "तुमने अपनी छुट्टी कैसे बढ़वा ली?"

एडम ने कहा, "इसे उन्होंने अभी बढ़ायी, बिना किसी कारण के। वैसे भी जवान लोग मक्खियों की तरह मर रहे हैं। यह अजीब नयी बीमारी। बस ये आपको मायूसी से टोपी झुकाते हुए दस्तक देती है।"

"यह प्लेग जैसी लगती है," मिराण्डा ने कहा, "मध्य युग की कोई बीमारी। क्या तुमने कभी इतना ज्यादा अन्तिम

संस्कार होते देखा था?"

"कभी नहीं। खैर, हम अपना दिमाग मजबूत बनायें और इससे बचने की उम्मीद करें। मुझे अचानक चार दिन और मिल गये हैं और हमें अपने पैरों के नीचे घास का एक तिनका भी सलामत नहीं रहने देना है। आज रात का क्या प्रोग्राम है?"

"वही काम," मिराण्डा ने कहा, "लेकिन इसे लगभग डेढ़ बजे तक खतम कर दें। मुझे अपनी पुरानी नौकरी के अलावा एक खास काम मिला है।"

"तुमको क्या काम मिला है," एडम ने कहा, "कुछ करना तो है नहीं, बस मनबहलाव के लिए एक के बाद दूसरा चक्कर लगाना और फिर उसके बारे में कुछ लिख मारना।"

"हाँ, कहने को तो यह चक्कर ही है," मिराण्डा ने कहा। शवयात्रा के गुजरने तक वे खड़े रहे, और इस बार वे इसे चुपचाप देखते रहे। मिराण्डा ने अपनी टोपी को तिरछा खींच लिया और सूरज की रोशनी से उसकी आँख झपझपायी, उसका सिर धीरे-धीरे "सुनहरी मछली की तरह" चकराने लगा, उसने एडम से कहा, "मेरा सिर घूम रहा है। मैं अभी आधी नींद में हूँ, मुझे कॉफी पीनी होगी।"

वे एक दवा की दुकान के काउण्टर पर अपनी कोहनी के बल झुक गये। "घर पर खाने के लिए मलाई नहीं बची," मिराण्डा ने कहा, "और चीनी सिर्फ एक मुट्ठी है। मेरे पास

तो ये दोनों ही चीजें नहीं हैं; और इस तरह शहीद होने जा रही हूँ मैं। मेरा मतलब है कि उबली हुई गोभी पर गुजारा करना, घटिया कपड़े पहनना और अगले काम पर जाने के लिए चुस्त-दुरुस्त रहना। अब मेरे ऊपर कोई और युद्ध नहीं लादा जाएगा।"

"ओह, अब और युद्ध नहीं होंगे, क्या तुम अखबार नहीं पढ़ती हो?" एडम ने पूछा। "हम इस बार उनका सफाया करने जा रहे हैं, और वे साफ हो जायेंगे, और यह सब होके रहेगा।"

"उन्होंने मुझे यही बताया", मिराण्डा ने अपने कड़वे गुनगुने काढ़े को चखते हुए और एक उदास चेहरा बनाते हुए कहा। उनकी मुस्कान ने एक दूसरे की बातों को मंजूरी दी, उन्हें लगा कि उन्हें सही स्वर मिल गया है, वे युद्ध को ठीक से समझ रहे थे। इन सबसे ऊपर, मिराण्डा ने सोचा, बिलकुल दाँत नहीं पीसना, बाल नहीं नोंचना, यह हुड़दंग बहुत ही नामुनासिब है और यह आपको कहीं भी ले नहीं जाती है।

"शोरबा," एडम ने अपने कप को सरकाते हुए अशिष्टता से कहा। "यही सब तुम नाश्ते में ले रही हो?"

"यह मेरी इच्छा से अधिक है," मिराण्डा ने कहा।

"मैंने आठ बजे सॉसेज और मेपल सिरप के साथ मोथी (एक तरह का अनाज) का केक और दो केले खाये, और दो

कप कॉफी पी और फिर भी मुझे लगता है, जैसे मैं कूड़ेदान में पड़ा एक भूखा अनाथ बच्चा हूँ। मैं पूरी तरह तैयार हूँ," एडम ने कहा, "भुना हुआ मांस, तला हुआ आलू और कोई दूसरी चीज भी खाने को तैयार हूँ..."

"ये सब मत करो," मिराण्डा ने कहा, "यह मुझे ऊटपटांग लगता है। मेरे जाने के बाद यह सब करना।" वह ऊँची सीट से उतरी, उसके आगे थोड़ा झुकी, अपने चेहरे को गोल दर्पण में देखा, अपने होठों पर रूज रगड़ा और तय किया कि वह सुधरेगा नहीं।

"कोई चीज बहुत गलत हो रही है," उसने एडम से कहा। "मैं बहुत खराब महसूस कर रही हूँ। यह सिर्फ मौसम और युद्ध का मामला नहीं हो सकता।"

"मौसम सही है," एडम ने कहा, "और युद्ध इतना अच्छा है कि इस पर यकीन करना मुश्किल है। लेकिन कब से? कल तो तुम ठीक थी।"

"मुझे नहीं पता," उसने धीरे से कहा, उसकी आवाज धीमी और पतली लग रही थी। वे हमेशा की तरह अखबार के टाँड तक जाने वाले, गन्दे पायदानों वाले खड़े जीने से पहले खुले दरवाजे पर रुके थे। मिराण्डा ने एक पल के लिए ऊपर टाइपराइटरों की खड़खड़ाहट और नीचे प्रेस की लगातार गड़गड़ाहट सुनी। "काश, हम पूरी दोपहर एक पार्क के बेंच पर बिता रहे होते, या पहाड़ों पर ड्राइव

करते," उसने कहा।

"मैं भी यही चाहता हूँ," उसने कहा; "कल यही करते हैं।"

"हाँ, कल, अगर कुछ और न हो जाये। मैं भागना चाहती हूँ," उसने कहा; "दोनों भाग चलें।"

"मैं?" एडम ने कहा। "जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ भागने की बात करना भी मुमकिन नहीं है। वहाँ आम तौर पर अपने पेट के बल इधर-उधर रेंगते रहना होता है। जानती हो, काँटेदार तार और ऐसी चीजें। यह उस तरह की चीज होगी जो जीवन में एक ही बार होती है।" उसने एक पल को सोचा, और आगे कहा, "मैं इसके बारे में कोसने जैसी कोई बात नहीं जानता, वास्तव में, लेकिन वे इसे ऐसा बना देते हैं कि बहुत गन्दा लगता है। मैंने इसके बारे में इतना कुछ सुना है कि मुझे ऐसा लगता है, जैसे मैं वहाँ रहा और वापस आ गया। यह एक अधोगति होने जा रही है," उसने कहा, "जैसे किसी स्थान की तस्वीरों को इतनी बार देखना कि आप वास्तव में वहाँ पहुँचने पर इसे बिल्कुल भी देखना नहीं चाहते। मुझे लगता है कि मैं जीवन भर सेना में ही रहा हूँ।"

उसका मतलब था छह महीने। अनन्त काल। वह बिलकुल खुश और ताजातरीन लग रहा था, और उसे अपने जीवन में कभी तकलीफ नहीं हुई थी। जब वे वहाँ थे और वापस आये तभी उसने उन्हें देखा था और वे फिर

कभी वैसा नहीं दिखे। "पहले से ही वापस आया हुआ नायक," मिराण्डा ने कहा, "और मैं नहीं चाहती कि तुम वहाँ जाओ।"

एडम ने कहा, "जब मैंने अपने पहले प्रशिक्षण शिविर में संगीन का इस्तेमाल करना सीखा, तो मैं जितने का हिसाब लगा सकता था, उससे कहीं ज्यादा रेत के बोरे और घास की बोरियों में संगीन घुसेड़ा। वे हम पर चिल्लाते रहे, 'उसे ले लो, उस बोचे (जर्मन) को ले लो, वह तुमको घोंपे, उससे पहले तुम उसे घोंप दो-- और हम अगिया-बैताल की तरह उन रेत के बोरों पर टूट पड़ते, और ईमानदारी की बात ये कि कभी-कभी इतनी मेहनत करने के बाद जब बोरे से रेत निकलते देखता, तो खुद को महामूर्ख समझता। मैं इस बेवकूफी को महसूस करते हुए कभी-कभी रात में जाग उठता था।"

"मैं कल्पना कर सकती हूँ," मिराण्डा ने कहा। "यह पूरी तरह बकवास है।" वे रुके रहे, उनका मन अलविदा कहने को नहीं हो रहा था। थोड़ी देर रुक कर एडम ने, जैसे कि बातचीत जारी रखते हुए पूछा, "क्या तुम जानती हो कि किसी हमले में शामिल होने के बाद एक खन्दक टोली की औसत जीवन प्रत्याशा क्या होती है?"

"मुझे लगता है, बहुत कम।"

"बस नौ मिनट," एडम ने कहा; "एक हफ्ते भी नहीं

हुए, मैंने तुम्हारे ही अखबार में यह पढ़ा था।"

"इसे दस मिनट कर दो तो मैं भी साथ चलूँगी," मिराण्डा ने कहा।

"एक भी सेकण्ड ज्यादा नहीं," एडम ने कहा, "ठीक नौ मिनट, इसे मानो या मत मानो।"

"डींग हाँकना बन्द करो," मिराण्डा ने कहा। "किसने इसका हिसाब लगाया?"

"एक गैर-लड़ाकू, कोई सूखा रोग का शिकार शख्स," एडम ने कहा।

यह बात बहुत मजाकिया लगी, वे हँसते-हँसते एक दूसरे के आगे की ओर झुक गये और मिराण्डा हँसते-हँसते निढाल हो गयी। मिराण्डा ने आँखों से आँसू पोंछे। "मेरी जान, यह एक अजीब युद्ध है," उसने कहा; "है ना? जब भी मैं इसके बारे में सोचती हूँ तो मुझे हँसी आती है।"

एडम ने उसके हाथ अपने दोनों हाथों से पकड़ा और उसके दस्तानों की नोक को थोड़ा खींचकर उन्हें सूँघा। "तुम्हारा इत्र कितना अच्छा है," उसने कहा, "और वह भी भरपूर। दस्ताने और बालों पर ढेर सारा इत्र मुझे पसन्द है," उसने फिर से उसे सूँघते हुए कहा।

"मैंने शायद बहुत ज्यादा लगा लिया है," मिराण्डा ने कहा। "आज मैं सूँघ या देख या सुन नहीं पा रही हूँ। मुझे

भयंकर सर्दी लगी है।"

"तुमको सर्दी नहीं होनी चाहिए," एडम ने कहा; "मेरी छुट्टी लगभग खत्म हो चुकी है और यह आखिरी छुट्टी होगी, आखिरी।" उसने अपनी उँगलियाँ उसके दस्तानों पर फिरायी और उसके हाथों को इस तरह घुमाया जैसे कि वे कोई नयी और निराली और बेशकीमती चीज हों, और वह शरमा कर चुप हो गयी। वह उसे पसन्द करती थी, वह उसे पसन्द करती थी, और इसके अलावा और भी बहुत कुछ था, लेकिन उसकी कल्पना करना भी अच्छा नहीं था, क्योंकि वह उसके लिए नहीं था और न ही किसी दूसरी महिला के लिए, अब तक अनुभूति से परे होने के कारण, बिना किसी ज्ञान या अपनी खुद कि कार्रवाई के, मरने के लिए वचनबद्ध था। मिराण्डा ने अपना हाथ खींच लिया। "अलविदा," आखिरकार मिराण्डा ने कहा, "आज रात के लिए।"

वह ऊपरी मंजिल की ओर दौड़ी और छत से पीछे मुड़कर देखा। वह अभी भी उसे देख रहा था, और बिना मुस्कुराए उसने हाथ उठाया। मिराण्डा ने अलविदा कहने के बाद शायद ही किसी को पीछे मुड़कर देखा हो। वह कभी-कभी उस व्यक्ति की एक और झलक पाये बिना नहीं रह पाती थी, जिसके साथ वह बात कर रही थी, मानो ऐसा करके वह इस हल्के बन्धन को भी अचानक बहुत रूखे ढंग

से तोड़ दिये जाने से बचा लेगी। लेकिन लोग जल्दी से चले गये, उनके चेहरे पहले से ही बदल गये, अटल, अपने अगले पड़ाव की ओर जाने के तनाव में, अपने अगले कार्य या मुठभेड़ की योजना बनाने में पूरी तरह लीन। एडम इन्तजार कर रहा था जैसे कि वह उससे मुड़ के देखने की उम्मीद कर रहा हो, और उसकी तनावपूर्ण भौंहों के नीचे उसकी आँखें गहरी काली थीं।

*　　*　　*

अपनी मेज पर वह बिना जैकेट या टोपी उतारे, लिफाफों को फाड़ने और पत्रों को पढ़ने का दिखावा करती हुई बैठी रही। केवल खेल रिपोर्टर चुक रैन्सिवाले और टाउनी गॉसिप आज उसकी मेज के पास बैठे थे, और उसे उनका वहाँ रहना अच्छा लगता था। जब उसका मन होता तो वह भी उनके पास बैठ जाती थी। टाउनी और चुक बात कर रहे थे और उनकी बातचीत चलती रही।

टाउनी ने कहा, "वे कहते हैं, कि यह वास्तव में एक जर्मन जहाज द्वारा बोस्टन में लायी गयी किसी प्रजाति के कारण होता है, एक भेष बदला हुआ जहाज, जाहिर है कि यह अपने खुद के रंग के साथ नहीं आया था। क्या यह बेहूदी बात नहीं है?"

"शायद वह एक पनडुब्बी होगी," चुक ने कहा, "रात के अँधेरे में चुपके-चुपके समुद्र की तलहटी से होकर। अब

यह बेहतर लगता है।"

"हाँ, यह सही है," टाउनी ने कहा; "वे हमेशा इन ब्योरों में कहीं न कहीं गलती कर जाते हैं... और उन्हें लगता है कि शहर पर जिन रोगाणुओं का छिड़काव किया गया था-- यह बोस्टन में शुरू हुआ था, आप को पता है-- और किसी ने रिपोर्ट किया कि उसने एक अजीब, मोटे, चिकने-से बादल को बोस्टन हार्बर के ऊपर से तैरते हुए देखा और धीरे-धीरे शहर के उस छोर पर फैल गया। मुझे लगता है कि वह कोई बूढ़ी औरत थी जिसने उसे देखा था।"

"होना ही चाहिए था," चुक ने कहा।

"मैंने इसे न्यूयॉर्क के एक अखबार में पढ़ा," टाउनी ने कहा; "तब तो इसे सच होना ही पड़ेगा।"

इस बात पर चुक और मिराण्डा इतनी जोर से हँसे कि बिल खड़ा हो गया और उनकी ओर गुस्से से घूरने लगा। "टाउनी अभी भी अखबार पढ़ती है," चुक ने समझाया।

"अच्छा, इसमें मजाक की क्या बात है?" बिल ने पूछा और अपने सामने हो रहे हंगामे पर त्योरी चढ़ाते हुए, दुबारा कुर्सी पर बैठ गया।

"वह कोई गैर-लड़ाकू था जिसने उस बादल को देखा," मिराण्डा ने कहा।

"जाहिरा तौर पर," टाउनी ने कहा।

"शायद लुस्क समिति का कोई सदस्य," मिराण्डा ने कहा।

"द एँजल ऑफ मॉन्स (पहले विश्व युद्ध में अंग्रेज सैनिकों को बचाने वाला काल्पनिक फरिस्ता)," चुक ने कहा, "या एक डॉलर सालाना पर रखा कोई आदमी।"

मिराण्डा सुनना और बात करना बन्द करके पाँच मिनट के लिए सिर्फ एडम के बारे में सोचना चाहती थी, सचमुच सिर्फ उसी के बारे में, लेकिन समय नहीं था। पहली बार उसने उसे दस दिन पहले ही देखा था, और तब से वे ट्रकों और खुली मोटर गाड़ियों और हाथ ठेलों और फार्म वैगनों के बीच से तेजी से निकलते हुए एक साथ सड़कों को पार कर रहे थे; वह दरवाजे पर और छोटे रेस्तराँ में उसकी प्रतीक्षा करता था, जहाँ बासी तली हुई चर्बी की गन्ध आ रही होती थी; उन्होंने जाज ऑर्केस्ट्रा की तेज चीख और शोर के बीच खाना खाया और नृत्य किया था, वे उबाऊ थिएटरों में बैठे थे क्योंकि मिराण्डा को उस नाटक के बारे में अखबार में लिखना था। एक बार वे पहाड़ों पर गये थे और कार छोड़कर, एक पथरीली राह से ऊपर चढ़े थे, और एक कगार पर पहुँचे थे जहाँ एक समतल चट्टान थी, जहाँ बैठकर उस घाटी के भूदृश्य को रोशनी के साथ रंग बदलते हुए देखा था, इसमें कोई शक नहीं, मिराण्डा ने कहा बेहद शानदार-- "हमें विश्वास हो या न हो, लेकिन यह बेहतरीन

कविता है," उसने एडम से कहा था; वे एक दूसरे के कन्धे पर सर रखकर चुपचाप वहाँ बैठे हुए उस दृश्य का मजा ले रहे थे। दो रविवारों को वे भूवैज्ञानिक संग्रहालय गये थे, और एक साथ सम्मोहित भाव से वहाँ उल्काओं के टुकड़ों, चट्टानों की संरचनाओं, जीवाश्मित दाँतों और पेड़ों, भारतीय तीरों तथा चाँदी और सोने की परत वाले बनावटी गुफाओं को देखा था। एडम ने कहा, "उन पुराने खनिकों के बारे में सोचो जो नालों के किनारे छोटे बर्तनों में अपनी किस्मत चमकाते थे, जबकि वह पृथ्वी के अँदर था--" उसने कहा था कि वह उन चीजों को बेहद पसन्द करता है जिन्हें बनाने में लम्बा समय लगता है; उन्हें हवाई जहाज, सभी प्रकार की मशीनरी और लकड़ी या पत्थर पर तराशी गयी कलाकृतियाँ बहुत पसन्द हैं। वह उनके बारे में ज्यादा कुछ नहीं जानता था, लेकिन जब उसने उन्हें देखा तो उन्हें पहचान लिया। उसने स्वीकार किया था कि कोई भी किताब, इंजीनियरिंग की पाठ्यपुस्तकों को छोड़कर किसी भी तरह की किताब को पूरी नहीं पढ़ा; पढ़कर ऊब और बेचैनी होती थी; उसे पछतावा हुआ कि वह अपना रोडस्टर नहीं लाया, लेकिन उसने नहीं सोचा था कि उसे कार की जरूरत होगी; उसे ड्राइविंग करना था, उसे उम्मीद नहीं थी कि मिराण्डा इस बात पर यकीन करेगी कि वह एक दिन में सैकड़ों मील की दूरी तय कर सकता है ... उसने अपने रोडस्टर के पहिये से उसे इसकी एक झलक दिखायी थी; अपने आप नाव

चलाकर नौकायन करते हुए, पूरी तरह आजाद और हवा से बात करते हुए, सभी कोणों से रस्सियों को खींचते हुए; वह वायु सेना में शामिल हो जाता, लेकिन जब भी वह इसका जिक्र करता तो उसकी माँ गुस्से से पागल हो जाती। वह इस बात का एहसास नहीं कर पाती थी कि रात में जमीन पर खूनी लड़ाई लड़ने वालों की तुलना में हवा में लड़ना एक अच्छा सौदा कैसे हो सकता है। लेकिन वह तर्क नहीं देती थी, क्योंकि दरअसल उसे जमीनी लड़ाई के बारे में भी पता नहीं था। और यहाँ वह एक मील ऊँचे पठार पर फँस गया था, जहाँ नाव और और पानी नहीं था और उसकी कार घर पर थी, वरना वे सही मायने में एक अच्छा समय बिता सकते थे। मिराण्डा जानती थी कि वह उसे बताने की कोशिश कर रहा था कि वह किस तरह का व्यक्ति होता अगर उसके पास उसकी मशीनरी होती। उसने महसूस किया कि वह अच्छी तरह जानती है कि वह किस तरह का व्यक्ति है, और उसे यह बताना चाहती कि अगर उसे लगता है कि वह अपनी नाव या ऑटोमोबाइल घर पर छोड़ आया है, तो वह कहीं ज्यादा गलत है। टेलीफोन बज रहे थे। बिल किसी पर चिल्ला रहा था जो लगातार कहता रहा, "ठीक है, लेकिन सुनो तो, ठीक है, लेकिन बात तो सुनो–" लेकिन कोई भी सुनने वाला नहीं था, बेशक, कोई नहीं। बूढ़ा गिबन्स झुंझलाकर चीखा, "जार्ज, जार्ज–"

"बस वही," टाउनी अपनी सबसे आत्मसन्तुष्ट देशभक्तिपूर्ण आवाज में कह रही थी, "हट सेवा (पहले विश्व युद्ध में सैनिकों के आराम और मनोरंजन के लिए केन्द्र) एक अच्छा विचार है, और हम सभी को स्वयंसेवक होना चाहिए, भले ही वे हम से न चाहें।" टाउनी इस मामले में अच्छी तरह काम करती है, मिराण्डा ने सोचा, उसे देखो; क्लॉकरूम के पास उसका गुलाबी रंग का स्वेटर और विद्रोही चेहरा उसे याद आ गया। टाउनी के चेहरे पर सरलता और अच्छाई की आभा थी, वह अपने देश के लिए खुद को बलिदान करने के लिए तैयार थी। टाउनी ने कहा, "आखिरकार, मैं लिटिल थिएटर के लिए काफी अच्छा गा सकती हूँ और नृत्य कर सकती हूँ, और मैं उनके लिए उनके पत्र लिख सकती हूँ, और चुटकी बजाते मैं एम्बुलेंस चला सकती हूँ। मैंने सालों तक फोर्ड चलायी है।"

मिराण्डा बातचीत में शामिल हुई, "ठीक है, मैं भी गा सकती हूँ और नृत्य भी कर सकती हूँ, लेकिन बिस्तर लगाने और झाड़ू-पोंछा करने वाला कौन है? उन झोपड़ियों की देख-भाल करना मुश्किल है, और चूँकि यह गन्दा काम होगा, इसलिए हम पूरी तरह परेशान हो जाएँगे; और मुझे अगर मुश्किल गन्दा काम मिला तो मैं पूरी तरह दुखी हो जाऊँगी, फिर तो मैं घर पर ही रहूँगी।"

"मुझे लगता है कि महिलाओं को इससे दूर ही रहना

चाहिए," चुक राउन्सीवले ने कहा। "वे युद्ध की भयावहता में सिर्फ स्कर्ट का योगदान करती हैं।" चुक के फेफड़े खराब थे और वह इस तमाशे में शामिल न हो पाने को लेकर बहुत चिन्तित था। "काश कि मैं वहाँ जा पाता और अब तक एक पैर गँवाकर वापस आ जाता; यह बुढ़ापे के लिए बहुत फायदेमन्द रहता। वर्ना उसे या तो अपने लिए खुद ही दारू खरीदना होगा या परहेज करना होगा।"

मिराण्डा ने चुक को वेतन मिलने वाले दिन बूढ़े आदमी को शराब के लिए पैसे देते देखा था। वह एक चापलूस किस्म का बदमाश बूढ़ा था, उसमें भी सबसे बुरा था। जब उसके बेटे ने उसका आखिरी सिक्का ले लिया था, तो उसने उसकी पीठ पर धौल जमाया और पितृवत स्नेह की धुँधली निगाहों से उसको निहारते हुए मुस्कुराया था।

"इस फ्लोरेंस नाइटिंगेल ने युद्धों को बर्बाद कर दिया था," चुक जारी रहा। "सैनिकों को पुचकारने और उनके घावों पर मरहम-पट्टी करने और उनके बुखार से तपते माथे को सहलाने का क्या मतलब? यह युद्ध नहीं है। वे जहाँ गिरें, वहीं खत्म हो जायें। इसी लिए तो वे वहाँ गये हैं।"

"आप बात तो कर ही सकते हैं," टाउनी ने उस पर तिरछी निगाह डालते हुए कहा।

"क्या इरादा है? चुक ने कन्धा फुलाते और उकचाते हुए पूछा। "आप जानती हैं कि मेरे पास यही फेफड़ा है, या

शायद अब भी इसका आधा हिस्सा बचा है।"

"आप बहुत ज्यादा नाजुक मिजाज हैं," टाउनी ने कहा। "मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं था।"

बिल अपने आधे पिये सिगार को चबा रहा था, उसके बाल करीने से सँवरे थे, उसकी आँखें नरम और हिरण की तरह तीखी थी। मिराण्डा ने सोचा था कि अगर वह एक सदी तक जीवित रहा, तो भी वह चौदह साल से अधिक का नहीं दिखेगा, उसकी हालत देखकर ऐसा नहीं लगता कि वह ज्यादा दिन जी पायेगा। उसका हाव-भाव सिनेमा में दिखने वाले सिटी एडिटर जैसा था, यहाँ तक कि सिगार चबाने का उसका अन्दाज भी। क्या उसने फिल्मों के अनुरूप अपनी शैली बनायी थी, या पटकथा लेखकों ने ही बिल की खास अदाओं को स्थायी बना लिया था? बिल चुक के ऊपर गरज रहा था, "*और* अगर वह यहाँ वापस आता है तो उसे गली में ले जाओ और *धक्के मार कर* बाहर का रास्ता दिखाओ!"

चुक ने कहा, "वह वापस आएगा, चिन्ता न करें।" बिल ने हल्के से कहा, जो अब किसी और बात में लग गया था, "ठीक है, उसे दफा करो।" टाउनी अपनी मेज पर चली गयी, लेकिन चुक नये हास्य नाटक में ले जाये जाने के लिए बड़े मन से इन्तजार कर रहा था। मिराण्डा के पास दो टिकट होते थे और हर सोमवार को वह किसी एक पत्रकार को

अपने साथ चलने के लिए कहती थी। चुक अपने खेल लेखन में बेहद सख्त और पेशेवर था, लेकिन उसने मिराण्डा से कहा था कि वह वास्तव में खेल को कोई खास तवज्जो नहीं देता; यह नौकरी उसे बाहर घूमने का मौका देती है और उसे बूढ़े आदमी के लिए दारू खरीदने के लिए भरपूर पैसा भी देती है। उसने नाटक देखने को तरजीह दी और यह नहीं समझ पाया कि यह काम हमेशा महिलाओं के जिम्मे ही क्यों होता है।

"बिल आज किसकी चीर-फाड़ करना चाहता है?" मिराण्डा ने पूछा।

चुक ने कहा, "वही नर्तकी वाला मामला जिसके बारे में तुमने आज लिखा था।" "वह यहाँ पूरे तेवर में और समय से पहले ही आ गया और उस शख्स के बारे में पूछ रहा था जो नाटकों के ऊपर लिखता है। उसने कहा कि मैं उस बेवकूफ से निबटने जा रहा हूँ जिसने वह लेख अखबार में लिखा है और उसकी नाक पर एक घूसा जमाऊँगा...."

"मुझे उम्मीद है कि वह चला गया," मिराण्डा ने कहा; "मुझे लगता है कि उसे ट्रेन पकड़नी होगी।"

चुक ने खड़े होकर अपने मैरून रंग के लम्बे गले के स्वेटर को ठीक किया, गाढे रंग के ट्वीड के पतलून और कीलदार चमड़े के जूतों पर नजर डाली, जिससे उसको लगता था कि इससे इस सच्चाई को छिपाने में मदद मिलेगी

कि उसका फेफड़ा खराब है और वह खेल को तवज्जो नहीं देता, और कहा, "वह बहुत पहले ही जा चुका है, चिन्ता मत करो। चलो चलते हैं; तुम हमेशा की तरह लेट हो गयी।"

मिराण्डा का सामना डर्बी टोपी पहने एक छोटे कद के नीरस आदमी से हुआ, जो काफी नाराज लग रहा था। हो सकता है कि वह किसी समय खूबसूरत शख्स रहा हो, लेकिन अब उसके चेहरे पर उस जगह गड्ढा हो गया था, जहाँ उसके बगल के दाँत टूट गये थे, और उसकी उदास लाल-धारियों वाली आँखों ने बाँकपन खो दिया था। बालों की एक पतली भूरी लहर को खुशबूदार तेल लगाकर कंघी की गयी थी और डर्बी टोपी के किनारे लट निकाला गया था। उसने अपने पैर नहीं हिलाये, बल्कि एक तरह के निष्क्रिय प्रतिरोध के साथ खड़ा हो गया, और मिराण्डा से पूछा, "क्या आप इस आंचलिक अखबार की कथित नाट्य आलोचक हैं?"

"माफी चाहती हूँ, मैं ही हूँ," मिराण्डा ने कहा।

"ठीक है," नाटे आदमी ने कहा, "मैं आपके कीमती समय में से सिर्फ एक मिनट माँग रहा हूँ।" उसका निचला होंठ बाहर निकल आया, वह अपने वास्कट की जेब में कोई चीज ढूँढने के लिए हाथ हिलाने लगा। "आपके इतना आगे निकल जाने से मुझे नफरत है, बस इतना ही।" वह जर्जर अखबारों की कतरनों के संग्रह को उलटने-पलटने लगा। "बस एक बार गौर

करें, है ना? और मैं आपसे जानना चाहता हूँ कि क्या आपको लगता है कि मैं एक मुफस्सिल स्तर के आलोचक के चलते बर्बाद हो जाऊँ," उसने एक बेसुरी आवाज में कहा; "यहाँ देखो, यहाँ बफेलो, शिकागो है। न्यूयॉर्क के अलावा सेण्ट लूई, फिलाडेल्फिया, फ्रिस्को, यहाँ इस व्यवसाय के सबसे अच्छे प्रकाशन हैं। वैराइटी, बिल्बार्ड, वे सभी बर्बाद हो गये और स्वीकार किया कि डैनी डिकरसन इस काम में माहिर हैं। तो आप ऐसा नहीं मानती, क्यों? मैं आपसे बस इतना ही पूछना चाहता हूँ।"

"नहीं, मैं नहीं मानती," मिराण्डा ने उससे दो टूक शब्दों में कहा, जितना वह कह सकती थी, "और मैं इसके बारे में बात करने के लिए रुक नहीं सकती।"

छोटा आदमी उसके पास झुक गया, उसकी आवाज काँप रही थी जैसे कि वह लम्बे समय से बेचैन हो। "इधर देखो, आपको मेरे बारे में कौन सी चीज पसन्द नहीं आयी? मुझे बताओ।"

मिराण्डा ने कहा, "आपको बिल्कुल भी ध्यान नहीं देना चाहिए। मैं क्या सोचती हूँ, इससे क्या फर्क पड़ता है?"

"मुझे परवाह नहीं है कि आप क्या सोचती हैं, बात यह नहीं है," छोटे आदमी ने कहा, "लेकिन ये चीजें गड्ड-मड्ड हो जाती हैं और पूरब की बुकिंग एजेंसियों को जानकारी नहीं है कि यहाँ क्या चल रहा है। हम दूर-दराज के इलाके

में आलोचना करते हैं और उन्हें लगता है कि यह शिकागो में होने वाली आलोचना जैसी ही है, देखें? वे इनमें फर्क नहीं समझते। वे नहीं जानते कि जितने उच्च स्तर के नाटक होते हैं, आलोचक उसकी उतनी ही तीखी आलोचना करते हैं। लेकिन पत्रकारिता के पेशे में जो सर्वश्रेष्ठ लोग हैं, वे भी मुझे इस पेशे में सर्वश्रेष्ठ मानते हैं और मैं आपसे जानना चाहता हूँ कि आपको मुझमें क्या खराबी नजर आती है।"

चुक ने कहा, "चलो, मिराण्डा, पर्दा उठने वाला है।" मिराण्डा ने उस छोटे आदमी को उसकी कतरनें वापस कर दी जिनमें से ज्यादातर दस साल पुराने थे, और वहाँ से खिसकने की कोशिश की। वह फिर उसके सामने खड़ा हो गया और बिना सोचे-समझे बोला, "अगर तुम एक मर्द होती तो मैं तुम्हारा सर तोड़ देता।" चुक इस बात से चौंक गया और अपनी जेब से हाथ निकालते हुए खड़ा होकर बोला, "अब तुमने काफी नाच-गाना कर लिया, बेहतर यही होगा कि यहाँ से बाहर निकल जाओ। इससे पहले कि मैं तुम्हें उठाकर नीचे फेंक दूँ, यहाँ से खिसक लो।"

छोटे आदमी ने अपनी टाई के ऊपरी हिस्से को कस लिया, लाल पोल्का डॉट्स वाली एक छोटी नीली टाई, गाँठ के पास थोड़ा उधड़ा हुआ। उसने उसे खींचकर सीधा किया और इस तरह डायलोग बोला जैसे उसने इसका रिहर्सल किया हो, "आओ बाहर गली में।" आँसू उसकी सूजी लाल

पलकों में भर गया। चुक ने कहा, "ओए, चुप कर," और मिराण्डा का पीछा किया, जो सीढ़ियों से ऊपर की ओर दौड़ रही थी। उसने उसे फुटपाथ पर पकड़ लिया। चुक ने कहा, "मैं उस जोकर को आत्म-प्रचार की कोशिश में सिसकता और बड़बड़ाता छोड़ आया। मनबढ़, बिगड़ैल।"

मिराण्डा ने कहा, "आजकल इस दुनिया में हर चीज हद से बाहर है। मैं यहाँ पत्थर पर बैठना चाहती हूँ चुक, और मरना और फिर कभी नहीं देखना चाहती-- काश मैं अपनी याददाश्त खो देती और अपना नाम भूल जाती... काश--"

चुक ने कहा, "अपने आप को मजबूत करो, मिराण्डा। यह खुद को कमजोर करने का समय नहीं है। उस शख्स को भूल जाओ। मनोरंजन के धन्धे में लगे हर सौ लोगों में से निन्यानबे ऐसे ही हैं। लेकिन तुम वैसे भी इनसे ठीक से नहीं निबटती। तुम अपने सर पर बोझ ले लेती हो। तुमको बस इतना करना है कि हेडलाइनर बनाना है, और आपको गये-गुजरे लोगों का उल्लेख करने की जरूरत ही नहीं है। यह ध्यान रखने की कोशिश करो कि रिपिन्सकी ने इस शहर के शो बिजनेस पर कब्जा कर लिया है; रिपिन्सकी को खुश रखोगी तो तुम विज्ञापन विभाग को भी खुश रखोगी, उनको खुश रखोगी तो तुम्हारी तनख्वाह बढ़ेगी। मिल-मिलाकर काम करो, मेरी गूँगी बच्ची, क्या तुम कभी नहीं सीखोगी?"

"मुझे लगता है कि मैं गलत चीजें ही सीखती रही," मिराण्डा ने निराश होकर कहा।

"तुम बात बिलकुल सही कहती हो," चुक ने खुश होकर उससे कहा। "तुम इस मामले में उतनी ही ठीक हो जितना मैंने पहले देखा था। अब तुम बेहतर महसूस कर रही हो?"

* * *

"तुम एक सड़े हुए नाटक में मुझे ले आयी हो," चुक ने कहा। "अब तुम इसके बारे में क्या लिखने वाली हो? अगर मैं लिखता तो मैं..."

"तो लिख डालो," मिराण्डा ने कहा। "इस बार तुम्ही लिखो। मैं वैसे भी चलने की तैयारी कर रही हूँ, लेकिन किसी को बताना मत।"

"सचमुच?" चुक ने कहा, "जीवनभर मैं एक प्रादेशिक अखबार में एक तथाकथित नाटक-समीक्षक बनने के लिए तरसता रहा हूँ, और निश्चय ही यह मेरे लिए पहला मौका है।"

"बेहतर है इसे कर डालो," मिराण्डा ने उससे कहा। "यह तुम्हारा आखिरी मौका हो सकता है।" उसने सोचा, यह किसी चीज के अन्त की शुरुआत है। मेरे साथ कुछ भयावह होने वाला है। मैं जहाँ जा रही हूँ वहाँ मुझे रोटी और मक्खन की जरूरत नहीं होगी। मैं इसे चुक की मर्जी

पर छोड़ दूँगी, उसके पास एक आदरणीय पिता हैं, जिनके लिए वह शराब खरीद सकता है। मुझे आशा है कि वे उसे ऐसा करने का मौका देंगे। ओह, एडम, मुझे आशा है कि मेरे साथ जो भी मामला है, उसमें डूबने से पहले मैं तुमसे एक बार फिर मिलूँगी। "काश, युद्ध खत्म हो जाता," उसने चुक से कहा, जैसे कि वे उसी के बारे में बात कर रहे हों। "काश यह खत्म हो गया होता और काश कि यह कभी शुरू ही नहीं हुआ होता।"

चुक अपना पैड और पेंसिल निकाल चुका था और अपनी समीक्षा लिखनी शुरू कर दी थी। मिराण्डा ने जो कहा था वह सही लग रहा था लेकिन वह इसे कैसे लेगा? चुक ने कहा, "मुझे परवाह नहीं है कि इसकी शुरुआत कैसे हुई या कब खतम होगा," चुक ने घसीट कर लिखते हुए कहा, "मैं उसमें शामिल नहीं होने जा रहा।"

मिराण्डा ने सोचा, सभी ठुकराए हुए पुरुष ऐसी ही बातें करते हैं। युद्ध एक ऐसी चीज थी जिसे वे सभी चाहते थे, लेकिन अब वे इसे पसन्द नहीं करते। शायद उनमें से कुछ लोग मोर्चे पर जाने के लिए बेहद इच्छुक थे। वे लोग जिन महिलाओं से युद्ध की बातें करते थे उनकी तरफ कुटिलता से निहारते थे, एक चौकस नाराजगी जो कहती थी, "मुझ पर सफेद डोरे मत डाल, खून की प्यासी औरत। मैंने अपना मांस कौवे को दिया और उसने उसे नहीं

खाया।" घरों में रहने वालों के लिए युद्ध के बारे में सबसे बुरी बात यह है कि अब कोई किसी से बात नहीं करता। यदि आप आने वाले खतरे पर ध्यान नहीं देंगे तो लुस्क समिति आपको भड़काएगी। रोटी युद्ध जीतेगी। काम जीतेगा, चीनी जीतेगी, आड़ू की गुठली जंग जीतेगी। बकवास। बकवास नहीं, मैं आपको बता दूँ कि आड़ू की गुठली से एक तरह की अहम धमाकेदार चीज को टालने की संभावना होती है। इसलिए सभी खुश गृहिणियाँ डिब्बाबन्दी के मौसम के दौरान अपने देश की वेदी पर आड़ू की गुठली की टोकरियाँ रखने के लिए होड़ करती हैं। यह उन्हें व्यस्त रखता है और उन्हें अपनी सार्थकता का अहसास कराता है, और इन महिलाओं का पुरुषों के पीछे पागल होना खतरनाक है, अगर उन्हें अपने कम अकल दिमाग को शरारत से दूर रखने के लिए कुछ काम नहीं दिया जाता है। इसलिए युवा लड़कियाँ जो भविष्य का मुकम्मल पालना होती हैं, अपने निर्मल सुहावने चेहरों को रेड क्रॉस के स्कार्फ से ढँके हुए, हाथों में बेतरतीब पट्टियाँ लिए हुए कतारों में खड़ी होती हैं जो कभी सैनिक अस्पताल तक नहीं पहुँचेंगी, और उनके बुने हुए स्वेटर कभी भी मर्दाना छाती को गर्म नहीं करेंगे, उनके दिमाग हर तरह के खून और कीचड़ और फ्लाइंग कोर के अधिकारियों के लिए एन्थस क्लब के अगले नृत्य को बड़े प्रेम से सहन कर लेते हैं। अचल और शान्त रहने से ही युद्ध

में विजय प्राप्त होगी।

"मैं मोर्चे पर नहीं जा रहा हूँ," अपनी समीक्षा में डूबा हुआ चुक ने कहा। नहीं, एडम वहाँ होगा, मिराण्डा ने सोचा। वह कुर्सी पर नीचे खिसक गयी और उसके धूल भरे कवर पर अपना सिर टिका लिया, अपनी आँखें बन्द कर ली और एक पल के लिए जीवनभर के लिए तयशुदा सच के रूबरू हुई जो बेहद भयानक था कि एडम और उसके लिए आगे कुछ भी बचा नहीं है। कुछ भी तो नहीं। उसने अपनी आँखें खोलीं और अपनी दोनों हथेलियों को एक साथ ऊपर उठा लिया और उन पर एकटक निहारते हुए इस डरावने खयाल को भुलाने की कोशिश की।

"अब इसे देखो," चुक ने कहा, क्योंकि रोशनी आ गयी थी और दर्शक खड़बड़ मचाते हुए फिर से बातें करने लगे थे। "मैंने हेडलाइनर आने से पहले ही सब कुछ लिख डाला। यह पुरानी स्टेला मेयू है, और वह हमेशा अच्छी कलाकार रही है, वह चालीस वर्षों से बेहतरीन है, और वह 'ओ ब्लूज इज नॉट थिन बट द इजी-गोइंग हार्ट डिजीज' गाने जा रही है। आपको उसके बारे में यही बात जानने की जरूरत है। अब जरा इस पर सरसरी नजर डाल लें। क्या आप इस पर हस्ताक्षर करना चाहेंगी?"

मिराण्डा ने उन पन्नों को लिया और जिम्मेदारी से देखा, उन्हें पलटते हुए सोचा कि उसकी उम्मीद सही निकली,

और उसे वापस दे दिया। "हाँ, चुक, हाँ। मैंने उसका जिम्मा लिया था। लेकिन इस पर अपनी दस्तखत नहीं करूँगी। हमें बिल को बताना जरूरी है कि इसे तुमने लिखा है, क्योंकि शायद यह तुम्हारी समीक्षा की शुरुआत हो।"

"तुमने इसकी आधी सराहना भी नहीं की, "चुक ने कहा। "तुमने इसे बहुत तेजी से पढ़ा। अब सुनो-" और वह उत्साह से बड़बड़ाने लगा। जब वह पढ़ रहा था तो मिराण्डा ने उसका चेहरा देखा। यह एक खुशनुमा चेहरा था जिसमें जीवन की कोई लौ थी, और नाक के ऊपर भौंह के बीचोबीच एक उचित गम्भीरता थी। जब से वह उसे जानती थी तब से पहली बार, उसे इस बात पर ताज्जुब हुआ कि चुक किस बारे में सोच रहा है। वह व्यस्त और दुखी लग रहा था, वह इतना तुच्छ नहीं था जितना वह लग रहा था। दर्शक गलियारे में जमा हो रहे थे, जैसे ही वे लॉबी में पहुँचे, माचिस की तीली रगड़ने के लिए तैयार अपने सिगरेट डिब्बी से निकाल रहे थे; लहराते बालों वाली महिलाओं ने अपने स्कार्फ लपेट लिए, पुरुषों ने अपने कड़े कॉलर को ठीक करने के लिए अपनी ठुड्डी ऊपर कर ली, और चुक ने कहा, "अब हम भी चल सकते हैं।" मिराण्डा अपनी जैकेट का बटन लगाते हुए कुछ सोचती हुई चलती भीड़ में शामिल हुई। मुझे उनके बारे में आज तक क्या पता चला? उनमें से बहुत से लोग जरूर ऐसे होंगे जो मेरी तरह ही सोचते होंगे,

और हम एक दूसरे से अपनी उदासी के बारे में एक शब्द भी कहने की हिम्मत नहीं करते हैं, हम गूंगे जानवर हैं जो खुद को नष्ट कर रहे हैं, और क्यों? क्या यहाँ कोई उन बातों पर विश्वास करता है जो हम एक दूसरे से कहते हैं?

* * *

क्लोकरूम में बेत के सोफे की किनारी पर असहज ढंग से तनी मिराण्डा ने समय बीतने और खुद को एडम के साथ छोड़ देने का इन्तजार किया। ऐसा लग रहा था कि समय कहीं ज्यादा ही झक्कीपन से सरक रहा हो, उसके दिमाग में तीस मिनट की गोधुली का अन्तराल, एक सेकण्ड के समान लग रहा था, और फिर प्रकाश के छींटे जो उसकी घड़ी पर साफ तौर पर चमक रहे थे, यह बता रहे थे कि तीन मिनट इन्तजार करना एक असहनीय तनाव है, जैसे कि वह अपने अँगूठे के बल उल्टा लटक रही हो। अन्त में यह कल्पना करना उचित था कि एडम घर से बाहर निकलकर वक्त से पहले घिर आये अँधेरे में, उस नीली धुन्ध में कदम रखता है, जो जल्द ही बारिश में बदल सकती है, कि वह रास्ते में होगा, और उसके बारे में ज्यादा सोचने की जरूरत नहीं। बस उससे मिलने की ख्वाहिश थी और एक डर कि मौजूदा खतरे को देखते हुए शायद उससे दुबारा मिलना न हो पाये; उनका एक दूसरे की तरफ बढ़ाया गया हर कदम खतरनाक लग रहा था, उन्हें करीब लाने के बजाय दूर कर रहा था, जैसे कोई तैराक

अपनी पूरी ताकत लगाकर हाथ-पाँव मारने के बावजूद लहरों के थपेड़ों से धीरे-धीरे पीछे की ओर धकेला जा रहा हो। "मैं प्यार नहीं करना चाहती," वह खुद के खिलाफ सोचती, "न ही एडम, समय बिलकुल नहीं है और हम इसके लिए तैयार भी नहीं हैं और फिर भी यही है जो हमारे पास है--"

और वह वहाँ फुटपाथ पर था, अपना पहला कदम उठाते हुए, और मिराण्डा उससे मिलने के लिए लगभग दौड़ती हुई उसके पास पहुँची। एडम ने उसका हाथ पकड़कर पूछा, "क्या अब तुम ठीक महसूस कर रही हो? क्या तुम्हें भूख लगी है? क्या तुम थक गयी हो? क्या तुम शो के बाद डांस करना पसन्द करोगी?"

"हर बात के लिए हाँ," मिराण्डा ने कहा, "हाँ, हाँ.... " उसका सिर एक पंख की तरह था, और उसने खुद को उसकी बाहों के सहारे छोड़ दिया। धुन्ध अभी भी धुन्ध थी जो बाद में बारिश हो सकती थी, और हालाँकि उसके मुँह में हवा तेज और साफ थी, उसे लगा कि इससे साँस लेने में आसानी नहीं हो रही है। "मेरी राय में शो अच्छा ही है, या कम से कम मजेदार तो है ही," उसने उससे कहा, "लेकिन मैं उसके बारे में कुछ कह नहीं सकती।"

नाटक बहुत लम्बा और नीरस था, लेकिन एडम और मिराण्डा एक साथ बिलकुल चुपचाप बैठे थे और बड़े धैर्य से उसके खत्म होने का इन्तजार कर रहे थे। एडम ने

सावधानी और गम्भीरता से अपने दस्ताने उतार दिये और उसका हाथ पकड़ लिया जैसे कि वह सिनेमाघरों में उसका हाथ पकड़ने का आदी हो। एक बार वे मुड़े और उनकी आँखें मिलीं, लेकिन केवल एक बार, और दो जोड़ी आँखें एक समान अविचल और छलिया थीं। मिराण्डा में एक गहरी थरथराहट हुई, और उसने खुद को सचेतन तौर पर रोकना शुरू कर दिया जैसे कि वह अपनी ओर आ रही आँधी से बचने के लिए खिड़कियाँ और दरवाजे बन्द कर रही हो और पर्दे गिरा रही हो। एडम बड़े निराले मुदित मन से वह नीरस नाटक देख रहा था, उसका चेहरा बिल्कुल स्थिर और शान्त था।

जब तीसरे अंक के लिए पर्दा उठा, तो तीसरा अंक अचानक शुरू नहीं हुआ। इसके बजाय एक पर्दा सामने आया जो एक अमरीकी झण्डे से अनुचित और अनादर पूर्वक ढका हुआ था, जिसके दोनों ऊपरी कोने पर कील ठुकी थी, बीच में समेटकर दुबारा उस पर कील ठोका गया था और वह धूलधूसरित झण्डा जैसे-तैसे लटक रहा था। पहले उसने खुद को युद्ध काल में एक डॉलर सालाना पर सेवा देनेवाले किसी लोकल शख्स की तरह पेश किया, और अब लिबर्टी बॉण्ड बेचने का काम कर रहा था। वह अधेड़ उम्र का एक मामूली आदमी था जिसकी पतलून और वास्कट में एक साफ-सुथरा छोटा तरबूज बटन टंका

था, एक घुन्ना किस्म का कट्टरपंथी, एक ऐसा चेहरा और कद-काठी जिसमें पचास साल के बेहूदा कामुक रिकॉर्ड के अलावा कोई झलक नहीं मिल सकती थी। लेकिन जीवन में एक बार उसे प्रभावशाली स्थिति में आने और एक अहम् शख्सियत बनने का मौका मिला था, और अब वह एक अभिनेता के अन्दाज में डायलाग मारते हुए प्रफुल्लित हो रहा था।

"पेंगुइन की तरह लग रहा है," एडम ने कहा। वे एक-दूसरे की तरफ देखकर मुस्कुराये, मिराण्डा ने अपना हाथ छुड़ा लिया, एडम ने अपने हाथ एक साथ जोड़ लिये और वे उसी पुराने धूल भरे पर्दे के सामने उसी घिसेपिटे सड़ियल भाषण को झेलने के लिए तैयार हो गये। मिराण्डा ने न सुनने की कोशिश की, लेकिन उसे सुनाई दिया। ये नीच हूण-- गौरवशाली बेलेउ वुड-- हमारा मूलमंत्र है बलिदान-- शहीद बेल्जियम-- जब तक हमले हों, तब तक बलिदान दो-- हमारे शानदार नौजवान हैं वहाँ-- बिग बर्थास बमवर्षक- सभ्यता की मृत्यु-- जर्मन शैतान--

"मेरे सिर में दर्द हो रहा है," मिराण्डा फुसफुसायी। "ओह, वह चुप क्यों नहीं होता?"

"वह नहीं होगा," एडम फुसफुसाया। "मैं तुम्हें एस्पिरिन ला कर दूँ।"

"फ्लैण्डर्स के खेतों में फील्ड में पॉपियाँ बढ़ती हैं। मेड़ों के आरपार कतारों के बीच" (जॉन मैकक्रे की मशहूर कविता पंक्ति जिसमें बेल्जियम के युद्ध में मरने वाले सैनिकों को याद किया गया है)..."वह घर में दाखिल हो रहा है," एडम फुसफुसाया-- अत्याचार, जर्मन संगीनों पर लहराये गये मासूम बच्चे-- आपका बच्चा और मेरा बच्चा-- अगर हमारे बच्चे इन खतरों से बच जाते हैं, तो आइए हम सभी सम्मान के साथ कहें कि ये मरनेवाले व्यर्थ नहीं मरे हैं-- युद्ध, युद्ध, युद्ध को खत्म करने के लिए युद्ध, लोकतंत्र के लिए युद्ध, मानवता के लिए, हमेशा-हमेशा के लिए एक सुरक्षित दुनिया-- और लोकतंत्र में हमारे विश्वास को एक दूसरे के आगे और दुनिया के आगे साबित करने के लिए, सब एक साथ मिलकर लिबर्टी बॉण्ड खरीदें और चीनी के बगैर और ऊन के मोजे के बगैर काम चलायें-- यही बात थी न? मिराण्डा ने खुद से सवाल किया। यह तो कहो कि मैंने अन्तिम पंक्ति नहीं सुनी। क्या तुमने एडम का जिक्र किया? यदि नहीं किया तो मुझे कोई दिलचस्पी नहीं है। एडम के बारे में क्या खयाल है, सुअर के बच्चे? और हम इस बार क्या गाने जा रहे हैं, "टिपेररी" या "देयर इज ए लॉन्ग, लॉन्ग ट्रेल"? (पहले विश्वयुद्ध के गीत) ओह, कृपया शो को चलने दें और समाप्त करें। इससे पहले कि मैं एडम के साथ नृत्य कर सकूँ और क्योंकि हमारे पास ज्यादा समय नहीं है, मुझे इसके बारे

में एक अंश लिखना होगा। कोयला, तेल, लोहा, सोना, अन्तर्राष्ट्रीय वित्त, तुम हमें उनके बारे में क्यों नहीं बताते, नीच झूठे?

दर्शकों ने खड़े होकर गाया, "ए लॉन्ग, लॉन्ग ट्रेल, ए विण्डिंग," उनके खुले हुए मुँह काले और फुटलाइट की रोशनी में चमकता पीला चेहरा; कुछ चेहरों पर मुस्कराहट थी, कुछ पर रुलाई और उन सब पर घोंघे के चलने से बनी चमकीली धारियाँ थीं। एडम और मिराण्डा भी अपनी ऊँची आवाज के साथ उसमें शामिल हो गये, एक या दो बार एक-दूसरे की ओर देखकर शर्मिंदगी से मुस्कुराते हुए।

गली में आकर, उन्होंने अपनी सिगरेट जलायी और हमेशा की तरह धीरे-धीरे चलने लगे। मिराण्डा ने धीमी आवाज में कहा, "बस एक और गलीज बूढ़ा आदमी जो जवानों को मरते हुए देखना चाहता है।" "बिल्ले जो बिल्ली के छोटे बच्चों को खाने की कोशिश करते हैं, तुमको पता है। क्या सचमुच वे तुम्हें मूर्ख नहीं बनाते, एडम?"

इस तरह दोनों नौजवान उस दौर के हालात के बारे में बात कर रहे थे। उन्होंने महसूस किया कि वे उस खेल की हकीकत को अच्छी तरह समझ रहे हैं। उसने आगे कहा, "मुझे इन घिनौने तोंदियल, गंजे, बूढ़ों से बेहद नफरत है, ये कायर खुद तो युद्ध के मोर्चे पर नहीं जाते, वे जानते हैं कि वे खुद सुरक्षित हैं; इसके बजाय वे तुमको भेज रहे हैं--"

एडम ने उस पर असली अचरज के साथ निगाह डाली। "अरे, *वो बूढ़ा,*" उसने कहा। "अब वो घटिया पेटू, अगर वे उसे ले ही गये तो वह करेगा भी क्या? यह उसकी गलती नहीं है," उसने समझाया, "वह बकवास करने के अलावा कुछ नहीं कर सकता।" अपनी जवानी पर उसका गर्व, उसका धैर्य, उसकी सहनशीलता और उस अभागे आदमी के प्रति अपमान की भावना उसके रोम-रोम से बाहर आ गयी, जब वह सहजता और पूरी ताकत के साथ आराम से टहल रहा था। "तुम उससे क्या उम्मीद कर *सकती हो,* मिराण्डा?"

वह अक्सर उसे नाम लेकर बुलाती थी, लेकिन वह शायद ही कभी उसका नाम लेता था। खुशी के छोटे से झोंके ने उसके नाम की आवाज उसके मुँह में डाल दी और उसे जवाब देने से रोक दिया। एक पल के लिए वह झिझकी, और दूसरे मुद्दे पर हमले के लिए तैयार हो गयी। "एडम," उसने कहा, "युद्ध का सबसे बुरा पहलू डर और सन्देह है और आप जिनसे मिलते हैं उन सब की आँखों में खौफ का इजहार है ... जैसे कि उन्होंने अपने दिमाग और अपने दिल के पट बन्द कर लिये हों और आप को टकटकी लगाये निहार रहे हों, छलांग लगाने के लिए तैयार हैं यदि आप एक इशारा करते हैं या कोई शब्द बोलते हैं तो उनको तुरन्त समझ में नहीं आता। यह मुझे डराता है; मैं भी डर-डर के जीती हूँ, और किसी को डर के साये में नहीं जीना चाहिए।

यह अन्दर-अन्दर घुलाता है, और झूठ बोलने पर मजबूर करता है। युद्ध हमारे दिल और दिमाग पर यही छाप छोड़ता है एडम, और तुम दिल और दिमाग को अलग नहीं कर सकते-- यह उनके ऊपर जो असर डालता है वह शरीर के साथ जो कर सकता है उससे कहीं बदतर है।"

एक पल के बाद एडम ने संजीदगी से कहा, , "अरे हाँ, लेकिन मान लीजिए कि कोई सही सलामत वापस आ जाता है? दिमाग और दिल को तो कभी-कभी एक और मौका मिल जाता है, लेकिन अगर बेचारे पुराने इन्सानी ढांचे के साथ कुछ हो जाता है, तो यह बदकिस्मती ही होती है, बस इतनी सी बात है।

"अरे हाँ," मिराण्डा ने उसकी नकल उतारी। "यह बदकिस्मती ही होती है, बस इतनी सी बात है।"

"अगर मैं नहीं जाता," एडम ने तटस्थ भाव से कहा, "तो मैं खुद से आँखें नहीं मिला पाऊँगा।"

तो सब कुछ तय था। अपनी उँगलियों को अपनी बाँह पर फैलाकर, मिराण्डा चुपचाप एडम के बारे में सोच रही थी। नहीं, उनमें कोई आक्रोश या विद्रोह नहीं था। एकदम पवित्र, उसने सोचा, हर तरह से निर्दोष, परिपूर्ण, जैसा कि बलि के बकरे को होना चाहिए। बलि का बकरा अपने लम्बे डग को उसके कदमों से मिलाते हुए लापरवाही से आगे बढ़ा, बढ़िया अमरीकी शैली में साथ-साथ चलते हुए, सड़क के मोड़ पर उसे

सहारा दिया जैसे कि वह अपंग हो– "मुझे आशा है कि हम कीचड़ के पोखर में नहीं गिरेंगे। वह मुझे उठाकर पार करा देगा"-- तम्बाकू के धुएँ की गन्ध, इत्ररहित साबुन की मर्दाना खुशबू, ताजा साफ किया हुआ चमड़ा और ताजा धुली हुई त्वचा, अपनी नाक से साँस लेते और अपनी छाती को आराम देते हुए। उसने अपने सिर को पीछे की ओर झटका और आकाश की ओर देखकर मुस्कुराया जहाँ अभी भी धुन्ध थी, बारिश की उम्मीद जगा रही थी। "अरे यार," उसने कहा, "क्या गजब की रात है। क्या तुम अपनी समीक्षा जल्दी पूरी नहीं कर सकती कि हम असली काम शुरू कर सकें?"

वह अखबार के दफ्तर के बगल में एक रेस्तराँ में उसके साथ एक कप कॉफी पीने से पहले उसका इन्तजार कर रहा था, जिसका नाम द ग्रीसी स्पून था। आखिरकार वह नीचे आयी, अपना मुँह धोया और कंघी की और पावडर लगाया, फिर उसने एडम की ओर देखा, जो एक बड़ी-सी मैली खिड़की के पास बैठा हुआ था, उसका चेहरा सड़क की ओर था, लेकिन वह नीचे देख रहा था। यह एक असाधारण चेहरा था, जो मद्धम रोशनी में भी चिकना और महीन और सुनहरा दिख रहा था, लेकिन एक बेपरवाह उदासी में डूबा हुआ, तकलीफदेह चिन्ता और मायूसी की झलक दे रहा था। सिर्फ एक पल के लिए उसे एडम की ऐसी छवि दिखी जैसे वह बूढ़ा हो गया हो, एक ऐसे आदमी का चेहरा जो जिन्दा

नहीं रहेगा। फिर एडम ने उसे देखा, उठकर खड़ा हुआ, और एक उज्जवल आभा से उसका सामना हुआ।

* * *

एडम ने मेज के पास दोनों की कुर्सियाँ खींच ली; उन्होंने गर्म चाय पी और ऑर्केस्ट्रा के जाज की धुन पर "पैक अप योर ट्रबल" गीत सुने।

"इन ए किट बैग, एण्ड स्मोइल, स्मोइल, स्मोइल," आधा दर्जन लडके जिनकी उम्र अभी सेना में भरती होने लायक नहीं हुई थी, चिल्लाए और ऑर्केस्ट्रा के पास एक टेबल के इर्दगिर्द बैठ गये। वे बेहूदे ढंग से चीखते और ठहाके लगाते रहे, जैसे वे किसी उन्मादी उल्लास में मगन हों और मेजपोश के नीचे से चपटी बोतल सरकाने लगे, जिसमें एक साफ पेय पदार्थ था-- क्योंकि इस पश्चिमी शहर की बुनियाद और तामीर शराब के नशे में धुत्त खनिकों द्वारा की गयी थी, यहाँ किसी को भी खुलेआम शराब पीने की इजाजत नहीं थी। उन्होंने शराब को अपने अदरक के शर्बत वाले गिलास में ढाला और गाते रहे, "इट्स ए लॉन्ग वे टू टिपरेरी।" एडम ने कहा, "चलो नाचते हैं।" यह एक बेढब छोटी जगह थी, भीड़-भाड़ वाली, गर्मी और धुएँ से भरी हुई, लेकिन इससे बेहतर कुछ नहीं था। संगीत मजेदार था; और जीवन बहरहाल पूरी तरह से सनकी है, मिराण्डा ने सोचा, तो क्या फर्क पड़ता है? हमारे पास तो यही है, एडम और

मैं, यही है जो हम हासिल करने जा रहे हैं, हमारे साथ ऐसा ही है। वह कहना चाहती थी, "एडम, अपने सपने से बाहर आओ और मेरी बात सुनो। मेरे सीने और मेरे सिर और मेरे दिल में दर्द है और ये दर्द वास्तविक हैं। मुझे हर तरफ दर्द हो रहा है, और तुम इतने खतरे में हो कि मैं सोच भी नहीं सकती, और हम एक दूसरे की हिफाजत क्यों नहीं कर सकते? जब उसका हाथ एडम के कन्धे पर कस गया, तो उसका हाथ भी तुरन्त उसकी कमर पर कस गया, और मजबूती से उसे पकड़े हुए वहीं रुका रहा। उन्होंने कुछ कहा नहीं लेकिन एक-दूसरे को देखकर लगातार मुस्कुराते रहे, एक दूसरे से अदलाबदली करती अनोखी मुस्कानें जैसे कि उन्हें कोई नयी भाषा मिल गयी हो। मिराण्डा, जिसका चेहरा एडम के कन्धे के सटा था, उसने एक कोने की मेज पर बैठे एक साँवले युवा जोड़े को देखा, दोनों के हाथ एक-दूसरे की कमर के चारों ओर लिपटे थे, उनके सिर एक साथ सटे हुए थे और उनकी आँखें एक ही चीज को निहार रही थीं, जो उनके आगे की खाली जगह में मँडरा रही थी। लड़की का दाहिना हाथ मेज पर था, लड़के का हाथ उसके ऊपर था, और रोने के चलते लड़की का चेहरा धूमिल हो गया था। कभी-कभी वह उसके हाथ उठाता और उसे चूम लेता, कभी उसके हाथ मेज पर छोड़ देता तो कभी ऊपर उठा लेता, और उसकी आँखें फिर से भर आयीं। वे बेशर्म

नहीं थे, बल्कि उनको होश ही नहीं था कि वे कहाँ हैं, या शायद उनके पास जाने लायक और कोई दूसरी जगह नहीं थी। उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा, और छोटा मूक अभिनेता बार-बार वही अभिनय दोहराता रहा, जैसे एक उदास लघु फिल्म बार-बार नीरस ढंग से चल रही हो। मिराण्डा को उनसे ईर्ष्या हुई। उसे उस लड़की से ईर्ष्या हुई। कम से कम वह रो तो सकती है अगर उससे कुछ मदद मिलती हो, और उस लड़के को यह पूछने की भी जरूरत नहीं कि बात क्या है? मुझे बताओ। उनके सामने कॉफी के प्याले थे, और थोड़ी देर के बाद मिराण्डा और एडम ने नृत्य किया और दोबारा फिर से बैठ गये-- कॉफी काफी ठण्डी हो गयी थी, इसलिए उन्होंने एक ही घूँट में पी लिया, फिर पहले की तरह एक-दूसरे को गले लगा लिया, बिना एक शब्द बोले और शायद ही कभी आपस में नजरें मिलायी। उनके बीच कुछ तय हो चुका था, कम से कम; यह वांछित था, वांछित कि वे एक साथ चुपचाप बैठ सकते थे और उनके चेहरे पर एक ही भाव हो सकता था, जब वे उस नरक में झाँकते जिसे उन्होंने साझा किया था, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह किस तरह का नरक था, वे एक साथ थे।

एडम और मिराण्डा के पास की मेज पर एक युवती अपनी कोहनी पर झुक कर अपने युवक को कहानी सुना रही थी। "और मैं उसे पसन्द नहीं करती क्योंकि वह बहुत

ही नौसिखुआ है। वह मुझसे ड्रिंक लेने के लिए कहता रहा और मैं उससे कहती रही, मैं नहीं पीती और उस लड़के ने कहा कि अब देखो, मुझे बहुत बुरी तरह ड्रिंक की जरूरत है और मुझे लगता है कि इसका मतलब है कि तुम मेरे साथ नहीं पीना चाहती, मैं यहाँ बैठकर अकेले नहीं पी सकता, उसने कहा। मैंने उससे कहा, तुम खुद को दूसरों से ऊपर नहीं मानते; यह *मुझे* पसन्द है, मैंने कहा, और यदि तुम पीना चाहते हो तो पियो लेकिन मुझे क्यों घसीटते हो? तो उसने वेटर को बुलाया और अदरक की शर्बत और दो गिलास मँगवाई और मैंने हमेशा की तरह अदरक पी ली लेकिन उसने अपने ग्लास में एक तरह की शराब डाली। उसे उस शराब पर बहुत गर्व था, क्योंकि उसने खुद आलू से बनाया था। घर का बना बढ़िया शराब, पाइप से चुआया हुआ, उसने मुझसे कहा, इसकी तीन बूंदें डाल लो तो तुम्हारे अदरक का स्वाद मम्स एक्सट्री (शैम्पेन) जैसा हो जाएगा। लेकिन मैंने कहा नहीं, और मेरा मतलब है नहीं, क्या तुम अपनी बकवास बन्द नहीं कर सकते? उसने एक और ड्रिंक ली और कहा, आह, चलो, प्रिये, इतना जिद्दी मत बनो, यह तुम्हारी शर्मिंदगी को मिटा देगा। तो मैं इस बकबक से तंग आ गयी, और मैंने कहा, अपना शर्म मिटाने के लिए मुझे पीने की जरूरत नहीं है, मैं चाय पर ही अपनी दिलेरी दिखा सकती हूँ, मैंने कहा। अच्छा, फिर दिखाती क्यों नहीं, वह जानना चाहता था, और इसके

बाद मैंने कहा--"

*   *   *

उसे लगा कि वह लम्बे समय से सो रही थी जब बिना किसी पदचाप या दरवाजा खुलने की आवाज के, एडम कमरे में आकर बत्ती जला रहा था, और वह जानती थी कि यह वही है, हालाँकि पहले उसकी आँखें चौंधिया गयी थीं और उसने अपना सिर घुमा लिया था। वह फौरन उसके पास आया और पलंग के किनारे बैठ गया और ऐसे बात करने लगा जैसे वह पहले से जारी बातचीत को ही आगे बढ़ा रहा हो। उसने कागज के एक टुकड़े को मसलकर उसे भट्ठी में फेंक दिया।

"तुम्हें मेरी पर्ची नहीं मिली," एडम ने कहा। "मैंने उसे दरवाजे के नीचे से सरका दिया था। मुझे बहुत सारे टीके लगवाने के लिए शिविर में अचानक वापस बुला लिया गया। उन्होंने मुझे उम्मीद से अधिक समय तक रखा, मुझे देर हो गयी। मैंने अखबार के दफ्तर में फोन किया तो उन्होंने बताया कि तुम आज नहीं आ रही हो। मैंने यहाँ मिस हॉबे को फोन किया तो उसने कहा कि तुम बीमार हो और टेलीफोन तक नहीं आ सकती। क्या उसने तुम्हें बताया नहीं?"

"नहीं," मिराण्डा ने ऊँघते हुए कहा, "लेकिन मुझे लगता है कि मैं पूरे दिन सोती रही हूँ। ओह, मुझे याद है,

यहाँ एक डॉक्टर आया था। बिल ने उसे भेजा था। मैं एक बार टेलीफोन करने भी गयी थी, क्योंकि बिल ने मुझसे कहा था कि वह एक एम्बुलेंस भेजेगा जो मुझे अस्पताल ले जाएगी। डॉक्टर ने मेरी छाती थपथपाकर जाँच की और एक नुस्खा छोड़ दिया और कहा कि वह दुबारा आएगा, लेकिन वह नहीं आया।

"कहाँ है, नुस्खा?" एडम से पूछा।

"मुझें नहीं पता। हालाँकि उसने इसे लिखा था, मैंने देखा था।"

एडम टेबल और टाँड पर पर्ची खोजने लगा। "ये रहा," उसने कहा। "मैं कुछ ही मिनटों में वापस आ जाऊँगा। मुझे पूरी रात खुली रहनेवाली दवा की दुकान खोजनी होगी। एक से ज्यादा बज रहा है। चलता हूँ।"

ठीक है। मिराण्डा ने उस दरवाजे की ओर देखा जहाँ से वह कुछ देर पहले निकलकर गया था, फिर उसने अपनी आँखें बन्द कर ली और सोचा, जब मैं यहाँ नहीं रहूँ तो मुझे इस कमरे के बारे में कुछ भी याद नहीं रहता जहाँ मैं लगभग एक साल से रह रही हूँ, सिवाय इसके कि पर्दे बहुत पतले हैं और सुबह की रोशनी को रोकने का कोई उपाय नहीं है। मिस हॉबे ने भारी पर्दे लगाने का वादा किया था, लेकिन वह कभी दिखायी नहीं दी जब मिराण्डा अपने ड्रेसिंग गाउन में उस सुबह टेलीफोन पर थी। मिस हॉबे एक ट्रे लेकर वहाँ से

गुजरीं। वह कम बालों वाली छोटे कद की चिड़चिड़ी दोस्ताना प्राणी थी, और उनके हाव-भाव बिलकुल साफ तौर से बता रहे थे कि इस जगह से कमाई नहीं हो रही है और उनका मिजाज गरम है।

"मेरी प्यारी *बच्ची*," उन्होंने मिराण्डा की पोशाक पर एक नजर डालते हुए तेजी से कहा, "क्या बात है?"

मिराण्डा ने अपने कान में रिसीवर लगाये हुए कहा, "मुझे लगता है इन्फ्लुएंजा।"

"भयानक," मिस हॉबे ने फुसफुसाकर कहा, और ट्रे उसके हाथों से छूटने-छूटने को थी। "तुरन्त वापस बिस्तर पर जाओ... *तुरन्त* जाओ।

"मुझे पहले बिल से बात करनी होगी," मिराण्डा ने उससे कहा, मिस हॉबे हड़बड़ी में थी और वापस नहीं आयी। बिल ने तेज आवाज में उसे हिदायत दी और डॉक्टर, नर्स, एम्बुलेंस, अस्पताल, हर हफ्ते उसकी सही तरीके से जाँच, हर चीज का भरोसा दिलाया, लेकिन उसे बिस्तर पर वापस जाना था और वहीं पड़े रहना था। वह बिस्तर पर गिर गयी, यह सोचकर कि बिल एकमात्र व्यक्ति है जिससे वह आज तक मिली, जो वास्तव में उत्तेजना और बेचैनी से अपने बाल नोच रहा था... मेरे खयाल से मुझे घर पहुँचाने के लिए कहना चाहिए, उसने सोचा, अगर तुम कर पाओ तो परिवार पर अपनी मौत की जिम्मेदारी थोपना

एक वाजिब और पुराना रिवाज है। नहीं, मैं यहीं रहूँगी, यह मेरा मामला है, लेकिन मुझे लगता है कि इस कमरे में नहीं. .. काश मैं बर्फीले ठण्डे पहाड़ों में होती, वहीं मुझे सबसे अच्छा लगता; और उसके चारों ओर हमेशा बर्फ से ढकी पथरीली चट्टानी पर्वतमालाएँ, उनके आसपास शानदार नीले बादलों का अहसास करके उसे लगा जैसे तेज ठण्डी साँस से उसकी हाड़ काँपने लगी है। ओह, नहीं, मुझे गर्माहट चाहिए-- और उसकी याददाश्त मुड़कर एक दूसरी जगह घूमने लगी जिसे वह पहले जानती थी और बेहद पसन्द करती थी, कि अब वह केवल ताड़ और देवदार की भीनी-भीनी सुगन्ध, घनी छाया और बिना चमक के गर्म आकाश को महसूस कर रही थी, जबकि यहाँ का अटपटा आकाश उसे गर्माहट दिये बिना चकाचौंध कर रहा था; अलसाए बाँज वृक्ष की छाया में भूरी काई की लम्बी झालरें धीमी गति से लहरा रही थी, सर के ऊपर खुले आकाश में बाज मँडरा रहे थे, नदी के किनारे पानी की जड़ी-बूटियों से आती गन्ध, और एक विस्तृत शान्त नदी की निर्मल धारा जिसमें वे सभी नदियाँ बहती थीं, जिनको वह जानती थी। दीवारें बिना किसी शोर-शराबे के चारों तरफ दूर खिसका दी गयीं, और वहाँ पानी के एक ऊँचे जहाज का लंगर डाल दिया गया, जिसका पानी में सड़कर काला हो गया तख्ता उसके बिस्तर के पाये से सटा हुआ था। जहाज के पीछे जंगल था, और जो कुछ उसकी आँखों के सामने प्रकट हुआ, उससे लगा कि

उसने जंगलों के बारे में जो कुछ पढ़ा या बताया या महसूस किया या सोचा था, वह सब कुछ मौजूद था; एक भयानक ऐंठन और मृत्यु का गुप्त स्थान, चित्तीदार नागों के झुण्ड का रेंगना, बुरी नजर वाले इन्द्रधनुषी पक्षी, आदमी जैसे चतुर चेहरों वाले तेन्दुए और झब्बेदार अयाल वाले शेर; गन्धक के रंग की रोशनी से जगमगाती, मौत का मवाद टपकाती चौड़ी मांसल पत्तियों के बीच छलांग लगाते हुए खों-खों करते लम्बी भुजाओं वाले बन्दर और रेंगते हुए कीचड़ में पड़े अनजान पेड़ों की सड़ान्ध। बिना आश्चर्य किये, अपने तकिये पर सर टिकाये देखते हुए, उसने खुद को जहाज के तख्ते से तिरछी डेक की ओर भागते हुए देखा, और वहाँ खड़ी होकर, किनारे की बाड़ के सहारे झुक गयी और बिस्तर पर पड़े-पड़े खुद की ओर खुशी से हाथ हिलाया, और लम्बा सँकरा जहाज अपने पंख फैलाकर दूर जंगल की ओर चला गया। गगनभेदी रुलाई और कर्कश चीख की आवाजों से हवा काँप रही थी, सभी लोग प्रचण्ड तूफानी बादल की तरह उसके ऊपर लुढ़कते और टकराते हुए एक साथ रो रहे थे, और शब्द केवल दो शब्द बन गये और उसके सिर के इर्दगिर्द उठते और गिरते हुए शोर मचा रहे थे। खतरा, खतरा, खतरा, आवाजें आयीं, और युद्ध, युद्ध, युद्ध। उसका दरवाजा आधा खुला हुआ था, एडम दरवाजे की मूठ पर अपने हाथ धरे खड़ा था, और मिस हॉबे भय से विकृत चेहरा लिए

कलप-कलप कर रो रही थी, "मैं कहती हूँ कि उन्हें *अब* इसे ले जाने के लिए आना चाहिए, नहीं तो मैं इसे फुटपाथ पर छोड़ आऊँगी... मैं तुमको बताती हूँ, यह प्लेग है, प्लेग, मेरे भगवान, और मेरे जानने वाले तमाम लोग इस बात पर बवाल मचाएँगे!"

एडम ने कहा, "मैं जानता हूँ। वे कल सुबह इसको लेने आएँगे।"

"कल सुबह, अरे भगवान, बेहतर होगा कि वे अभी आएँ!"

एडम ने कहा, "कोई एम्बुलेंस नहीं मिल रही है, और अस्पताल में बेड खाली नहीं है। और हमें कोई डॉक्टर या नर्स भी नहीं मिल रहे हैं। वे सब व्यस्त हैं। इसी वजह से ये यहाँ है। तुम कमरे से बाहर रहो, और मैं उसकी देखभाल करूँगा।"

"अच्छा, तो तुम उसकी देखभाल करोगे, मैं भी देखती हूँ," मिस हॉबे ने खीझ पैदा करने वाले अन्दाज में कहा।

"हाँ, मैंने यही कहा," एडम ने रूखेपन से जवाब दिया, "और तुम बाहर जाओ।"

उसने सावधानी से दरवाजा बन्द किया। वह कई तरह के बेढंगे पैकेट लिए हुए था, और उसका चेहरा बेहद सपाट था।

"तुम सुन रही हो?" उसने झुक कर और बहुत शान्ति से पूछा।

"ज्यादातर बातें," मिराण्डा ने कहा, "उम्मीद अच्छी है, है ना?"

"मुझे तुम्हारी दवा मिल गयी है," एडम ने कहा, "और तुमको इसी समय यह दवा शुरू करनी है। वह तुम्हें घर से बाहर नहीं निकाल सकती।"

"तो वास्तव में हालात इतने बुरे हैं," मिराण्डा ने कहा।

एडम ने कहा, "यह इतना बुरा है कि कुछ भी हो सकता है," सभी थिएटर और लगभग सभी दुकानें और रेस्तराँ बन्द हैं, और पूरे दिन अन्तिम संस्कार से और पूरी रात एम्बुलेंस से सड़कें भरी हुई हैं--"

"लेकिन मेरे लिए एक भी खाली नहीं," मिराण्डा ने प्रफुल्लित और हल्का महसूस करते हुए कहा। वह उठ बैठी और अपने तकिये को पीटकर उसे सही किया और अपना गाउन उठाने के लिए गयी। "मुझे खुशी है कि तुम यहाँ हो, मुझे बहुत बुरा सपना आ रहा था। मुझे एक सिगरेट दे दो, दोगे, और एक अपने लिए भी जलाओ और सभी खिड़कियाँ खोलकर वहीं जाकर बैठो। तुम जोखिम उठा रहे हो," मिराण्डा ने उससे कहा, "क्या तुम यह नहीं जानते? तुम यह क्यों कर रहे हो?"

"कोई बात नहीं," एडम ने कहा, "तुम दवा लो," और

उसे चेरी के रंग की दो बड़ी गोलियाँ दीं। उसने उनको तुरन्त निगल लिया और तुरन्त उल्टी कर दी। "माफ करना," उसने हँसना शुरू करते हुए कहा, "मुझे अफसोस है।" एडम ने बिना कुछ कहे और बहुत लगाव के साथ एक गीले तौलिये से उसका चेहरा पोंछा, उसे एक पैकेट से निकालकर बर्फ के कुछ टुकड़े दिये, और सख्ती से उसे दो और गोलियाँ दीं। "वही काम जो घरवाले हमेशा किया करते थे," मिराण्डा ने उसे समझाया, "और उससे फायदा होता था।" शर्मिंदगी के मारे मिराण्डा ने अपने चेहरे पर हाथ रख लिया और उसके होठों पर दुबारा दर्दनाक हँसी आ गयी।

"अभी दो तरह की और भी हैं," एडम ने उसके चेहरे से हाथ हटाते और ठुड्डी को उठाते हुए कहा। "तुमने तो अभी शुरू ही किया है। और मेरे पास दूसरी चीजें भी हैं, जैसे सन्तरे का रस और आइसक्रीम-- उन्होंने मुझे तुमको आइसक्रीम खिलाने के लिए कहा है-- और एक थर्मस में कॉफी, और एक थर्मामीटर। तुम्हे पूरी तरह से मदद करनी होगी ताकि यह सब आसानी से ले सको।"

"इसी समय कल रात हमलोग नाच रहे थे," मिराण्डा ने कहा, और एक चम्मच से उसने कुछ पिया। उसकी आँखें कमरे के चारों ओर एडम की ओर लगी थीं, जबकि वह खोया-खोया सा उसके लिए कुछ काम कर रहा था, जैसे वह वहाँ अकेला हो; वह बार-बार वापस आता, और अपना

हाथ उसके सिर के नीचे टिकाकर कोई प्याला या गिलास उसके मुँह से लगाता, और वह पी जाती, और जो कुछ हो रहा था उसके बारे में बिना कुछ सोचे, अपनी नजरों से फिर उसका पीछा करने लगती।

"एडम," उसने कहा, "अभी-अभी मेरे दिमाग में एक बात आयी। शायद वे लोग सेण्ट ल्यूक अस्पताल को भूल गये। वहाँ की सिस्टर को फोन करो और उनसे कहो कि वे अपने मामूली पुराने कमरों को लेकर इतने स्वार्थी न बनें। उन्हें बताओ कि मैं सिर्फ तीन दिनों या उससे कम समय के लिए एक बहुत छोटा अँधेरा बदसूरत कमरा चाहती हूँ। कोशिश कर के देख लो, एडम।"

जाहिरा तौर पर, उसे भरोसा था कि अभी भी वह कमोबेश होशो-हवास में थी, क्योंकि वह उसे टेलीफोन पर सोचे-समझे अन्दाज में अस्पताल वालों से बात करते सुन रही थी। वह लगभग तुरन्त ही वापस आया और बोला, "लगता है कि मेरा आज का दिन चिड़चिड़ी बूढ़ी औरतों से ही निपटने का दिन है। सिस्टर ने कहा कि अगर उनके पास कोई कमरा हो भी तो आप बिना डॉक्टर के आदेश के नहीं ले सकते। लेकिन बहरहाल उनके पास कोई कमरा नहीं था। वह इस बात पर बहुत चिड़चिड़ा रही थी।"

"ठीक है," मिराण्डा ने भारी आवाज में कहा, "मुझे लगता है कि ये बहुत ही असभ्य और मतलबी लोग हैं, है

ना?" वह दोनों बाहों को फैलाकर बैठ गयी, और दुबारा तेजी से उल्टी करने लगी।

"उसे ले आओ, पहले की तरह," उसने चिलमची लाने के लिए एडम को बुलाया। उसने उसका सिर थाम लिया, उसका चेहरा और हाथ बर्फ के पानी से धोया, उसका सिर तकिये पर सीधा रखा, और खिड़की के पास जाकर बाहर झाँकने लगा। "ठीक है," उसने आखिर में दुबारा उसके पास बैठते हुए कहा, "उनके पास कोई कमरा नहीं है। उनके पास बेड नहीं है। जिस तरह से वह बात कर रही थी, उनके पास बच्चों का पालना भी नहीं है। इसलिए मुझे लगता है कि यह बहुत साफ है, और हम इस बात को रफा-दफा कर सकते हैं।"

"एम्बुलेंस नहीं आ रही?"

"कल, शायद।"

एडम ने अपना अंगरखा उतार दिया और उसे एक कुर्सी के पीछे लटका दिया। अँगीठी के सामने घुटने टेकते हुए, उसने सावधानी से अमरीकी मूलनिवासियों की टेपी के आकार में सुलगानेवाली छोटी लकड़ियों को सजाना शुरू किया, जिसके बीच में एक छोटा-सा कागज रखा था, जिस पर लकडियाँ टिक सकती थीं। उसने इसे जलाया और उस पर लकड़ी के छोटे-बड़े टुकड़े रख दिये। जब वे अच्छी तरह से जलने लगे तो उसने एक ही साथ और भी भारी लकड़ी

और कुछ कोयले रख दिये, जब तक कि अच्छी आग तैयार नहीं हो गयी, ऐसी आग जिसे दुबारा जलाने की जरूरत न हो। वह उठा और अपने दोनों हाथों को आपस में रगड़ कर साफ कर लिया, आग की लपट ने उसे पीछे से रोशन कर दिया और उसके बाल चमक उठे।

"एडम," मिराण्डा ने कहा, "मुझे लगता है कि तुम बहुत सुन्दर हो।" इस पर वह हँस पड़ा और उस की ओर देखते हुए सिर हिलाया। "क्या गजब का कथन है," उसने कहा, "मेरे बारे में।" "यह मेरे साथ पहली बार हुआ," मिराण्डा ने आग की गर्मी पाने के लिए अपनी कोहनी के बल उचकते हुए कहा। "यह बढ़िया काम है, ये आग जलाना।"

वह फिर से बिस्तर पर बैठ गया और एक कुर्सी खींचकर उस पर अपने पैरों को रख दिया। उस रात उसके आने के बाद पहली बार दोनों एक-दूसरे को देखकर मुस्कुराए। "अब तुमको कैसा महसूस हो रहा है?" उसने पूछा।

"बेहतर, काफी बेहतर," मिराण्डा ने उससे कहा। "चलें बातें करते हैं। आओ, एक-दूसरे को बताएँ कि हमें क्या करना है।"

"पहले तुम मुझे बताओ," एडम ने कहा। "मैं तुम्हारे बारे में जानना चाहता हूँ।"

उसने कहा, "तुम पर यही छाप पड़ेगी कि मेरा जीवन बहुत तकलीफदेह था," और शायद था भी, लेकिन मुझे अब

उस जीवन को हासिल करने पर बहुत खुशी होगी। अगर मैं इसे वापस पा सकी तो मेरे लिए लगभग हर हाल में खुश रहना आसान होगा। यह सच नहीं है, लेकिन फिलहाल मैं ऐसा ही महसूस कर रही हूँ।" थोड़ा रुकने के बाद उसने कहा, "कहने के लिए कुछ भी नहीं है, आखिरकार, अगर यह अन्त है, तो इस समय मैं कुछ ऐसा करने के लिए तैयार हो रही हूँ जो आगे होने वाला है, जब समय आये। तो अब इससे ज्यादा कुछ है नहीं।"

"लेकिन यह अब से पहले पर्याप्त रहा होगा, है ना?" उसने गम्भीरता से पूछा जैसे कि यह जानना बहुत अहम हो।

"अगर यही सब है तो नहीं," उसने हठपूर्वक दोहराया।

"क्या तुम कभी खुश नहीं रही?" एडम ने पूछा, और वह उसकी बातों से बिलकुल ही डर गया था; वह इससे शर्मिंदा था क्योंकि वह प्रेम से सम्बन्धित था, लगता था कि उसने इससे पहले कभी ऐसा नहीं कहा था, और इसकी ध्वनि या अर्थ के बारे में वह असमंजस में था।

"मुझे नहीं पता," उसने कहा, "मैं बस जिन्दा रही और इसके बारे में कभी सोचा नहीं। हालाँकि, मुझे वे चीजें याद हैं जो मुझे पसन्द थीं, और जिन चीजों की मुझे उम्मीद थी।"

"मैं एक इलेक्ट्रिकल इंजीनियर बनने वाला था," एडम ने कहा। वह थोड़ी देर रुक गया। "और जब मैं वापस

आऊँगा तो यह काम पूरा करूँगा," उसने एक पल रुकने के बाद जोड़ा।

"क्या तुमको जिन्दा रहना पसन्द नहीं है?" मिराण्डा ने पूछा। "क्या तुमको दिन के अलग-अलग समय का मौसम और उसके रंग पसन्द नहीं हैं, और सभी आवाजें और शोर जैसे बच्चे झुण्ड में चिल्लाते हैं, और मोटर गाड़ियों के हॉर्न और गली में बजने वाले छोटे बैण्ड और खाना पकाने की गन्ध?"

"मुझे तैराकी भी पसन्द है," एडम ने कहा।

"मुझे भी," मिराण्डा ने कहा; "हमने कभी एक साथ तैराकी नहीं की।"

"क्या तुमको कोई प्रार्थना याद है?" उसने अचानक उससे पूछा। "क्या तुमने कभी सण्डे स्कूल में कुछ सीखा?"

"ज्यादा नहीं," एडम ने बिना किसी पश्चाताप के कबूल किया। "हाँ, प्रभु की प्रार्थना।"

"हाँ, और मैरी की जय हो," मिराण्डा ने कहा, "और वास्तव में उपयोगी शुरुआत, मैं सर्वशक्तिमान ईश्वर को और हमेशा कुँवारी और पवित्र मैरी को और देवदूत पतरस और पॉल को आशीर्वाद देने के लिए कबूल करती हूँ--"

"कैथोलिक," एडम ने टिप्पणी की।

"प्रार्थना तो एक ही है, तुम महान मेथोडिस्ट। मैं शर्त

लगा सकती हूँ कि तुम एक मेथोडिस्ट *हो*।"

"नहीं, प्रेस्बिटेरियन।"

"ठीक है, तुमको दूसरों की कुछ याद है?"

"अब मैं सोने जा रहा हूँ--" एडम ने कहा।

"हाँ, एक और, और धन्य यीशु नम्र और सौम्य-- तुम देखो कि मैंने धार्मिक शिक्षा में भी लापरवाही नहीं की थी। मुझे हे अपोलो से शुरू होने वाली प्रार्थना भी याद है। सुनना चाहते हो?"

"नहीं," एडम ने कहा, "तुम मजाक कर रही हो।"

"मैं मजाक नहीं कर रही हूँ," मिराण्डा ने कहा, "मैं सोने से बचने की कोशिश कर रही हूँ। मुझे सोने जाने से डर लगता है कि क्या पता, मैं जाग ही न पाऊँ। मुझे सोने मत दो, एडम। क्या तुम मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना को जानते हो? जिस पलंग पर मैं लेटी हूँ उसे आशीर्वाद दें?"

"अगर मुझे जागने से पहले मर जाना है, तो मैं भगवान से अपनी आत्मा को ले जाने की प्रार्थना करूँ। क्या यही मतलब है?" एडम ने पूछा। "यह किसी भी तरह से सही नहीं लगता है।"

"मेहरबानी करके मेरे लिए एक सिगरेट जला दो, और आगे जाकर खिड़की के पास बैठो। हम ताजी हवा के बारे में भूलते रहते हैं। तुम्हें इसका सेवन करना चाहिए।" एडम

ने सिगरेट जलाई और उसके होठों से लगा दी। मिराण्डा ने उसे अपनी उँगलियों के बीच लिया और अपने तकिये के किनारे से नीचे गिरा दिया। एडम ने उसे खोजा और पानी के गिलास के नीचे तश्तरी में बुझा दिया। मिराण्डा का सिर एक पल के लिए अँधेरे में तैर गया, धुँधलका साफ हुआ तो उसने चादर फेंक दी और घबराकर बैठ गयी, और पसीने से तरबतर हो गयी। एडम चिन्तित होकर अपनी जगह से उछला, और तुरन्त ही गर्म कॉफी का कप उसके मुँह से लगाकर पकड़े रहा।

"तुम भी थोड़ी सी ले लो," उसने कहा, फिर से शान्त हो गयी, और बिस्तर के किनारे पर दोनों एक साथ बैठकर चुपचाप कॉफी पीते रहे।

एडम ने कहा, "तुम्हें फिर से लेटना चाहिए। अब तुम जाग गयी हो।"

"चलो गाते हैं," मिराण्डा ने कहा। "मैं एक पुराना आध्यात्मिक गीत जानती हूँ, मुझे कुछ लाइन याद हैं।" वह सहज आवाज में बोली। "मैं अब ठीक हूँ।" उसने बेसुरी फुसफुसाहट में गाना शुरू किया, "'मरियल घोड़ा, दुर्बल सवार, मेरे प्रेमी को दूर ले गया...' क्या तुम इस गीत को जानते हो?"

"हाँ," एडम ने कहा, "मैंने टेक्सास में काले लोगों को एक तेल क्षेत्र में गाते हुए सुना था।"

"मैंने उन्हें कपास के खेत में गाते सुना था," उसने कहा; "यह एक अच्छा गाना है।"

उन्होंने इस लाइन को एक साथ गाया। "लेकिन इसके आगे की लाइन मुझे याद नहीं है," एडम ने कहा।

"मरियल घोड़ा, दुर्बल सवार," मिराण्डा ने कहा, "(हमें सचमुच एक अच्छे बैंजो की जरूरत है) 'मेरे प्रेमी को दूर ले गया--'" मिराण्डा की आवाज साफ हो गयी और उसने कहा, "लेकिन हमें इसे आगे बढ़ाना होगा। अगली लाइन क्या है?"

"इसमें तो और भी बहुत कुछ है," एडम ने कहा, "चालीस छन्दों के लगभग, सवार ने ममी, पापा, भाई, बहन, प्रेमी के साथ-साथ पूरे परिवार को छीन लिया--"

"लेकिन गायक को नहीं, अभी तक नहीं," मिराण्डा ने कहा। "मृत्यु हमेशा एक गायक को विलाप करने के लिए छोड़ देती है। 'मौत,' उसने गाया, "'ओह, एक गायक को विलाप करने के लिए छोड़ दो--'"

"'मरियल घोड़ा, दुर्बल सवार,'" एडम गाते हुए सुर मिला रहा था, "'मेरे प्रेमी को दूर ले गया!' (मुझे लगता है कि हम अच्छा गा रहे हैं, मेरे खयाल से हमें एक एकांकी तैयार करना चाहिए--)"

"हट सर्विस में चलें," मिराण्डा ने कहा, "वहाँ पर बेचारे

रक्षाहीन नायकों का मनोरंजन करें।"

"हम बैंजो बजाएँगे," एडम ने कहा; "मैं हमेशा बैंजो बजाना चाहता था।"

मिराण्डा ने आह भरी, और तकिये पर लेट गयी और सोचा, मुझे हार मान लेनी चाहिए, मैं अब और नहीं सह सकती। सिर्फ वही पीड़ा थी, सिर्फ वह कमरा, और सिर्फ एडम। अब न तो जीने के कई धरातल थे, न ही स्मृति और आशा के प्रबल तन्तु थे जो उन दोनों के बीच सीधा तने हुए उसे पीछे और आगे की ओर खींचते थे। केवल यही एक क्षण था और यह समय का एक सपना था, और एडम का चेहरा, उसके बहुत करीब, आँखें स्थिर और उत्सुक, एक छाया थी, और अब कुछ खास नहीं होना था....

"एडम," उसने गहरे नरम अँधेरे से आती आवाज में जो उसे नीचे की ओर खींच लिया था, बोली, "मैं तुमसे प्यार करती हूँ, और मैं उम्मीद करती थी कि तुम भी मुझसे यही कहोगे।"

वह उसके कन्धे के नीचे अपनी बाँह लगाकर उसके पास लेट गयी, और अपना मुलायम चेहरा उसके चेहरे पर दबाया, एडम का मुँह उसके मुँह की ओर बढ़ गया और रुक गया। "क्या तुम सुन रहे हो कि मैं क्या कह रही हूँ?... तुमको क्या लगता है कि मैं इस समय तुम्हें क्या बताने की कोशिश कर रही हूँ?"

वह उसकी ओर मुड़ी, धुँधलका छँट गया और उसने एक पल के लिए उसका चेहरा देखा। उसने उसके चारों ओर चादर ओढ़ाया और उसे पकड़ लिया, और कहा, "सो जाओ, डार्लिंग, अगर तुम अब एक घण्टे के लिए सो जाओगी तो मैं तुम्हें जगाऊँगा और तुम्हारे लिए गर्म कॉफी ले आऊँगा और कल हम किसी को मदद के लिए तलाश करेंगे। आई लव यू, सो जाओ--"

लगभग बिना किसी इशारे के, वह अँधेरे में तैरती रही, नींद में उसका हाथ पकड़कर, जो नींद नहीं थी, बल्कि एक छोटे हरे जंगल में शाम की साफ रोशनी थी, एक क्रोधित खतरनाक जंगल, जो निर्मम रहस्यमय आवाजों से भरी थी, जो तीरों की सनसनाहट जैसी तेजी से गाती थी और उसने देखा कि एडम इन गानेवाले तीरों के एक हमले से लहूलुहान हो गया था जो उसके दिल में लगा था और पत्तों से होकर अपना रास्ता काटते हुए तेजी से गुजर गया था। एडम उसकी आँखों के सामने सीधे पीठ के बल गिर पड़ा, और फिर से अनाहत और जीवित हो उठा; अदृश्य धनुष से छूटे हुए तीरों के एक और हमले ने उसे फिर से मारा और वह गिर गया, और फिर भी वह उसके सामने अछूता था-- एक शाश्वत मृत्यु और पुनरुत्थान के साथ। मिराण्डा ने खुद को उसके सामने फेंक दिया, गुस्से में और स्वार्थवश उसने उसके और तीरों की बौछार के बीच रोते हुए कहा, नहीं, नहीं, एक

बच्चे की तरह जिसके साथ खेल में धोखा किया गया हो। अब मेरी बारी है, हमेशा तुम ही क्यों मरोगे? और बाणों ने उसके दिल और शरीर में सफाई से मारा, और वह मरा पड़ा रहा, और वह जीवित रही, और जंगल सीटी बजाता, और ऊँचे स्वर से चिल्लाता, हर एक डाली, और पत्तियों, और घास की पत्तियों की अपनी ही भयानक इलजाम लगानेवाली आवाजें थीं। वह दौड़ी, और एडम ने दौड़कर उसे कमरे के बीच में पकड़ लिया, और कहा, "प्रिय, मुझे भी नींद आ गयी होगी। क्या हुआ, तुम कितनी बुरी तरह चिल्लायी?"

जब उसने उसे फिर से स्थिर होने में मदद की, तो वह अपने घुटनों को अपनी ठुड्डी के नीचे खींचकर बैठ गयी, अपना सिर बाहों पर टिका लिया और ध्यान से सही शब्दों की तलाश करने लगी क्योंकि साफ तौर से समझाना जरूरी था। "यह एक बहुत ही अजीब तरह का सपना था, मुझे नहीं पता कि इसने मुझे क्यों इतनी बुरी तरह डरा दिया। पुराने जमाने के वैलेण्टाइन के बारे में कुछ था। एक पेड़ के ऊपर दो दिलों की नक्काशी की गयी थी, जो एक ही तीर से बिंधे हुए थे-- तुम जानते हो, एडम--" "हाँ, मुझे पता है, मेरी जान," उसने बहुत ही सौम्य तरीके से कहा, और उसके गाल और माथे पर इस तरह चूमता रहा जैसे वह इसका आदी हो, और वह कई सालों से इतने करीने से उसे चूमता आ रहा हो, जैसे कागज की कलाकृति बनाना।"

"हाँ, और फिर भी वे जीवित थे, और वे हम ही थे, तुम समझ रहे हो-- वह बिल्कुल वैसा नहीं लग रहा था जैसा था, बल्कि वह कुछ ऐसा ही था। यह एक जंगल में था--"

एडम ने कहा, "हाँ," और उसने उठकर अपना अंगरखा पहना और थर्मस की बोतल उठायी। "मैं उस छोटे से स्टैण्ड पर वापस जा रहा हूँ और कुछ आइसक्रीम और गर्म कॉफी लाता हूँ," उसने उससे कहा, "और मैं पाँच मिनट में वापस आ जाऊँगा, और तुम शान्त रहो। पाँच मिनट के लिए अलविदा," एडम ने उसकी ठुड्डी को अपने हाथ की हथेली में पकड़कर और उससे नजर मिलाने की कोशिश करते हुए कहा, "अब तुम बिलकुल शान्त रहो।"

"अलविदा," मिराण्डा ने कहा। "मैं फिर से जाग रही हूँ।" लेकिन वह जगी नहीं थी, और काउण्टी अस्पताल के दो फुर्तीले युवा प्रशिक्षु, जो ब्लू माउण्टेन न्यूज के झगड़ालू शहर सम्पादक के गुस्सैल आग्रह के बाद, उसे पुलिस एम्बुलेंस में ले जाने के लिए आये थे, उन्होंने फैसला किया कि बेहतर है कि नीचे जाकर स्ट्रेचर ले आया जाये। उनकी आवाज ने उसे जगाया, वह उठ बैठी, बिस्तर से तुरन्त उठी और उनको तेज निगाहों से घूरती हुई खड़ी हो गयी। "क्यों, आप ठीक तो हो," दोनों युवकों में से जो काला और तगड़ा था उसने कहा, दोनों अपने सफेद कपड़ों में बेहद चुस्त-दुरुस्त और समर्थ लग रहे थे, दोनों के बटनहोल में एक फूल लगा

हुआ था। "मैं अभी आपको ले जाऊँगा।" उसने एक सफेद कम्बल खोलकर उसके चारों ओर लपेट दिया। मिराण्डा ने सिलवटों को सही किया और डॉक्टर का हाथ पकड़कर पूछा, "लेकिन एडम कहाँ है?" उसने उसके भीगे हुए माथे पर हाथ रखा, सिर हिलाया, और उसे कुशल निगाहों से देखा। "एडम?"

"हाँ," मिराण्डा ने अपनी आवाज कम करते हुए विश्वास के साथ कहा, "वह यहीं था और अब वह चला गया है।"

"ओह, वह वापस आ जाएगा," प्रशिक्षु ने सहज ढंग से कहा, "वह सिगरेट लेने के लिए ब्लॉक के चक्कर लगा रहा होगा। एडम की चिन्ता मत करो। वह आपकी परेशानी नहीं है।"

"वह कैसे जानेगा कि मुझे कहाँ ढूँढना है?" उसने बात काटते हुए पूछा।

"हम उसके लिए एक पर्ची लिखकर छोड़ देंगे," प्रशिक्षु ने कहा। "अब आओ, समय हो गया है, हम यहाँ से निकल चलें।"

उसने उठाकर उसे अपने कन्धे पर रख लिया। "मुझे बहुत बुरा लग रहा है," मिराण्डा ने उससे कहा; "पता नहीं क्यों।"

"मैं शर्त लगाता हूँ कि मैं जो बता रहा हूँ वैसा ही आप

करेंगी," उसने सावधानी से बाहर निकलते हुए कहा, दूसरा डॉक्टर उनके आगे-आगे चल रहा था, और सीढ़ियों के पहले पायदान को टटोल रहा था। "अपनी बाहों को मेरी गर्दन के चारों ओर लपेट लो," उसने उसे निर्देश दिया। "इससे आपको कोई नुकसान नहीं होगा और इससे मुझे बहुत मदद मिलेगी।"

"आपका नाम क्या है?" मिराण्डा ने पूछा, जब दूसरे डॉक्टर ने सामने का दरवाजा खोला और वे ठण्डी सुहावनी हवा में बाहर निकल गये।

"हिल्डेशाइम," उसने किसी बच्चे को हँसाने वाले अन्दाज में कहा।

"ठीक है, डॉ हिल्डेशाइम, कहीं हम कोई गड़बड़ तो नहीं कर रहे हैं?"

"बिलकुल कर रहे हैं," डॉ हिल्डेशाइम ने कहा।

* * *

दूसरा युवा प्रशिक्षु, अपने सफेद कोट में काफी तरो-ताजा और बना-ठना था, हालाँकि उसका फूल किनारे से मुरझा रहा था, स्टेथोस्कोप से उसकी साँस को सुनने के लिए झुका हुआ था, और साथ में हलकी सीटी बजाते हुए "देयर इज ए लॉन्ग, लॉन्ग ट्रेल" की धुन गुनगुना रहा था। समय-समय पर उसने सीटी बजाते हुए दो उँगलियों से उसकी पसलियों

को तेजी से थपथपा रहा था। मिराण्डा ने उसे कुछ क्षणों तक देखा जब तक उसने अपनी चमकदार व्यस्त भूरी आँखें उसकी आँखों से चार इंच दूर नहीं सटा दिया। "मैं बेहोश नहीं हूँ," उसने समझाया, "मुझे पता है कि मैं क्या कहना चाहती हूँ।" फिर अपने संत्रास के कारण उसने खुद को बकवास करते हुए सुना, यह जानते हुए कि यह बकवास है, हालाँकि वह सुन नहीं पा रही थी कि वह क्या कह रही है। उसके करीब जो आँख थी उसकी छानबीन वाली झिलमिलाहट गायब हो गयी, दूसरा प्रशिक्षु धीरे से फुसफुस करते हुए उसकी पसली को थपथपाता और उसकी साँसों को सुनता रहा।

"काश आप सीटी बजाना बन्द कर देते," मिराण्डा ने स्पष्ट रूप से कहा। आवाज रुक गयी। "यह एक पाशविक धुन है," उसने कहा। मनुष्य के जीवन पर अपनी छोटी पकड़ कायम रखने के लिए कुछ भी, कुछ भी, सम्पर्क की एक स्पष्ट रेखा, चाहे कुछ भी हो, उसके और पीछे छूटती जा रही दुनिया के बीच। "कृपया मुझे डॉ. हिल्डेशाइम से मिलवा दें," मिराण्डा ने कहा, "मुझे उनसे कुछ महत्वपूर्ण बात कहनी है। मुझे इसे अभी कहना होगा।" दूसरा प्रशिक्षु गायब हो गया। वह चलकर नहीं गया, बल्कि बिना आवाज किये हवा से बात करते हुए गया, और उसकी जगह डॉ हिल्डेशाइम का चेहरा दिखायी दिया।

"डॉ. हिल्डेशाइम, मैं आपसे एडम के बारे में जानना चाहती हूँ।"

"वह नौजवान? वह यहाँ आया था, और आपके लिए एक नोट छोड़ा, और फिर चला गया," डॉ हिल्डेशाइम ने कहा, "और वह कल और परसों वापस आएगा।" उनका लहजा पूरी तरह से हँसमुख और चंचल था।

"मुझे आप पर विश्वास नहीं है," मिराण्डा ने कड़वाहट से कहा, अपने होंठ और आँखें बन्द कर लीं और रुलाई रोकने की कोशिश की।

"मिस टान्नर," डॉक्टर ने पुकारा, "क्या आपके पास वह नोट है?"

मिस टान्नर उसकी बगल में दिखायी दीं, उसे एक खुला लिफाफा दिया, फिर उसे वापस लेकर उसमें से नोट निकाला और उसे दे दिया।

"मैं इसे नहीं देख सकती," मिराण्डा ने काली स्याही में जल्दबाजी में घसीटे गये पूरे पन्ने पर एक दर्दभरी नजर दौड़ाने के बाद कहा।

"लाओ, मैं इसे पढ़ देती हूँ," मिस टान्नर ने कहा। "लिखा है, 'जब मैं दूर था तब वे आये और तुम्हें ले गये और अब वे मुझे तुमसे मिलने नहीं देंगे। हो सकता है कि कल वे मिलने दें, प्यार सहित, तुम्हारा एडम,'" मिस टान्नर ने शब्दों

का स्पष्ट उच्चारण करते हुए दृढ़ और रूखी आवाज में पढ़ा, "अब, आप को पता चला?" उसने आराम से पूछा।

मिराण्डा एक-एक करके इन शब्दों को सुनी और उन्हें एक-एक करके भूल गयी। "ओह, इसे फिर से पढ़ें, इसमें क्या लिखा है?" उसने उस मौन से बाहर निकलते हुए कहा जो उसे दबाये हुए था, जब वह नाचते हुए शब्दों की ओर पहुँचने की कोशिश कर रही थी और जैसे ही वह उनको लगभग छूने को थी, तभी वे वहाँ से बच निकले। "इतना काफी है," डॉ हिल्डेशाइम ने आदेशात्मक लहजे में आराम से कहा। "वह बिस्तर कहाँ है?"

"अभी तक कोई बिस्तर नहीं है," मिस टान्नर ने कहा, मानो उसने कहा हो कि हमारे पास सन्तरे की कमी है। डॉ. हिल्डेशाइम ने कहा, "ठीक है, हम कुछ इन्तजाम कर लेंगे," और मिस टान्नर चमकीली धातु की चटाई से सहारे और छोटे रबर के पहियों वाले ढाँचे को गलियारे के एक गहरे हिस्से में खींचकर ले गयी। वह जगह चमकीली सफेद दीवारों के रास्ते से हट कर था जहाँ परछइयाँ पानी के भँवर की तरह नाच रही थीं और चारों ओर के सन्नाटे से ऊपर उड़ती हुई सी लग रही थी। सफेद दीवारें नुकीली चट्टानों की तरह उभरी हुई थीं, एक दर्जन बर्फ से ढके चाँद सफेद गली के नीचे धैर्य पूर्वक एक-दूसरे का पीछा कर रहे थे और एक-एक करके बर्फीली खाई में चुपचाप गिरते जाते थे।

यह सफेदी और खामोशी क्या है, दर्द की गैरहाजिरी के सिवा? मिराण्डा अपने सफेद कम्बल की किनारी को धीरे से उँगलियों के बीच फँसाकर लेटी हुई, फ्रेम में कसे चादरों से बने एक विराट परदे के पीछे लम्बी बनावटी परछाइयों के नृत्य देख रही थी। यह वहीं था, उसके बिलकुल पास, उसकी बगल वाली दीवार की तरफ, जहाँ वह इसे साफ-साफ देख सकती थी और इसका आनन्द ले सकती थी, और यह इतना सुन्दर था कि इसका मतलब क्या है, इस बारे में उसे कोई उत्सुकता नहीं थी। दो काली आकृतियों ने सिर हिलाया, झुकीं, एक-दूसरे का अभिवादन किया, पीछे हटीं और फिर से झुकीं, लम्बी भुजाओं को उठाया और स्क्रीन की सफेद छाया के आगे बड़े हाथ फैलाये; फिर एक गोल गति के साथ, चादरें वापस समेट ली गयीं, सफेद पोशाक में खड़े दो मूक आदमी, और सफेद पोशाक में एक और मूक आदमी, एक सफेद लोहे के बिस्तर के नंगे स्प्रिंगों पर लेटा हुआ था। झरनों पर लेटे आदमी को सिर से पाँव तक सफेद कपड़े में अच्छी तरह से लपेटा गया था, चेहरे पर मुड़ी हुई पट्टियाँ, और हँसमुख खरगोश के कान की तरह एक बड़ा कठोर धनुष उसके सिर के मुकुट पर लटक रहा था।

दो जीवित आदमियों ने दीवार से सटाकर रखे हुए एक गद्दे को उठा लिया, उसे बड़े कोमल ढंग से मरे हुए आदमी के ऊपर ओढ़ा दिया। मूक और सफेद पोशाक वाले वे लोग

अपने सामने पहियेदार बिस्तर को धकेलते हुए गलियारे से नीचे गायब हो गये। यह एक दिलकश और इत्मीनान से चलने वाला तमाशा था, लेकिन अब यह खत्म हो गया था। एक धुँधला सफेद कोहरा उनके पीछे से धीरे-धीरे उठा और मिराण्डा की आँखों के आगे तैर गया, एक ऐसा कोहरा जिसमें सारा आतंक और सारी थकान छिपी हुई थी, तमाम शोषित और उत्पीड़ित जिन्दा लोगों के निचुड़े हुए चेहरे और ऐंठी हुई पीठ और टूटे हुए पैर, उनकी उलझन भरी पीड़ा और उनके टूटे हुए दिल के नाना रूप; कोहरा किसी भी क्षण छँट सकता है और मानवीय पीड़ाओं की भीड़ को खुला छोड़ सकता है। उसने हाथ जोड़कर कहा, अभी नहीं, अभी नहीं, पर बहुत देर हो चुकी थी। कोहरा छँट गया और दो जल्लाद, सफेद कपड़े पहने, अजब चतुराई और तजुर्बे से गन्दे कपड़े पहने, कुरूप आकृति वाले एक बूढ़े आदमी को अपने बीच में दबाये हुए उसकी ओर बढ़े। उसके लिए उन लोगों ने जो अन्तिम फैसला कर रखा था उसे रोकने और टालने के लिए जब वह अपनी पीठ को झुकाता था और अपने पैरों को सिकोड़ता था तो उसकी छोटी सी दाढ़ी उसके खुले मुँह के नीचे डोलने लगती थी। वह रोते और चीखते हुए उन्हें समझाने की कोशिश कर रहा था कि जिस अपराध का उस पर आरोप लगाया गया है, वह ऐसी सजा के लायक नहीं, जो उसे मिलने वाली है; और जब वे आगे बढ़े तो इस

कराहने की आवाज के अलावा पूरी तरह सन्नाटा छा गया था। बूढ़े आदमी के हाथों का गन्दा टूटा हुआ कटोरा उसके सामने एक भिखारी की प्रार्थना के तौर पर रखा था, जब उसने कहा, "भगवान के सामने मैं दोषी नहीं हूँ," लेकिन उन्होंने उसकी बाहों को पकड़ लिया और उसे घसीटते हुए लेकर चले गये।

मौत का रास्ता सभी बुराइयों से घिरा एक लम्बा प्रयाण है, और हर नये संत्रास के साथ धीरे-धीरे दिल की धड़कन रुकने लगती है, हड्डियाँ हर कदम रखने से इनकार करती हैं, दिमाग अपना तीखा प्रतिरोध दर्ज कराता है और किस अन्त की ओर? अवरोध एक-एक करके टूटते हैं, और आँखों का कोई पर्दा न तो मुसीबत के परिदृश्य को ओझल कर पाता है, न ही वहाँ किये गये अपराधों के दृश्य को। मैदान के उस पार डॉ. हिल्डेशाइम आये, उनका चेहरा उनके जर्मन हेलमेट के नीचे एक खोपड़ी जैसा था, जो एक नग्न शिशु को अपनी संगीन की नोक पर ले जा रहे थे, और पत्थर के एक विशाल बर्तन पर गोथिक अक्षरों में जहर लिखा हुआ था। वे उस कुएँ के सामने रुक गये जिसे मिराण्डा को अपने पिता के खेत में एक चरागाह की याद दिला रहा था, वह कुआँ कभी सूखा हुआ था लेकिन अब जिन्दा, पानी से लबालब था, और उसकी साफ गहराई में उसने बच्चे और जहर को फेंक दिया, और विक्षुब्ध पानी

बिना कोई आवाज किये वापस धरती में विलीन हो गया। मिराण्डा, चीत्कार करती हुई, अपने हाथों को सिर के ऊपर रखकर दौड़ी; उसकी आवाज गूँज उठी और एक भेड़िये की गुर्राहट की तरह वापस उसके पास आ गयी, हिल्डेशाइम एक नीच जर्मन है, एक जासूस, एक हूण, उसे मार डालो, तुम्हें मारे इससे पहले ही उसे मार डालो.... वह गुर्राते हुए जागी, उसने डॉ. हिल्डेशाइम पर आरोप लगाते हुए गन्दे शब्द सुने जो उसके ही मुँह से लुढ़क रहे थे; उसने अपनी आँखें खोलीं और उसे पता चला कि वह एक छोटे से सफेद कमरे में एक बिस्तर पर है और उसकी नब्ज पर दो उँगलियाँ टिकाये हुए डॉ. हिल्डेशाइम उसके पास बैठे हैं। उनके बालों को अच्छी तरह से सँवारा गया था और उनके बटनहोल का फूल ताजा था। खिड़की से तारे चमक रहे थे, और डॉ. हिल्डेशाइम निस्पृह भाव से उसे देख रहे थे, उनका स्टेथोस्कोप उनके गले में चमक रहा था। मिस टान्नर एक चार्ट पर कुछ लिख कर बिस्तर के पाये के पास खड़ी हो गयी।

"हेलो," डॉ. हिल्डेशाइम ने कहा, "कम से कम तुमने चिल्लाकर अपना भँडास निकाल दिया। तुम बिस्तर से उठकर इधर-उधर भागने की कोशिश मत करो।" मिराण्डा ने कठिन प्रयास से अपनी आँखें खुली रखीं, उसके गम्भीर, धैर्यवान चेहरे को स्पष्ट रूप से देखा, यहाँ तक कि उसका दिमाग डगमगाने लगा और फिसल गया, जड़ से टूट गया और किसी

लोहे के पहिये की तरह खाई में नाचने लगा। "मेरा मतलब यह नहीं था, मैंने कभी इस पर विश्वास नहीं किया। डॉ. हिल्डेशाइम, आपको यह बात याद नहीं रखनी चाहिए--" और उत्तर की प्रतीक्षा करने में असमर्थ होने के कारण फिर से उसका होश गुम हो गया।

उसने जो गलती की थी, उसने उसका पीछा किया और उसके सपने को चकनाचूर कर दिया-- इस गलती ने दहशत का रूप ले लिया, जिसे पहचानना या नाम देना मुमकिन नहीं था, हालाँकि उसका दिल उन्हें देखकर रो रहा था। उसका दिमाग, दो हिस्सों में बँट गया, उसने एक पल में जो देखा उसे स्वीकार और अस्वीकार कर दिया, क्योंकि शिकायती अँधेरे के रसातल के आर-पार उसके तर्कसंगत आत्म ने दूसरे के अनोखे उन्माद को रुखाई से देखा, इसके दृष्टिकोण की सच्चाई को, इसके कठोर पछतावे और निराशा को स्वीकार करने के प्रति अनिच्छुक।

"मुझे पता है कि ये आपके हाथ हैं," उसने मिस टान्नर से कहा, "मैं यह जानती हूँ, लेकिन मेरे लिए वे सफेद रोयेंदार मकड़ा हैं, मुझे मत छुओ।"

"अपनी आँखें बन्द करो," मिस टान्नर ने कहा।

"ओह, नहीं," मिराण्डा ने कहा, "फिर तो मुझे बदतरीन चीजें दिखायी देती हैं," लेकिन न चाहते हुए भी उसकी आँखें बन्द हो गयीं, और उसके चारों ओर फैली उसकी

आन्तरिक पीड़ा की आधी रात बीत गयी।

विस्मृति, मिराण्डा ने सोचा, जिन शब्दों को उसे अदृश्य, अज्ञेय चीजों का वर्णन करने के लिए सिखाया गया था उनकी स्मृतियों के बीच, उसके मन की भावना वह मटमैले पानी का एक भँवर है जो अनन्त काल के लिए खुद को नचाता रहता है. . . अनन्त काल शायद सबसे दूर के तारे से भी अधिक दूर है। वह एक गड्ढे के ऊपर एक सँकरी कगार पर लेटी थी जो उसे अथाह लग रहा था, हालाँकि वह उसकी थाह नहीं ले सकती थी; खतरे के बारे में कगार ही उसके बचपन का सपना था, और वह अपने कन्धों पर ग्रेनाइट की एक भरोसेमन्द दीवार से पीठ सटाकर खड़ी हुई, गड्ढे में झाँक रही थी और सोच रही थी कि ये वहाँ है, यह आखिरकार वहाँ है, यह बहुत सरल है; और विस्मृति और अनन्त काल जैसे सावधानी से गढ़े हुए नरम शब्द, बिलकुल कुछ भी नहीं के आगे लटके पर्दे हैं। यह न जाने कब हुआ, मैं न महसूस कर पाऊँ, न याद रख सकूँ, अब भी यह क्यों नहीं मानती कि मैं गायब हो गयी हूँ, मेरी कोई आस नहीं। देखो, उसने अपने आप से कहा, वह वहाँ है, वह मृत्यु है और डरने की कोई बात नहीं है। लेकिन वह सहमत नहीं हो सकी, अभी भी ग्रेनाइट की दीवार से सटी वह तेजी से सिकुड़ती जा रही है जो उसके बचपन से ही सुरक्षा का सपना रही है, साँस टूट जाने के डर से धीरे-धीरे साँस लेती, जान पर खेलते

हुए कहती, देखो, डरो मत, यह कुछ भी नहीं है, यह केवल अनन्त काल है।

ग्रेनाइट की दीवारें, भँवर, तारे ये सब चीजें हैं। उनमें से कोई भी मृत्यु नहीं है, न ही उसकी परछाई। मृत्यु मृत्यु है, मिराण्डा ने कहा, और मृतकों के लिए यह कोई श्रेय नहीं लेती है। खामोशी के साथ वह सहज ही अँधेरे की गहराइयों में डूब गयी जब तक कि वह जीवन अतल गहराई में एक पत्थर की तरह जम नहीं गयी, खुद को अन्धा, बहरा, अवाक, अपने ही शरीर के अंगों से अनजान, सभी मानवीय चिन्ताओं से पूरी तरह दूर, फिर भी एक विचित्र स्पष्टता और सुसंगतता के साथ जीवित; मन की सभी धारणाएँ, सन्देह की उचित पड़ताल, रक्त के सभी बन्धन और हृदय की इच्छाएँ, घुलकर उससे दूर हो गयीं, और उसके पास केवल अस्तित्व का एक सूक्ष्म, एक उग्र रूप से सुलगता कण था जो केवल खुद को जानता था, जो अपनी ताकत के लिए खुद से परे किसी चीज पर भरोसा नहीं करता था; किसी भी अपील या प्रेरणा के प्रति ग्रहणशील नहीं, अपने आप में पूरी तरह एक ही मकसद से बना अस्तित्व, जीने की जिद्दी इच्छा। इस उग्र गतिहीन कण ने विनाश का विरोध करने, जीवित बचे रहने और अपने अस्तित्व के पागलपन में बने रहने, उस एक अनिवार्य अन्त से परे, गतिहीन और योजनाहीन होने के लिए खुद को बेसहारा छोड़ दिया। मुझ

पर विश्वास करो, प्रकाश के कठोर चौकन्ने आक्रोश बिन्दु ने कहा। मुझ पर विश्वास करो। मैं बना रहता हूँ।

एक बार यह बढ़ा, चपटा हुआ, एक महीन चमक लिए पतला हुआ, एक महान पंखे की तरह फैल गया और एक इन्द्रधनुष में बदल गया, जिससे होते हुए मिराण्डा, मगन मन से, पूरी तरह से विश्वास करते हुए, समुद्र और रेत के, नरम घास का मैदान और आकाश के, नीले रंग की पारदर्शिता के साथ ताजे धुले और चमकते हुए एक गहरे साफ परिदृश्य को देख रही थी। क्यों, निश्चय ही, निश्चय ही, मिराण्डा ने बिना चकित हुए बिलकुल उमंग के साथ कहा, जैसे कि उससे किया गया कोई वादा लम्बे समय बाद पूरा हो गया हो जिसकी उम्मीद करना उसने बन्द कर दिया हो। वह अपने सँकरे कगार से उठी और समुद्र के ज्वलन्त नीलिमा और दोनों ओर घास के मैदान की मनोरम हरियाली के ऊपर अपनी शानदार मेहराब की तरह तने विराट इन्द्रधनुष के ऊँचे तोरण द्वार से होकर हौले-हौले दौड़ी।

छोटी-छोटी लहरें अनायास ही इधर-उधर लुढ़क गयीं, चुपचाप रेत के आगोश में समाकर पीछे हट गयीं; हवा के झोंके से बिना कोई आवाज किये घास लहराने लगी। झिलमिलाती हवा से होकर धीमे-धीमे गुजरते बादलों की तरह इनसानों की एक बड़ी टोली उसकी ओर बढ़ती चली आयी, और मिराण्डा ने आश्चर्य और खुशी से देखा कि वे

सभी लोग जीवित थे जिन्हें वह जानती थी। उनके चेहरे बदल गये थे, प्रत्येक की अपनी सुन्दरता जिस रूप में उसे याद थी उससे कहीं बढ़ कर थी, उनकी आँखें अच्छे मौसम की तरह साफ और शान्त थीं, और उनकी कोई परछाई नहीं बन रही थी। वे शुद्ध पहचान थे और वह बिना किसी का नाम लिए या उनके साथ अपने सम्बन्धों को याद किये भी उन्हें जानती थी। उन्होंने चुपचाप दबे पैरों से आकर उसे घेर लिया, फिर अपने चेहरों को दुबारा समुद्र की ओर मोड़ लिया, और वह लहरों के बीच एक लहर की तरह सहज ही उनके बीच चली गयी। लहरों का घेरा चौड़ा हुआ, अलग-अलग हो गया, और हर चेहरा अकेला था लेकिन एकान्त में नहीं था; मिराण्डा भी अकेली थी, कुछ पूछ नहीं रही थी, कुछ चाह नहीं रही थी, अपने परमानन्द की शान्ति में वह जहाँ थी, वहीं रुकी हुई थी, उसकी आँखें विस्तीर्ण गहरे आकाश पर टिकी थीं, जहाँ हमेशा सुबह रहती थी।

वह सिर के नीचे बाहें रखे आराम से लेटी हुई थी, समुद्र और आकाश और घास के मैदान से एक समान बहकर आनेवाली विलक्षण गर्मी जो स्पर्श के दायरे में होते हुए भी उसके आसपास के शान्त मुस्कुराते परिचित लोगों को छूती नहीं थी, तभी अचानक मिराण्डा ने आशंका के एक अस्पष्ट झटके को महसूस किया। उसकी खुशी में अविश्वास का एक झटका; एक महीन ठंढक ने इस आत्मविश्वास से भरी

शान्ति के किनारों को छुआ; कोई चीज, कोई व्यक्ति गायब था, उसने कुछ खो दिया था, उसने किसी दूसरे देश में किसी विश्वसनीय को छोड़ दिया था, ओह, यह क्या हो सकता है? यहाँ कोई पेड़ नहीं है, कोई पेड़ नहीं यहाँ, उसने डर के मारे कहा, मैंने कुछ अधूरा छोड़ दिया है। उसके दिमाग के पीछे एक विचार संघर्ष कर रहा था, जो उसके कान में एक आवाज की तरह साफ-साफ आया था। मृतक लोग कहाँ हैं? हम मरे हुए लोगों को भूल गये हैं, अरे, मृतक, वे कहाँ हैं? अचानक जैसे कोई पर्दा गिर गया था, चटकीला परिदृश्य फीका पड़ गया था, वह कड़वी ठण्ड की एक अजीब पथरीली जगह में अकेली थी, फिसलन भरी बर्फ के एक चढ़ाईदार रास्ते से होते हुए अपना रास्ता चुन रही थी, पुकार रही थी। ओह, मुझे वापस जाना होगा! लेकिन किस दिशा में? दर्द लौट आया, उसकी नसों में दहकते आग की तरह एक भयानक असह्य दर्द दौड़ रहा था, दुराचार की बदबू से उसके नथुने भर गये, सड़ते हुए मांस और मवाद की हल्की घिनौनी गन्ध; उसने अपनी आँखें खोलीं और अपने चेहरे पर पड़े एक मोटे सफेद कपड़े से पीली रोशनी देखी, उसे पता था कि मौत की गन्ध उसके ही शरीर में है, और अपना हाथ ऊपर उठाने के लिए जूझती रही। कपड़ा उसके चेहरे से हट गया था; उसने मिस टान्नर को बड़े सलीके और माहिर तरीके से चमड़ी में लगाने वाली सुई भरते देखा, और डॉ. हिल्डेशाइम को यह

कहते हुए सुना, "मुझे लगता है कि इससे फायदा होगा। कोई दूसरा उपाय किया जाये।" एलिस टान्नर ने मिराण्डा की बाँह को कन्धे के पास मजबूती से पकड़ा, और पीड़ा की असह्य लहर एक बार फिर आग की तरह उसकी नसों में दौड़ाने लगी। वह यह कहते हुए रोने की कोशिश करती रही-- मुझे जाने दो, मुझे जाने दो; लेकिन उसे सिर्फ पीड़ित जानवरों की कर्कश आवाजें ही सुनाई दीं। उसने देखा कि डॉक्टर और नर्स किसी जादू-टोना की शुरुआत करनेवालों की तरह खामोशी से सिर हिलाते हुए एक-दूसरे की ओर देख रहे हैं, उनकी आँखें ज्ञानी गर्व से चमक रही थीं। उन्होंने कुछ देर उसकी हरकतों को देखा और वहाँ से चले गये।

बीच हवा में टकराने से घंटियों के बीच आपसी खटपट हुई और वे एक साथ घनघना उठीं, मानवीय पीड़ा की चीखों के साथ हॉर्न और सीटी की आवाज घुलमिल गयी; काली खिड़की के पल्ले से गन्धक के रंग की रोशनी फूटी और अँधेरे में चमक पैदा हो गयी। स्वप्नहीन नींद से जागते हुए मिराण्डा ने बिना उत्तर की उम्मीद किये पूछा, "क्या हो रहा है?" क्योंकि गलियारे में आवाजों और पदचिन्हों का कोलाहल था और हवा में तीखापन था; लगातार दूर से तेज आवाजें आती रहीं, जैसे विद्रोह करती क्रुद्ध भीड़ की उग्र चीख-पुकार।

रोशनी हुई, और मिस टान्नर ने प्यारी आवाज में कहा, "सुना? वे युद्धविराम का जश्न मना रहे हैं। युद्ध समाप्त हो

गया है, मेरी प्यारी।" उसके हाथ काँपने लगे। प्याले में चम्मच हिलाते हुए आवाज सुनने के लिए रुक गयी और प्याला मिराण्डा के सामने रख दिया। हॉल के नीचे स्थित बूढ़ी औरतों के वार्ड से फटी आवाजों में एक कर्कश देशभक्ति कोरस सुनाई दिया, "माई कण्ट्री, 'तीस ऑफ दी...।"

मधुर देश... ओह, इस कड़वी दुनिया का भयावह देश जहाँ आनन्द की आवाज एक दर्दभरा कोलाहल था, जहाँ फटेहाल बेसुरी बूढ़ी औरतें, शाम को मिलनेवाले एक कटोरा कोको के इन्तजार में बैठी, गा रही थीं, "स्वीट लैण्ड ऑफ लिबर्टी–"

"ओह, बताएँ कि क्या आप देख पा रही हैं?" उनकी निराशाभरी आवाजें आगे पूछ रही थीं, धातु की जीभों के हथौड़े जैसा प्रहार उसकी आवाज को दबा दे रही थी। "युद्ध समाप्त हो गया है," मिस टान्नर ने कहा, अपने निचले होंठ को कस के दबा लिया, उसकी आँखें धुँधली हो गयीं। मिराण्डा ने कहा, "मेहरबानी करके खिड़की खोल दो, मुझे यहाँ मौत की गन्ध आ रही है।"

अब अगर दिन का असली उजाला जो मुझे याद है, इस दुनिया में फिर से आएगा, लेकिन हमेशा साँझ या सुबह से ठीक पहले का समय ही होता है, दिन निकलने का एक भरोसा जो कभी पूरा नहीं होता। सूर्य को क्या हो गया है? वह सबसे लम्बी और अकेलेपन की रात थी और फिर भी यह खत्म नहीं

होगी और न दिन निकलने देगी। क्या मैं फिर कभी प्रकाश देख पाऊँगी?

खिड़की के पास एक लम्बी कुर्सी पर बैठकर, नीले रंग से बेरंग आकाश के नीचे बर्फ पर तिरछी पड़ती रंगहीन धूप को देखना अपने आप में एक उदास विस्मय था। "क्या यह मेरा चेहरा हो सकता है?" मिराण्डा ने अपने आईने से पूछा। "क्या ये मेरे अपने हाथ हैं?" उसने अपने हाथों को उठाकर बन्द उँगलियों के बीच पिघले मोम जैसे पीले रंग के धब्बे दिखाते हुए मिस टान्नर से पूछा। शरीर एक अजीब राक्षस है, रहने के लिए कोई जगह नहीं है, वहाँ कोई सहज कैसे महसूस कर सकता है? क्या यह सम्भव है कि मैं कभी खुद को इस जगह का आदी बना पाऊँ? उसने खुद से पूछा। उसके आस-पास के मानवीय चेहरे सुस्त और थके हुए लग रहे थे, उनकी त्वचा और आँखों में कोई चमक नहीं थी जैसी चमक मिराण्डा को याद था; उसके कमरे की दीवारें जो कभी सफेद थीं, अब मटमैले भूरे रंग की हो गयी थीं। धीरे-धीरे साँस लेती, सोती और फिर जागती, अपने शरीर पर पानी के छींटे महसूस करती, खाना खाती, डॉ हिल्डेशाइम और मिस टान्नर के साथ रूखे लहजे में बात करती मिराण्डा ने अपने इर्दगिर्द एक बाहरी आदमी की द्वेषपूर्ण गूढ़ आँखों से देखा, जो उस देश को पसन्द नहीं करता है जहाँ वह खुद को पाता है, न तो वहाँ की भाषा समझता है और न ही

सीखना चाहता है, वहाँ रहने का मतलब ही नहीं, फिर भी असहाय होता है, अपनी मर्जी से इसे छोड़ पाने में असमर्थ होता है।

"सुबह हो गयी है," मिस टान्नर एक आह के साथ कहती, क्योंकि वह पिछले कुछ ही महीने में हमेशा के लिए बूढ़ी और कमजोर हो गयी थी। "फिर सुबह, मेरी प्रिय," मिराण्डा को निष्प्रभ सदाबहार और निस्तेज बर्फ का वही एकरस परिदृश्य दिखाते हुए वे कहतीं। वह अपनी कलफ की हुई स्कर्ट में सरसराती, उनके चेहरे पर भरपूर पावडर लगा होता, उसकी आत्मा अच्छे इस्पात की तरह अटूट। वह कहती, "देखो, मेरे प्यारे, क्या ही मनोहर सुबह है, साफ शीशे की तरह," क्योंकि अपने सामने चुपचाप बैठी इस कृतघ्न प्राणी के प्रति उसके मन में स्नेह था जिसे उसी ने बचाया था, कॉर्नेलिया टान्नर ने, एक नर्स ने जो अपने पेशे में माहिर थी और उसे अपने हाथों मौत के मुँह से निकाल लायी थी। "नर्सिंग दस में से नौ है, बिलकुल इतना ही," मिस टान्नर दूसरी नर्सों को बताती; "इसे हमेशा याद रखना।" मिराण्डा के स्वस्थ होने के लिए धूप मिस टान्नर का अपना नुस्खा था, इस मरीज को डॉक्टरों ने यह मान कर छोड़ दिया था कि अब बचेगी नहीं, और जो उस समय वहाँ बैठी हुई थी, मिस टान्नर के सिद्धान्त की सफलता का प्रत्यक्ष प्रमाण। उसने कहा, "अब धूप को देखो," जैसे वह कह रही हो, "मैंने तुम्हें यह आदेश

दिया है, मेरी जान, बैठो और धूप सेंक लो।"

"सुन्दर है," मिराण्डा जवाब देती, यहाँ तक कि वह अपना सर घुमाकर मिस टान्नर को उनकी नेकी के लिए, खास कर मौसम के बारे में उनकी सबसे बड़ी नेकी के लिए धन्यवाद देती, "सुन्दर, मैं हमेशा इसे प्यार करती थी।" और मैं इसे फिर से प्यार कर सकती हूँ अगर मैं इसे देखूँ, उसने सोचा, लेकिन सच तो यह था कि वह इसे नहीं देख पायी। कोई प्रकाश नहीं था, हो सकता है कि फिर कभी प्रकाश न हो, जबकि वह हमेशा उस प्रकाश के साथ रहना चाहती थी जिसे उसने नीले समुद्र के पास अपने स्वर्ग के किनारे बड़ी शान्ति से फैले हुए देखा था। वह एक बच्चे का सपना था घास के दिव्य मैदान का, जो नींद में थके हुए शरीर को गहरी नींद में आराम के साथ दीखता है, उसने सोचा, लेकिन मैंने इसे तब देखा जब मुझे नहीं पता था कि यह एक सपना है। आँखें बन्द करके वह उस आनन्द को याद करके एक पल के लिए आराम करती, जिसने उस तक पहुँचने के सफर के सारे दर्द मिटा दिये थे; फिर से आँखें खोलकर उसने एक नयी पीड़ा के साथ नीरस दुनिया देखी, जिसमें वह सतायी गयी थी, जहाँ प्रकाश किसी मकड़ी के जाले के ऊपर झीनी परत सा लग रहा था, सभी उज्ज्वल सतहें घुली हुई, तेज समतल पिघली हुई और बेडौल, सभी वस्तुएँ और प्राणी अर्थहीन, ओह, मृत और मुरझाई हुई चीजें जो खुद को

जिन्दा मानती थीं!

रात में, देर तक अपनी कुर्सी पर लेटने की कोशिश करने के बाद, अपनी चरम व्यथा के लिए जिस पर उसने बहुत कम समय में ही विजय पा ली, अपने पीड़ित शरीर को एक साथ समेटा और चुपचाप, बिना शर्म-लिहाज के अपने आप पर और अपने खोये हुए उमंग पर तरस खाते हुए रो पड़ी। भागने की कोई गुन्जाइश नहीं थी। डॉ. हिल्डेशाइम, मिस टान्नर, रसोईघर की नर्सें, केमिस्ट, सर्जन, अस्पताल की ठीकठाक मशीनें, मानवता के प्रति इन सब का अटल विश्वास और समाज के रिवाज, सबने मिलकर एक साजिश रची और उसकी दर्द से चरमराती हड्डियों और फटती मांसपेशियों को सही जगह पर ला दिया, उसकी दिमागी गड़बड़ी को दुरुस्त कर दिया, और उसे एक बार फिर उस सड़क पर सुरक्षित रूप से ला खड़ा किया जो उसे फिर से मौत की ओर ले जा सकती है।

चुक रैंसीवले और मैरी टाउनसेण्ड उससे मिलने आये। अपने साथ वे उसके लिए चिट्ठियों का एक बण्डल लाये जो उन्होंने उसके लिए सुरक्षित रखा था। साथ ही वे ग्रीन हाउस से नाजुक छोटे फूलों की एक टोकरी भी लाये, जिसमें खुशबूदार मटर के फूल और पंखदार फर्न के अलावा घाटी की लिली भी थी, और इन ताजा फूलों से बढ़कर चेहरे जो प्रसन्न और उत्सुक थे।

मैरी ने कहा, "तुमने काफी संघर्ष किया, है ना?" और चुक ने कहा, "चलो, तुम घर वापस आ गयी, है ना?" फिर एक असहज विराम के बाद उन्होंने उससे कहा कि हर कोई तुमको अपनी मेज पर फिर से देखने का इन्तजार कर रहा था। चुक ने कहा, "उन्होंने मुझे अब फिर से खेल रिपोर्टिंग सौंप दी है, मिराण्डा।" दस मिनट तक मिराण्डा मुस्कुराते हुए उन्हें बताती रही कि वह कितना खुश है और खुद को जिन्दा पाकर उसे कितना सुखद आश्चर्य हो रहा है। क्योंकि जिन्दा लोगों के खिलाफ साजिश रचने और उनके साहस के साथ छेड़छाड़ करने का कोई फायदा नहीं होता; जिन्दा रहने से बेहतर कुछ नहीं, इस बात पर सबकी सहमति है; यह पुराना तर्क है, और जो इसे अस्वीकार करने का प्रयास करता है उसे खारिज किया जाना जायज है। "मैं जल्दी ही वापस आ जाऊँगी," उसने कहा; "यह मुसीबत लगभग खत्म हो गयी है।"

उसकी गोद में और कुर्सी के पास चिट्ठियों का ढेर लगा था। कभी-कभी वह उनमें से किसी एक चिट्ठी को पढ़ने के लिए खोलती, इस या उस लिखावट को पहचानती, दागदार टिकटों और डाकघर की मुहरों की जाँच करती, और उन्हें फिर से रख देती। दो-तीन दिन तक वे उसके पास की मेज पर पड़े रहे, और वह उन से बिदकती रही। "वे सभी मुझे फिर ये बताएँगे कि जीवित रहना कितना अच्छा

है, वे फिर कहेंगे कि वे मुझसे कितना प्यार करते हैं, वे खुश हैं कि मैं भी जिन्दा हूँ, और मैं इसका क्या जवाब दे सकती हूँ?" और उसका कठोर, उदासीन हृदय अपनी ही निराशा से काँप गया, जबकि पहले वह कोमल और प्रेम करने में सक्षम हुआ करता था।

डॉ हिल्डेशाइम ने कहा, "ये सारी चिट्ठियाँ अभी तक खुली नहीं हैं क्या?" और मिस टान्नर ने कहा, "मेरी प्रिय, अपने पत्र पढ़ो। मैं उन्हें खोल देती हूँ।" बिस्तर के पास खड़े होकर, उसने उन्हें कागज काटने वाली चाकू से खोल दिया। उलझन में पड़ी मिराण्डा तब तक उनकी छँटाई करती रही जब तक कि उसे एक अपरिचित लिखावट वाली पतली चिट्ठी नहीं मिल गयी। "ओह, अब बस करो," मिस टान्नर ने कहा, "जैसे-जैसे आते जाएँ, पढ़ती जाओ। मैं तुम्हें पकड़ाती रहूँगी।" वे बगल में बैठ गयीं, अन्त तक मददगार बनने के लिए तैयार।

क्या जीत है, कैसी सफलता है, जिन्दा रहना कितना मजेदार है, एक सुर में सभी चिट्ठियों ने गाया। नामों के हस्ताक्षर सजावटी तरीके से किये गये थे, जैसे हवा में लहराती तुरही की सुर लहरियाँ और वे उन लोगों के नाम थे जिन्हें वह सबसे ज्यादा प्यार करती थी; उनमें से कुछ को वह अच्छी तरह और सुखद रूप से जानती थी; और कुछ ऐसे जिनका उसके लिए न पहले कोई मतलब था, न आज।

अपरिचित लिखावट में पतली चिट्ठी एक अजीब आदमी ने उस शिविर से लिखा था जहाँ एडम था, वह उसे बता रहा था कि कैंप अस्पताल में एडम की इन्फ्लुएंजा से मृत्यु हो गयी थी। एडम ने उससे कहा था कि अगर उसे कुछ हुआ, तो वह मुझे जरूर बता दे।

अगर कुछ हो जाये। तो उसे जरूर बता देना। अगर कुछ हो जाये। "आपका मित्र, एडम बर्कले," अजनबी ने लिखा था। और यह हो गया-- उसने तारीख पर नजर डाली-- एक महीने से ज्यादा।

"मैं यहाँ काफी समय से हूँ, है न?" उसने मिस टान्नर से पूछा, जो चिट्ठियों को मोड़ कर उनको दुबारा सही लिफाफों में रख रही थीं।

"ओह, काफी समय हो चुका है," मिस टान्नर ने कहा, "लेकिन अब तुम जल्द ही वापस जाने लायक हो जाओगी। लेकिन तुमको अपना ख्याल रखना होगा और अति नहीं करना होगा, और तुमको बीच-बीच में यहाँ आना होगा ताकि हम तुम्हारी जाँच कर सकें, क्योंकि ठीक होने के बाद भी कभी-कभी काफी समस्याएँ आती हैं--"

मिराण्डा ने आईने के सामने बैठकर सावधानी से लिखा; "एक लिपस्टिक, मध्यम आकार की, बोइस डी'हैवर इत्र की एक औंस शीशी, बिना पट्टियों वाला एक जोड़ी चमड़े का भूरा दस्ताना, बिना झालर वाला दो जोड़े भूरे

महीन स्टॉकिंग्स--"

उसके पीछे खड़ा होकर पढ़ते हुए टाउनी ने कहा, "हर चीज बिना कुछ-कुछ चीज के, जिनका मिलना लगभग असम्भव हो जाये?"

"फिरभी कोशिश करो," मिराण्डा ने कहा, "वे इन चीजों के बिना ही अच्छे हैं। चाँदी की मूठ वाला बाँज की लकड़ी की एक टहलने की छड़ी।"

"यह तो महँगी होगी," टाउनी ने आगाह किया। "टहलना शायद ही इतना खर्च करने लायक काम है।"

"तुम सही कह रही हो," मिराण्डा ने कहा, और हाशिये पर लिखा, "मेरी अन्य चीजों का मिलान करने के लिए सही है। चुक से इसे तलाश करने के लिए कहें, मैरी। देखने में अच्छी लगे और बहुत भारी न हो।" लाजरस, आगे आओ। जब तक तुम मेरे लिए लम्बी टोपी और छड़ी नहीं लाते, तुम जहाँ हो वहीं रहो, घमण्डी। बिल्कुल नहीं। मैं आ रही हूँ। "कोल्ड क्रीम का एक डिब्बा" मिराण्डा ने लिखा, "खुबानी पाउडर का एक डिब्बा-- और, मैरी, मुझे आई शैडो की जरूरत नहीं है, है ना?" उसने अपना चेहरा आईने में देखा और फिर वहाँ से चली गयी। "फिर भी, इस लाश पर किसी को भी दया करने की जरूरत नहीं है अगर हम चीजों को सही नजरिये से देखें।"

मैरी टाउनसेण्ड ने कहा, "एक हफ्ते बाद तुम खुद को

पहचान नहीं पाओगी।"

"क्या तुम्हें ऐसा लगता है, मैरी," मिराण्डा ने पूछा, "मैं अपना पुराना कमरा फिर से वापस ले पाती?"

"यह तो आसानी से हो जाना चाहिए," मैरी ने कहा। "हमने मिस हॉबे के पास तुम्हारी सारी चीजें रख दीं।" मिराण्डा फिर उस बात को याद कर चकित हुई कि जीवित लोगों ने मृतकों का मददगार होने के लिए कितना समय दिया और कितनी मुसीबत उठायी। लेकिन अभी पूरी तरह से मरी नहीं है, उसने अपने आप को आश्वस्त किया, अभी दोनों दुनिया में एक-एक पैर हैं; जल्द ही मैं पार कर जाऊँगी और फिर से घर पर होऊँगी। प्रकाश वास्तविक प्रतीत होगा और मुझे खुशी होगी जब मैं सुनूँगी कि कोई व्यक्ति जिसे मैं जानती हूँ वह मृत्यु से बच गया है।

मैं बच गये लोगों के पास जाऊँगी, उन्हें सँवरने-सँभलने में मदद करूँगी और उन्हें बताऊँगी कि वे कितने भाग्यशाली हैं, और मैं भी कितनी खुशकिस्मत हूँ कि मैं अभी भी उनके पास हूँ। मैरी जल्द ही मेरे दस्ताने और मेरी छड़ी लेकर वापस आ जाएगी, मुझे अब जाना चाहिए, मुझे मिस टान्नर और डॉ हिल्डेशाइम को अलविदा कहना चाहिए। एडम, उसने कहा, अब तुम्हें फिर से मरने की जरूरत नहीं है, लेकिन फिर भी, काश तुम यहाँ होते; काश, तुम वापस आ जाते, तुम्हें क्या लगता है कि मैं एडम को धोखा देने के लिए

जिन्दा वापस आयी थी?

अचानक वह वहीं उसके बगल में था, अदृश्य लेकिन तत्काल उपस्थित, एक प्रेत लेकिन मिराण्डा से कहीं ज्यादा जीवित, उसके दिल का आखिरी असहनीय छलिया; यह जानते हुए कि यह झूठ था, वह अब भी झूठ से चिपकी रही, अपनी कड़वी इच्छा के अक्षम्य झूठ के साथ। उसने कहा, "मैं तुमसे प्यार करती हूँ," और काँपती हुई उठ खड़ी हुई, सिर्फ अपनी इच्छा के कृत्य से उसे अपने सामने लाने की कोशिश कर रही थी। उसने कहा, अगर मैं तुम्हें कब्र से ऊपर बुला सकती तो, अगर मैं तुम्हारा प्रेत देख सकती तो मैं कहती, मुझे विश्वास है ... "मुझे विश्वास है," उसने जोर से कहा। "ओह, मुझे एक बार फिर तुमको देख लेने दो।" कमरा खामोश था, खाली था, अचानक उसके उठने और जोर-जोर से बोलने से स्तब्ध होकर उसकी परछाई चली गयी थी। वह अपने होश-हवास में वापस आ गयी, जैसे नींद से जाग गयी हो। ओह, नहीं, यह तरीका नहीं है, मुझे ऐसा कभी नहीं करना चाहिए, उसने खुद को चेतावनी दी। मिस टान्नर ने कहा, "तुम्हारी टैक्सी इन्तजार कर रही है, मेरी प्रिय," और वहाँ मैरी थी, ले जाने के लिए तैयार।

अब कोई और युद्ध नहीं, अब कोई और महामारी नहीं, केवल विराट तोपों का मुँह बन्द होने के बाद का सन्नाटा; प्रेत छायाओं से मुक्त घर, खाली सड़कें और आनेवाले कल की ठण्डी रोशनी का अन्त। अब हर चीज के लिए भरपूर समय होगा।

गार्गी प्रकाशन की किताबें

1. अमिल्कर कबराल		110.00
2. गाँव की आवाज	नीयी ओसुन्दरे	60.00
3. जलियाँवाला बाग की खूनी बैशाखी		50.00
4. काला गोदी मजदूर	सेम्बियन ओसमान	100.00
5. मार्क्सवाद और कविता	जॉर्ज थामसन	70.00
6. साहित्य, संस्कृति और विचारधारा	अन्तोनियो ग्राम्सी	80.00
7. अंधड़	चाओ ली-पो	320.00
8. औजारों का इतिहास	वी गॉर्डन चाइल्ड	30.00
9. औपनिवेशिक मानसिकता से मुक्ति	न्गुगी वा थ्योंगो	200.00
10. आधुनिक चीनी कहानियाँ		120.00
11. एग्नेस स्मेडली	जगविन्दर जोधा	60.00
12. केन सारो-वीवा	आनन्द स्वरूप वर्मा	100.00
13. हम आखिर हमसाये हैं	मधुकर उपाध्याय	40.00
14. क्या मजदूर वर्ग दुनिया को बदल सकता है?	माइकल डी येट्स	120.00
15. मातीगारी	न्गुगी वा थ्योंगो	120.00
16. नीतिशास्त्र के बुनियादी सरोकार	सुधा चौधरी	180.00
17. ली यू-त्साई के गीत	चाओ शू-ली	60.00
18. पत्थरों का देश	अलेक्स ला गुम	120.00
19. खून की पंखुड़ियाँ	न्गुगी वा थ्योंगो	300.00
20. एक बहुत लम्बा खत	मरियामा बा	60.00
21. आज की अफ्रीकी कहानियाँ-1	आनन्द स्वरूप वर्मा	120.00
22. आज की अफ्रीकी कहानियाँ-2	आर शान्ता सुन्दरी	50.00
23. जनाब कोएनर की कहानियाँ	बर्तोल्त ब्रेख्त	60.00
24. डॉ. कोटनिस की स्मृति में	श्येनकुङ, चीशन, छाङमान	80.00
25. सवालों की किताब	पाब्लो नेरुदा	40.00
26. किस्सों का शिकारी	एदुआर्दो गालेआनो	25.00
27. चे ग्वेरा की याद में	फिदेल कास्त्रो	60.00
28. न्यूरेमबर्ग मुकदमा	यारोस्लाव हलान	50.00
29. निगरानी पूँजीवाद	फोस्टर और मैक्चेस्नी	20.00
30. बुद्धिजीवी का दायित्व	संकलन	60.00
31. एक अर्थशास्त्री का सफरनामा	माइकल डी येट्स	60.00
32. नौजवानों के लिए गोर्की, प्रेमचन्द, लु शुन	राणा प्रताप	80.00
33. लाल रूस	रामवृक्ष बेनीपुरी	60.00
34. लाल चीन	रामवृक्ष बेनीपुरी	75.00
35. कार्ल मार्क्स	रामवृक्ष बेनीपुरी	75.00
36. रूस की क्रान्ति	रामवृक्ष बेनीपुरी	150.00
37. दर्शन की सामाजिक भूमिका और भारतीय जीवन दृष्टि	सुधा चौधरी	140.00
38. नाजीवादी जर्मनी की मनोदशा	कार्ल जी. युंग	60.00
39. उदारवादी वायरस	समीर अमीन	50.00
40. एक छोटे और एक छोटी लड़की की कहानी	वीणा भाटिया	40.00

41.	चेतना का मण्डीकरण	जैरी मेंडर	20.00
42.	मरूस्थल	मोरिस सिमाश्को	40.00
43.	स्वाधीनता संग्राम में मुस्लिम भागीदारी	पृथ्वी राज कालिया	50.00
44.	क्यूबा का तजुर्बा		10.00
45.	मुनाफे की जकड़ में विज्ञान	रिचर्ड लेविन्स/लेवोंटिन	100.00
46.	साम्राज्यवाद आज	संकलन	80.00
47.	आग की यादें	एदुआर्दो गालेआनो	80.00
48.	गदरी बाबा कौन थे	वरियाम सिंह सन्धु	40.00
49.	करतार सिंह सराभा	वरियाम सिंह सन्धु	20.00
50.	अन्तहीन संकट	फोस्टर/मैक्चेस्नी	150.00
51.	मार्क्सवाद परिचय माला	शिव वर्मा	50.00
52.	लातिन अमरीका के रिसते जख्म	एदुआर्दो गालेआनो	200.00
53.	आजादी या मौत	वेद प्रकाश 'वटुक'	130.00
54.	इतिहास जैसा घटित हुआ	संकलन	150.00
55.	डॉक्टर नार्मन बेथ्यून की अमर कहानी	सिडनी गार्डन/टेड एलन	160.00
56.	हो ची मिन्ह	सूफी अमरजीत	100.00
57.	जंगली घास (गद्य कविताएँ)	लू शुन	30.00
58.	लू शुन : एक परिचय	फेंग शुएफेंग	20.00
59.	समाजवाद का ककहरा	लियो ह्यूबरमन	40.00
60.	एक विराट जुआघर	फिदेल कास्त्रो	30.00
61.	सुल्ताना का सपना	रुकैय्या सखावत हुसैन	10.00
62.	आधुनिक मानव का अलगाव	फ्रित्ज पापेनहाइम	80.00
63.	विज्ञान और वैज्ञानिक नजरिया		40.00